बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका

बालप्रहरी

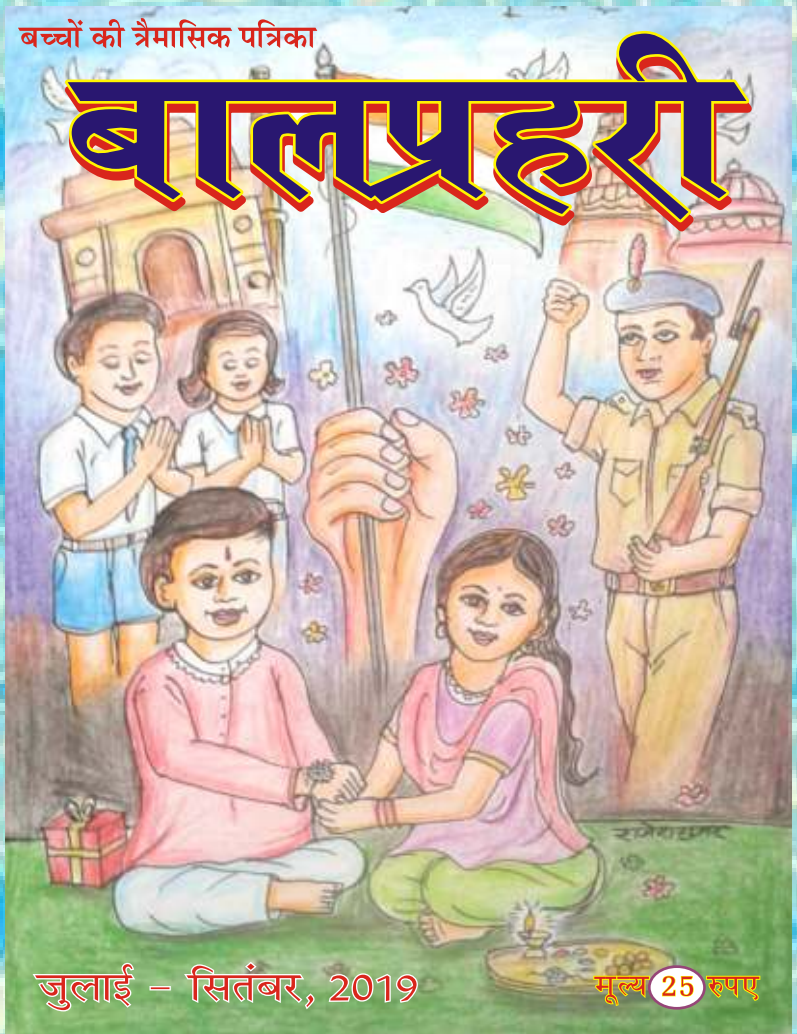

जुलाई – सितंबर, 2019

मूल्य 25 रुपए

श्रेयस पाण्डे, कक्षा - 3,
प्रा.वि. भूपगंज द्वितीय, पयागपुर, बहराइच, उ.प्र.

निधि, कक्षा - 7
आदर्श पू.मा.वि. कैहड़गांव, अल्मोड़ा

प्रियंका टम्टा, कक्षा - 9
कस्तूरबा गांधी आ.बा.वि. तरपालीसैण, पौड़ी

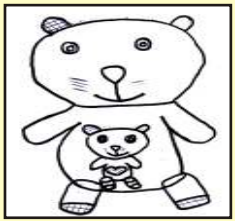

सिमरन जोशी, कक्षा - 5
विवेकानन्द माडर्न स्कूल, देघाट, अल्मोड़ा

प्रतीक चौधरी, कक्षा - 6
द्रोण पब्लिक स्कूल, पूजाखेत, द्वाराहाट

ज्योति नेगी, कक्षा - 8
ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल, अल्मोड़ा

नैना आर्या, कक्षा - 7
रा.क.जू. हाईस्कूल, जैनोली, ताड़ीखेत

साक्षी, कक्षा - 4
रा.प्रा.वि. रामपुर, कोट, पौड़ी

तरूण सिंह नेगी, कक्षा - 8
महर्षि विद्या मंदिर, अल्मोड़ा

युक्ति तिवारी, कक्षा - 6
यूरो इं. स्कूल, रेवाड़ी (हरियाणा.)

पार्वती चौहान, कक्षा - 8
आर्य कन्या इंटर कालेज, अल्मोड़ा

चांदनी , कक्षा - 10
राजकीय हाईस्कूल बीना, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

बालप्रहरी बाल क्लब

युवराज पंवार
हरमनी, चमोली

रितिका चंचल
देहरादून

तारा
खटीमा, ऊ.सि.न.

अंजलि
हरमनी, चमोली

रेनू
उमरूखुर्द, खटीमा

किरन खर्कवाल
खटीमा,ऊधमसिंहनगर

प्रीति चंद्र
खटीमा, ऊ.सि.न.

भूमिका वर्मा
नैनी चौगर्खा, जागेश्वर

अभिषेक
खटीमा, ऊ.सि.न.

प्रशांत पाठक
पिथौरागढ़

सपना टम्टा
नैनी चौगर्खा,

अनिल मौर्य
उदित नगर, मिर्जापुर

नीलम
देहरादून

नीधि बिष्ट
खटीमा, ऊ.सि.न.

रोहित थापा
अल्मोड़ा

काजल टम्टा
नैनी चौगर्खा,

अमिषा गर्ग
सराड़ी (राजस्थान)

ज्योति
राम प्यारी, देहरादून

अंजली महतोलिया
नैनीताल

प्रिया
देहरादून

प्रतीक गौर
देहरादून

उमा फर्त्याल
जैनोली, रानीखेत

अभय
चमोली, देहरादून

कमलेश मेघवाल
उदयपुर, राजस्थान

रेशमा
देहरादून

प्रत्यक्ष कुंवर
गैरसैण, चमोली

प्रियंका तिवारी
खूंट, अल्मोड़ा

नए संरक्षक सदस्य : डॉ. कमला मेनन

डॉ. कमला मेनन जी का जन्म 13 जुलाई, 1952 को केरल में हुआ। उन्होंने बहुत समय तक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली में 'डिपार्टमेंट आफ मेजरमेंट एंड इवेल्यूशन' में काम किया। विज्ञान प्रसार के लिए कार्यरत संस्था दिल्ली साइंश फोरम दिल्ली की सचिव हैं। अखिल भारतीय जन विज्ञान नैट वर्क की वे संस्थापक सदस्यों में से एक हैं। विज्ञान प्रसार एवं वैज्ञानिक सोच को जन-जन तक पहुंचाने के लिए उनका प्रयास जारी है।

वर्तमान में वे अरविंदो आश्रम दिल्ली से जुड़ी है। वे अरविंदो आश्रम दिल्ली के निरांबिका फ्री प्रोग्रेस स्कूल में बच्चों को पढ़ाती हैं। अरविंदो आश्रम रामगढ़,नैनीताल,उत्तराखंड में स्थित लर्निंग सेंटर में भी बच्चों से समय-समय पर संवाद करती रहती हैं।

रीजनल डेवलपमेंट विषय पर उन्होंने पी.एचडी की है। इस कारण रीजनल डेवलमेंट तथा भौगौलिक विकास में उनकी रूचि है। उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्र की लड़कियां आगे बढ़ें। इसलिए वे रामगढ़ के विभिन्न स्कूलों में जाकर लड़कियों को आगे बढ़ने के लिए तो प्रेरित करती ही हैं। स्कूलों में बच्चों को विज्ञान तथा वैज्ञानिक जागरूकता से जोड़ने के लिए गतिविधियां भी करती हैं। बच्चों के बीच बच्चा बनकर वे बच्चों से खेल-खेल में काफी कुछ कह जाती हैं

संपर्क : सी 43, कैलाश अपार्टमेंट
कैलाश कॉलोनी,नई दिल्ली 110048

नए संरक्षक सदस्य : श्रीमती दीक्षा बिष्ट

श्रीमती दीक्षा (लोहनी) बिष्ट पुत्री श्री चिंतामणी लोहनी (निवासी लोहना,अल्मोड़ा) का जन्म 28 जून,1956 को लेंसडाउन (पौड़ी गढ़वाल) में हुआ। मासर, द्वाराहाट निवासी दीक्षा जी ने अल्मोड़ा कुमाऊं विश्वविद्यालय नैनीताल से वनस्पति विज्ञान में परास्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान, सीएसआईआर, नई दिल्ली, भारत सरकार तथा सार्क डॉक्यूमेंटेशन सेंटर, नई दिल्ली, भारत सरकार से निदेशक (वैज्ञानिक 'जी') के पद से सेवानिवृत्त हुई। भारत सरकार की विज्ञान पत्रिका 'विज्ञान प्रगति' तथा राजभाषा पत्रिका 'संचेतना' की आप संपादक रही। दीक्षा जी को भारत सरकार की किसी भी विज्ञान पत्रिका में सबसे कम उम्र की महिला संपादक होने का गौरव प्राप्त है।

'भारत की वैज्ञानक विभूतियां' तथा 'स्वाधीन भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी' सहित आपकी कई पुस्तकें प्रकाशित, संपादित और अनूदित हैं। दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल पर 'बाल जगत' कार्यक्रम में बच्चों के लिए आपकी कई रचनाओं का प्रसारण हुआ है। कृषि वैज्ञानिक चयन बोर्ड, शिक्षा निदेशालय दिल्ली, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भारत सरकार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद दिल्ली सहित कई संस्थाओं की पुरस्कार योजना में आपने मूल्यांकन/निर्णायक मंडल सदस्य बतौर कार्य किया। आपको विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, उत्तराखण्ड सरकार द्वारा वर्ष 2014-15 में सर्वोच्च पुरस्कार से सम्मानित किया गया। विज्ञान को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आपको कई सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं ने सम्मानित किया है।

संपर्क : 48 नीलकमल अपार्टमेंट,
एच-3 विकासपुरी,नई दिल्ली-110018

काजोल आर्या, कक्षा - 7
रा.क.जूनियर हाईस्कूल, जैनोली

अमीषा , कक्षा - 10
राजकीय हाईस्कूल बीना, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

मनोरम सिन्हा, कक्षा - 7
सरस्वती शिशु मंदिर बालोद, छत्तीसगढ़

पिंकी रावत, कक्षा - 8, कस्तूरबा गांधी
आवासीय बा.वि. तरपालीसैण, पौड़ी

नेहा जोशी, कक्षा - 8, कस्तूरबा गांधी
आवसीय बा.वि. तरपालीसैण, पौड़ी

नीरू, कक्षा - 8, कस्तूरबा गांधी
आवसीय बा.वि. तरपालीसैण, पौड़ी

प्रांजली राठौर, कक्षा - 8
कुर्मांचल एकैडमी, अल्मोड़ा

RNI NO. UTTHIN/2004/18604

सेवा में,

प्रेषक : संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा, उत्तराखंड । मो. 9412162950

अनुष्का, कक्षा - 7, द एशियन एकेडमी, पिथौरागढ़

जितेंद्र तिवारी, कक्षा - 8, आदर्श पू.मा.वि. कैहड़गांव, स्याल्दे

मुद्रक : प्रकाश पब्लिकेशन, हल्द्वानी । मो. : 9412092336, 9761464264

RNI UTTHIN/2004/13604

वर्ष-15 जुलाई-सितंबर, 2019 अंक-03

संरक्षक :
- डॉ. सरस्वती कोली
- डॉ. भैरूंलाल गर्ग
- श्री नवीन पाठक
- श्री विपिनचंद्र जोशी
- डॉ. जे.एस. मेहता
- श्रीमती मंजू पांडे 'उदिता'
- श्री सुरेन्द्र सिंह नेगी
- श्री मोहनलाल टम्टा
- डॉ. सुनीता रतूड़ी
- डॉ.आर.पी.रस्तोगी
- डॉ. बी.पी. साह
- श्री राजकुमार जैन 'राजन'
- श्री के.पी.एस.अधिकारी
- डॉ. सलमा जमाल
- श्रीमती श्यामा माहेश्वरी
- डॉ. दीपा कांडपाल
- श्री रतनसिंह किरमोलिया
- श्री नीरज पंत
- श्री प्रकाश जोशी
- सुश्री विनीता जोशी
- श्रीमती विमला जोशी 'विभा'
- डॉ. कामना सिंह
- डॉ. प्रभा किरण जैन
- सुश्री कमला मेनन
- डॉ. दीक्षा बिष्ट
- डॉ.(मेजर)शक्तिराज कौशिक
- श्री दयानंद आर्य
- श्रीमती पुष्पा पाल
- श्री रविकांत खंडेलवाल
- श्री संजय प्रजापति
- श्री श्याम पलट पांडेय

संपादक : उदय किरौला

संपादकीय सहयोग	: प्रमोद तिवारी
	: संतोष किरौला
मुख पृष्ठ	: राजेश गुजर
कला पक्ष	: मनोज बिनवाल
इंटरनेट संस्करण	: वेद प्रकाश

सदस्यता शुल्क

संरक्षक सदस्यता	:	5,000 रु.
आजीवन सदस्यता	:	2,000 रु.
3 वर्ष का शुल्क	:	300 रु.
एक प्रति	:	25 रु.

बालप्रहरी खाता संख्या : 09620001013137002
आई.एफ.सी कोड : पी.यू.एन.बी. 0096200
बैंक नाम : पंजाब नेशनल बैंक, अल्मोड़ा

संपर्क : संपादक बालप्रहरी : दुगालखोला नगर,
अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601
मो.9412162950, 8557819107

E-mail : balprahri@gmail.com
Web.: www.balprahri.com
Face book- udai kiroula balprahri
Whats App - 09412162950

बच्चों के नाम पाती			02
बच्चों की कलम से			05
कहानी :	पावन की उड़ान	संगीता माथुर	23
	अनोखा बर्थ डे	अब्दुल समद राही	27
	मान धन	जी.आर.के. रेड्डी 'अमर जी'	28
	कहूं वही बात	श्यामा शर्मा	29
	राजा की महत्वाकांक्षा	डॉ. विनीता राहुरीकर	31
	मौकू बंदर	मंजू पांडेय 'उदिता'	32
	करनी का फल	राम राज 'राज'	33
	अच्छे दोस्त	अल्का प्रमोद	35
	जीत का जश्न	मीरासिंह 'मीरा'	37
	दादी की दादी	अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'	39
	सब कुछ बदल गया	फारूख हुसैन	41
	सफेद कबूतर	डॉ. कामना सिंह	45
कविता :	कुमाउनी/गढ़वाली कविता	दिनेश भट्ट/ललित केशवान	22
	डॉ. राम एनौत 'ठाकुर'/दिनेशकुमार शर्मा/ प्रदीप बहराइची		26
	माधुरी शास्त्री/प्रभा मेहता		26
	सीताराम चमोली/मीना शुक्ला/राजपालसिंह गुलिया/डॉ. सुरेंद्रदत्त सेमल्टी		30
	शकुंतला शर्मा/रजनी सिंह/आ.सूर्यप्रसाद शर्मा 'निशिहर'		34
	पवन पहाड़िया/डॉ.हरिश्चंद्र बोरकर/सुरेशचंद्र सर्वहारा		36
	श्याम पलट पांडेय/भानुप्रताप सिंह/मुकेश सौरभ		44
	चंद्रप्रकाश गुप्त 'चमन'/प्रज्ञा गुप्ता/सुरेशचंद्र दुबे		44
जानकारी:	बालसाहित्य की थाती	अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'	04
	ऐसा क्यों होता है?	घमंडीलाल अग्रवाल	14
	तिरंगा झंडा	संतोष किरौला	25
	वीर चक्र से सम्मानित: अभिनंदन	विमला जोशी 'विभा'	40
	चंद्रयान-2	डॉ. हेमंत कुमार	43
	भाई बहन के रिश्ते का त्यौहार	कृपालसिंह शीला	43
प्रतियोगिताएं :	निबंध प्रतियोगिता - 32		15
	कविता लिखो प्रतियोगिता - 61		16
	सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता - 61		18
	कहानी लिखो प्रतियोगिता - 61		19

अन्य :

सुडोकू	16	पुस्तक समीक्षा	21
चुटकुले	17	खोजो तो जानें	32
क्या आप जानते हैं	18	फूलों के नाम ढूंढो	43
अंकों से बनाओ चित्र	19	अंक पहेली	48
पहेलियां/अनमोल वचन	20	बालप्रहरी समाचार	46
वर्ग पहेली - 19	20	पुस्तक प्राप्ति	48

बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा की ओर से प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक उदय किरौला द्वारा प्रकाश पब्लिकेशन हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखंड से मुद्रित तथा दरबारी नगर, पूर्वी पोखरखाली, अल्मोड़ा (उत्तराखंड) से प्रकाशित। संपादक - उदय किरौला

बच्चों के नाम पाती

दोस्तो,

रविवार का दिन था। रोहित अन्य दिनों की तरह सुबह जल्दी उठ गया। जबकि छुट्टी के कारण घर के सारे लोग आज अभी तक नहीं उठे थे। बिस्तर छोड़कर रोहित अपना होमवर्क करने लगा। थोड़ी देर में साफ उजाला हो गया। सूरज की किरणें घर के अंदर तक आ गई थीं।

होमवर्क पूरा कर रोहित बरामदे में लगी कुर्सी पर बैठकर बाहर का नजारा देखने लगा। आज हौल भी नहीं था। अन्य दिनों तो देर तक हौल रहता था। रोज ऐसा लगता कि बारिश होगी। पर थोड़ी देर में हौल छट जाता। सूरज की किरणें दिन का मौसम साफ होने का संकेत करतीं। पर आज तो दूर-दूर तक कहीं भी हौल नहीं था।

रोहित को याद आया कि रोज सुबह हौल लगने के कारण ही उसके गांव को हौलबाग कहा जाता है। हौलबाग का सुधरा हुआ नाम हवालबाग हो गया। ये बात स्कूल में गुरुजी ने सारे बच्चों को बताई थी। गुरुजी ने बच्चों को बताया था कि जिसे हम कुमाउनी भाषा में हौल कहते हैं। हिंदी में इसे कुहरा कहा जाता है।

रोहित कुहरे के बारे में सोच ही रहा था। अचानक उसकी नजर सामने बिजली के तार पर पड़ी। बिजली के तार पर चिड़िया एक लाइन में बैठी थीं। कुछ चिड़िया एक तार पर तो कुछ दूसरे तार पर बैठकर चहचहा रही थीं। शायद आपस में कुछ बात कर रही होंगी।

सहसा उसे ध्यान आया। ये सब तो बिजली के तार पर बैठी हैं। उसे लगा शायद इस समय बिजली न हो। उसने देखा स्ट्रीट लाइट का बल्ब अभी धूप आने पर भी जल रहा है। उसे लगा कि बिजली के करेंट से चिड़िया को झटका लग कर गिर जाना था। वह परेशान था। उसे लगा कि इसके लिए उसे पापा से पूछना चाहिए।

रोहित कुर्सी से उठकर सीधे पिताजी के बिस्तर पर गया। उसने कहा, ''पापा ! उठिए न। बाहर चिड़ियों का बहुत ही बड़ा झुंड दिखाई दे रहा है। आप देखेंगे तो देखते रह जाएंगे।'' कहते हुए वह पापा का हाथ पकड़ कर बाहर को ले आया। पापा ने बिजली के पोल पर इतनी अधिक संख्या में कभी भी चिड़ियों को नहीं देखा था। उनके पास समय ही कहां था। रोहित व पापा की आवाज सुनकर मम्मी भी बिस्तर से उठकर आ गईं। विमल अभी भी सोया ही था। इतनी सारी चिड़िया देखकर मम्मी को भी कुछ कहना नहीं आया। चिड़ियों का झुंड दिखाने वह विमल को भी बिस्तर से जगा कर ले आईं। चिड़ियों के इतने बड़े झुंड को देखकर सभी खुश थे। रोहित ने पापा से पूछा, ''पापा! बिजली के तार पर इन चिड़ियों को करेंट नहीं लगता क्या? ये एकदम आराम से तार पर बैठे हैं।''

पापा ने कहा, ''बिजली की लाइन में दो तार होते हैं। एक तार धनात्मक होता है दूसरा तार ऋणात्मक। धनात्मक तार में करेंट होता है जबकि ऋणात्मक तार में करेंट नहीं होता है। बिजली की लाइन में एक तार पर कितनी ही चिड़िया बैठ जाएं उन्हें करेंट नहीं लगेगा। यदि एक तार पर बैठकर चिड़िया दूसरे तार को टच करती हैं तब करेंट लगेगा।''

रोहित ने कहा, ''कभी-कभी बिजली के पोल के पास कौए या बंदर मरे रहते हैं। बंदर या कौए कैसे मर जाते हैं?''

यदि कौआ या बंदर बिजली के एक तार को पकड़े हुए हैं। तब उन्हें करेंट नहीं लगेगा। यदि वे दूसरे तार पर टच होते हैं या बिजली के पोल या किसी पेड़ की टहनी पर टच होते हैं। तब करेंट लगने पर उनकी मृत्यु हो जाती है। यदि आदमी बगैर चप्पल के या गीले चप्पल के बिजली के तार के संपर्क में आ जाए तब भी करेंट का खतरा रहता है।'' रोहित के पापा ने सबको समझाते हुए कहा।

रोहित की मम्मी ने पूछा, ''कई बार करेंट से बचाने या हटाने के लिए लोग जब मदद करते हैं तब वे भी चिपक जाते हैं। यह कैसे होता है?''

रोहित के पापा ने कहा, ''कभी भी कोई करेंट की चपेट में आ जाए तो उसे छूना नहीं चाहिए। उसे छूने पर हम भी करेंट की चपेट में आ जाएंगे। करेंट लगे व्यक्ति को लोहे या अन्य किसी धातु की छड़ से नहीं छूना चाहिए। सूखी लकड़ी से करेंट लगे व्यक्ति को अलग करने की कोशिश की जानी चाहिए। सूखी रस्सी का फंदा डालकर भी करेंट लगे व्यक्ति को छुड़ाया जा सकता है। जहां तक संभव हो मेन लाइन को बंद करवा देना चाहिए।''

सब अपनी-अपनी बात कर रहे थे कि बाहर दूध वाले ने आवाज दी। सारे लोग घर के अंदर चले गए। रोहित तो बिजली की नई जानकारी पाकर बहुत खुश था।

तुम्हें यह कहानी कैसी लगी, लिखना। तुम भी कोई कहानी बनाकर भेजना। बालप्रहरी के इस अंक में तुम्हें क्या-क्या अच्छा लगा, लिखना। तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करूंगा।

– तुम्हारा दोस्त,
उदय किरौला

मुझे बालप्रहरी का पुराना अंक अपनी स्कूल की लाइब्रेरी में पढ़ने को मिला। यह पत्रिका मुझे बहुत अच्छी लगी। इस पत्रिका को पढ़कर मुझे बहुत कुछ जानने को मिला। मुझे यह पत्रिका विविधता में एकता वाली लगी। कुछ हटकर है यह बालप्रहरी। इसमें बच्चों की बेहद सुंदर कविताएं, कहानी व रचनात्मकता को पन्नों में बेहद सुंदर ढंग से उकेरा गया है। इस अंक ने मुझे मेवाड़ी जी की याद दिला दी। वह दिन याद आ गया। जब वह हमारे स्कूल में आए थे। उन्होंने हमें कल्पना अंतरिक्षयान में बैठाकर सौरमंडल की सैर कराई थी। बालप्रहरी हम जैसे बच्चों का मार्गदर्शन भविष्य में करती रहेगी। मैं बालप्रहरी के नए अंक की प्रतीक्षा अपने स्कूल की लाइब्रेरी में करूंगी। जल्दी आना।

शीतल भट्ट, कक्षा 12

राजकीय इंटर कालेज देवलथल, पिथौरागढ़

●

बालप्रहरी के नए अंक में मुझे 'न्यायकारी राजा गोरिया' कहानी अच्छी लगी। बालप्रहरी में बच्चों की ड्राइंग कविता आदि छपती है। ये जानकर मुझे अच्छा लगा। मैं भी अपनी रचना बालप्रहरी के लिए भिजवा रही हूं। कृपया अवश्य विचार कीजिएगा।

- ज्योति, कक्षा 7

राम प्यारी आर्य कन्या इ. इ कालेज देहरादून

आपके पत्र

मुझे बालप्रहरी का अप्रैल-जून, 2019 अंक प्राप्त हुआ। नया अंक पाकर बहुत खुश हुई। किरौला जी मेरे घर पर मुझसे मिलने आए। अपने दोस्तों के प्रति उनका प्रेम व प्यार देखकर काफी अच्छा लगा। गैरसैंण में बालप्रहरी द्वारा लगाई गई कार्यशाला में मैंने भी प्रतिभाग किया था। मुझे बालप्रहरी की कार्यशाला में कहानी, कविता व निबंध आदि विधाओं की व्यापक जानकारी मिली। मैं कुछ नई रचनाएं भिजवा रही हूं। अच्छी लगे तो जरूर स्थान दीजिएगा।

-कंचन सिरस्वाल, कक्षा 10

महिलापाणा बैंड, गैरसैंण, चमोली

●

मुझे बालप्रहरी में कहानियां व पहेलियां अच्छी लगती हैं। बालप्रहरी संपादक उदय किरौला जी हमारे विद्यालय में प्रतिवर्ष प्रशिक्षण के लिए आते हैं। वे हमें हर साल नई-नई गतिविधियां कराते हैं। आज जब हमारे यहां पत्रिका आई तो उसमें हमारे स्कूल के बच्चों की रचनाएं भी थी। हमें अच्छा लगा। बालप्रहरी के सभी दोस्तों को मेरी ओर से नमस्कार।

- शिवानी, कक्षा 10

कस्तूरबा गां.आ.बा.वि. पाबौ, पौड़ी

पर्यावरण संतुलन

पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि एक उगता हुआ वृक्ष राष्ट्र की प्रगति का जीवंत प्रतीक है। नेहरू जी की बात आज भी हमें वृक्षों की उपयोगिता को बताती है। वास्तव में वृक्ष हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं। वृक्षों के महत्व को देखते हुए सरकार ने बकायदा सन् 1965 में केंद्रीय वन आयोग बनाया। विभिन्न राज्यों में वनों के लिए अलग विभाग बनाया गया। वृक्षों का अंधाधुंध कटान न हो इसके लिए वन निगम बनाया गया। सरकार ने वनों तथा पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने का प्रयास किया। प्रतिवर्ष देश में बरसात में हजारों, लाखों वृक्ष रोप कर अभियान तो चलाया जाता रहा है। आज वृक्षारोपण अभियान के बजाय वृक्षों का संरक्षण करने व वनों के कटान पर रोक लगाए जाने की आवश्यकता है। पेड़ लगाओ अभियान सही है। पर इन पेड़ों को सुरक्षित रखने के लिए अभियान चलाए जाने की आवश्यकता है। वृक्षारोपण केवल फोटो खींचने के लिए नहीं वास्तविक तौर पर किया जाना चाहिए।

- सुनीता भट्ट, कक्षा-12

रा.इ.का आम नायल, अल्मोड़ा

●

मैं बालप्रहरी का नया पाठक हूं। बालप्रहरी को पढ़कर मुझे काफी खुशी हुई। पृष्ठ संख्या 2 पर बच्चों के नाम पाती में जो कहानी थी मुझे बहुत अच्छी लगी। कुछ रचनाएं भेज रहा हूं, जो मैंने स्वयं लिखी हैं। बालप्रहरी में छापिएगा।

- हरिसिंह मेहता, कक्षा 12

राजकीय इंटर कालेज ओर, पिथौरागढ़

आवश्यक सूचना

बालप्रहरी के नन्हे दोस्तों से निवेदन है कि अपने पत्र, कविता, ड्राइंग, फोटो आदि पर अपना नाम, पता, फोन अवश्य लिखें। कई बार रचना अच्छी होती है। उस पर नाम और कक्षा तो लिखी होती है। स्कूल का नाम/पता नहीं होता है। इस कारण वह रचना नहीं छप पाती है। पूरे पते के साथ पोस्ट आफिस और पिन कोड भी लिखेंगे तो आपको पत्रिका आसानी से मिल जाएगी। कई दोस्त दूसरी किताबों व पत्रिकाओं से कविता या ड्राइंग उतार कर भेजते हैं। नकल करके नहीं भेजना है। इसलिए रचना में यह भी लिख दें कि ये मेरी मौलिक रचना है। कुछ बच्चे और बड़े लोग एक पृष्ठ पर अधिक रचना देते हैं। या पता एक ही पृष्ठ पर लिखते हैं। हर रचना पर पता लिखिएगा। -संपादक

बालसाहित्य की थाती :

बालसाहित्यकार : शंकर सुल्तानपुरी

शंकर सुल्तानपुरी का जन्म 1 दिसंबर, 1940 को सुल्तानपुर जनपद के परऊपुर में हुआ था। उनका पूरा नाम शंकरदयाल श्रीवास्तव था। 12 वर्ष की उम्र में उनकी पहली कविता 'बालसखा' में छपी थी। बच्चों के लिए उन्होंने 100 से अधिक पुस्तकें लिखी। देश की प्रतिष्ठित पत्रिका 'नंदन', 'पराग', 'चंपक' तथा 'बाल भारती' आदि में उनकी रचनाएं प्रकाशित होती रही हैं। उनके बालगीतों ने हिंदी बालसाहित्य को एक नई दिशा दी है। 18 फरवरी, 2019 को उनका निधन हो गया। बालसाहित्य के पुरोधा को शत-शत नमन। यहां उनकी कुछ रचनाएं दी जा रही है।

-संपादक

बच्चों का मधुवन

इक फुलवारी अनगिन फूल,
पढ़ने बगिया के स्कूल।
जूही चंपा और चमेली,
खेलें कूदें संग सहेली।
गेंदा गुलमोहर, गुड़हल है,
खिले ताल में नीले कमल हैं।
बेला गुलदाउदी मनोहर,
टेसू सेमल, झरने झरझर।
हैं गुलाब जी सबके राजा,
कई रंग में ताजा-ताजा।
सूरजमुखी सुबह से चहके,
सारा उपवन महके-महके।
है कनेर की छटा निराली,
झूला इन्हें झुलाती डाली।
भंवरे गुन-गुन गीत सुनाए,
तितली रानी पास बुलाती।
मधुमक्खी मधुरस ले जाती,
मीठा-मीठा शहद बनाती।
फूलों का घर कितना सुंदर,
कौन बताओ इनसे बढ़कर।
हम भी ऐसे खिल-खिल जाएं,
बच्चों का मधुवन कहलाएं।

पेड़ लगाएं

पेड़ हमारे जीवन दाता,
इनसे जनम-जनम का नाता।
इनसे है वन, उपवन, बगिया,
सजी हुई है धरती माता।
ये हमको फल-फूल लुटाते,
अन्नदान कर भूख मिटाते।
धरती पर हरियाली लाते,
इनसे ठंडी छाया पाते।
आओ हम भी पेड़ लगाएं,
शुद्ध हवा हम इनसे पाएं।
आती नहीं कभी बीमारी,
ये अनमोल संपदा हमारी।

जाड़ा

बच्चों से डरता है जाड़ा,
बूढ़ों को आंख दिखलाता।
नौजवान से है घबराता,
चिंटू पिंटू उठ कर बैठे,
फेंक रजाई रटे पहाड़ा।
बच्चों से डरता है जाड़ा।
सुबह शाम आ जाती सर्दी,
स्वेटर कंबल ऊलन वर्दी।
फिर भी दांत बजाते चिंटू,
दादा-दादी पीते काढ़ा।
बच्चों से डरता है जाड़ा।
जाड़ा हो चाहे बर्फीला,
चाहे सूखा हो या गीला।
नए साल के आते-आते,
हो जाता इसका रंग गाढ़ा।
बच्चों से डरता है जाड़ा।
सूरज दा जल्दी छिप जाते,
चंदा मामा पेंग बढ़ाते।
महंगू चाचा की छत बैठा,
धूप सेकता पूरा बाड़ा।
बच्चों से डरता है जाड़ा।

मंगल लोक

मम्मी रोज-रोज तुम कहतीं,
पढ़ो-लिखो जाओ स्कूल।
दादा गुस्सा रोज दिखाते,
पापा मुझको कहते फूल।
दीदी को तो खेल न भाता,
सब मुझको देते फटकार।
सभी खिलाड़ी कहते मुझको,
नहीं किसी को मुझसे प्यार।
कान खोल कर सुन लो मम्मी,
पीछे से मत करना शोक,
मैंने रॉकेट बना लिया है,
मैं जाता हूं मंगल लोक।

विद्या की फुलवारी

पढ़े नहीं थे बुद्धू भाई,
करते उनकी सभी हंसाई।
सोलह दूनी आठ बताते,
टूटी कितनी बार सगाई।
दुखी हुए अति बुद्धू भाई,
पुस्तक कॉपी कलम मंगाई।
दिन भर करते खूब पढ़ाई,
रटें ककहरा छोड़ खिलाई।
अब उनकी मेहनत रंग लाई,
हुए साक्षर विद्या पाई।
बुद्धूपन की हुई विदाई,
करते उनकी सभी बड़ाई।
पूछा शुद्ध ने हे भाई!
ऐसी अक्ल कहां से पाई?
बोले सुन लो शुद्धू भाई,
कर्म सदा होते फलदाई।
विद्या की फुलवारी कोई,
अचरज की यह बात न कोई।
अनि से रगड़ करे जो कोई,
अनल प्रकट चंदन से होई।

रसीले जामुन

आओ हम सब एक साथ मिल,
जन गण मंगलदायक गाएं।
भारत माता की जय बोलें,
प्रगति पथ पर बढ़ते जाएं।
भेद भाव से हमें न मतलब,
छुआछूत का भेद न जानें।
कोई उच्च न कोई हरिजन,
बंधु भाव ही सबसे जानें।
आओ हम सब हंसी खुशी से,
एक दूसरे के हो जाएं।
स्वर्ग लोक सा पावन निर्मल,
अपना भारत देश बचाएं।

संकलन : अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन', सी-2, एम पार्क, महानगर, लखनऊ, उ.प्र.

बच्चों की कलम से :

मेरा गांव

पशु पक्षी पेड़ पौधे,
गांव की शान हैं।
मगर क्या करें हम,
बंदरों से परेशान हैं।
आपस में मिलकर रहते,
गांव की पहचान है।
शांति यहां बनी रहे,
ये सबको रखना मान है।

- राजेश्वरी, कक्षा-8
रा.उ.मा.वि. झिकोली, शांतिपुरम, चमोली

तितली

रंग-बिरंगी तितली देखो,
सब बच्चों को भाती है।
पकड़ना चाहें अगर इसे,
हाथ नहीं ये आती है।
फूल-फूल पर जाती ये,
फूलों का रस लेती है।
फूल से भी प्यारी लगती,
हम सबको आनंद देती है।

- सोमा, कक्षा 9
कस्तूरबा गां.आ.बा.विद्यालय नगरासीमैण, पौड़ी

नशे की प्रवृत्ति

हमारे समाज में आज नशे की प्रवृत्ति बढ़ते जा रही है। आप कहीं भी जाएं, छोटे से छोटे बच्चे भी आपको नशा करते मिल जाएंगे। नशा तो नशा है। वह शराब को हो या अफीम का, भांग को हो या गांजे का। आजकल तो टेलीविजन व मोबाइल का नशा भी खतरनाक हो गया है। आज के बच्चे नशे के शिकार होते जा रहे हैं। नशे के लिए ये चोरी व डकैती जैसे दूसरे बुरे कार्य करने से भी नहीं हिचकिचाते हैं। ऐसे बच्चे केवल परिवार के लिए ही नहीं, देश व समाज के लिए भी खतरनाक होते हैं।

अपने उत्तराखंड में तो नशे की प्रवृत्ति बच्चों एवं युवाओं में बढ़ते जा रही है। नशे के आदि ये बच्चे या युवा फौज में भरती नहीं हो पा रहे हैं। इसके लिए अभिभावकों व शिक्षकों को बच्चों को प्यार से समझाते हुए उन्हें नशे की आदत से छुटकारा दिलाने का काम करना चाहिए।

- कंचन सिरस्वाल, कक्षा 10
कलियाणा बैंड, गैरसैंण, चमोली

टेलीविजन

टेलीविजन ज्ञान का भंडार,
नियत समय पर देखा करो।
केवल नाटक मनोरंजन नहीं,
विज्ञान भी उसमें देखा करो।
खेल हो या कोई त्योहार,
ये देता खबरें बार-बार।
याद रखो काम की बातें,
ये है मेरी बात का सार।

- प्रतीक्षा, कक्षा-6
कस्तूरबा गां.आ.आ.वि. नगरासीमैण, पौड़ी

भोजन

गरीबों को न मिलता भोजन,
बरबाद कोई करता है।
कोई फेंकता भोजन को,
कोई भूख से मरता है।
न छोड़ो थाली में जूठन,
सबको ये बताना है।
गरीबों की करो मदद,
देश खुशहाल बनाना है।

-दीक्षा पंत, कक्षा-8
राणा प्रताप इंटर कालेज खटीमा

सूरज

रोशनी हमको देता सूरज,
गरमी भी ये देता है।
जितना चाहो ताप लो इसको,
हमसे कुछ नहीं लेता है।
जाड़ों में ये दोस्त हमारा,
गरमी में आंख दिखाता है।
जाड़े में सब खुश हो जाते,
सूरज पास जब आता है।

- राजेश रौतेला, कक्षा-8
गो.ब.पं.रा.इ.का. जूंट, अल्मोड़ा

सूरज

सूरज दादा गरमी में,
हमको बहुत सताते हो।
सुबह जल्दी आ जाते,
शाम देर से जाते हो।
गुस्सा आता तुम्हें देखकर,
दोपहर में थक जाती हूं।
छुट्टी होती स्कूल की तो,
घर जाने में थक जाती हूं।

- वैष्णवी गुप्ता, कक्षा-8
एस.जी.पी. इंटर कालेज देहरादून

मेरी नानी

मेरी नानी प्यारी नानी,
लोरी मुझे सुनाती है।
मुझको तो वे करती प्यार,
काम की बात बताती है।
यदि कभी मैं छिप जाऊं तो,
ढूंढकर थक जाती है।
मैं हूं उसकी राजदुलारी,
अपने संग सुलाती है।

- पुष्पा आर्या, कक्षा-10
कस्तूरबा गां. आ.आ.वि. [illegible], नैनीताल

बच्चों की कलम से:

पर्यावरण

धरती के कोने-कोने में,
हरियाली बिखराओ रे।
आज समय की मांग है,
पर्यावरण बचाओ रे।
धरती एक सुहागन,
हरियाली उसका सिंदूर है।
वही सुहागन आज दुखी है,
बेबस है मजबूर है।
कदम-कदम पर पेड़ लगाकर,
उसकी मांग सजाओ रे।
आज हवाओं के तन-मन को
खुशबू से महकाओ रे।
पेड़ न काटे कोई भी,
ऐसी अलख जगाओ रे।

- हरीशसिंह मेहता, कक्षा-12
रा.इ.का.डांर, पिथौरागढ़

पेड़

पेड़ बहुत उपकारी,
फल व फूल देते हैं।
हम पर करते ये उपकार,
नहीं हमसे कुछ लेते हैं।
छाया हमको देते पेड़,
हवा भी हमको देते हैं।
देते हमको शुद्ध हवा,
गंदी हवा स्वयं लेते हैं।
पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ,
सभी को हमें बताना है।
कोई ने काटे पेड़ों को,
प्यार से हमें समझाना है।

- नीरज मेर, कक्षा 6
मन राइज पब्लिक स्कूल रा. रामगढ़, नैनीताल

पेड़ लगाओ

पर्यावरण को रखते साफ,
हम सबको पेड़ लगाने होंगे।
जीवन के हैं ये आधार।
पेड़ के लाभ बताने होंगे।
पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ,
आज यही बस नारा है।
पेड़ों को कटने से बचाओ,
बस ये अभियान हमारा है।

- अंजली, कक्षा - 7
रा.आ.उच्च प्रा.वि. हापली, चमोली

स्वच्छता अभियान

स्वच्छ भारत देश हमारा,
इसे आगे बढ़ाएंगे।
मिलजुल कर सब बच्चे,
स्वच्छता अभियान चलाएंगे।
कूड़ा कूड़ेदान में डालें,
सबको ये बतलाना है।
साफ-सफाई सभी करें,
ये सबको समझाना है।

- नाजरीन, कक्षा-8
एम. के. पी. इंटर कालेज देहरादून

बगीचा

बगीचा है घर की शान,
हरियाली हमको मिलती है।
भांति-भांति के फूल यहां,
सुगंध इनसे मिलती है।
खाली समय में हम सभी,
अपनी क्यारी बनाएंगे।
भांति-भांति के फूल लगाकर,
अपने घर को सजाएंगे।

- मोनिका मासीवाल, कक्षा-8
रामगंगा वैली स्कूल मासी, अल्मोड़ा

मेरा जन्म दिन

मेरा जन्म दिन 19 अप्रैल को होता है। घर में मेरा जन्म दिन 'जनम वार' के नाम से मनाया जाता है। इस दिन पूजा-पाठ के बाद पकवान बनते हैं।

पिछली बार मेरा जन्म दिन शुक्रवार को पड़ा। मैंने इस दिन अपने घर में नए गमले में फूल व पौधे रोपे। मैंने विद्यालय की वाटिका में भी पौधे लगाए। उस दिन मैंने अपने घर की सफाई तो की ही, विद्यालय में भी सफाई की।

अपने जन्म दिन पर मैंने स्कूल के सारे बच्चों व गुरुजी को टॉफी बांटी। अपने गुरुजनों को आशीर्वाद लिया।

- पूर्णिका जोशी, कक्षा - 8
सरस्वती वि. म.शिवालीनगर, अल्मोड़ा

जल ही जीवन

वन से जल, जल से जीवन,
जल को इसलिए बचाना है।
वन धरती के आभूषण हैं,
हमको पेड़ लगाना है।
बूंद-बूंद से सागर बनता,
बात सभी ने मानी है।
पानी है अनमोल भइया,
ये बात सभी ने जानी है।

- ममता मासीवाल, कक्षा-7
रामगंगा वैली स्कूल मासी, अल्मोड़ा

पेड़

पेड़ों से संसार हमारा,
पेड़ों से ही जल।
जानें हम पेड़ों की कीमत,
वरना पछताएंगे कल।
पेड़ लगाओ पेड़ बचाओ,
सबको ये बतलाना है।
पेड़ लगाकर धरती को,
मिलकर स्वच्छ बनाना है।

- खुशी आर्या, कक्षा-9
जी.जी.आई.सी., अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से:

पुलवामा हमला

पुलवामा हमले में हमने,
दुश्मन को मजा चखा दिया।
भारत के वीर सैनिकों ने तो,
अपना जज्बा दिखा दिया।
वीर शहीदों को नमन हमारा,
हमने बदला ले लिया।
जिस शाख पर था घमंड उसे,
हमने उस शाख को जला दिया।

- हिमानी जोशी, कक्षा - 8
सुशिक्षण एकेडमी पिथौरागढ़

फौजी

देश की सीमा पर फौजी,
डटा रहता दिन-रात।
सर्दी हो या गरमी,
बस करता देश की बात।
करें नमन हम फौजी को,
फौजी देश की शान है।
देश की खातिर मर मिटने,
तिरंगा उसकी आन है।

पिंकी रावत, कक्षा 8
कस्तूरबा गांधी, आ.बा.वि. नागचूलाखाल, पौड़ी

जीवन की घटना

गरमी की छुट्टी में हम अपने गांव हली गए थे। छुट्टी के बाद हम वापस रामगढ़ आ रहे थे। मेरी मां, भाई, ताई, दीदी और बड़ा भाई हम सब एक ही केमू बस में थे। अचानक बस का ब्रेक फेल हो गया। ड्राइवर ने दिमाग लगाते हुए बस को एक दीवार में टक्कर मार दी। इस हादसे में कंडक्टर का सिर दीवार व दरवाजे में दब गया। अधिकतर यात्रियों को चोट आई। मेरी नाक में भी चोट लगी।

बस का दरवाजा दीवार की तरफ था। इस कारण कोई यात्री नहीं उतर सका। किसी ने पीछे का कांच का दरवाजा तोड़ा। एक-एक करके हम सबको बाहर निकाला गया। सारे यात्रियों को चोट थी। सारे बाहर निकल गए। परंतु कंडक्टर की मौत हो गई। सभी यात्रियों को देखकर ड्राइवर खुश था। परंतु कंडक्टर की मृत्यु से उसे बहुत सदमा लगा।

यात्रियों में से कई लोग एक दूसरे की मदद कर रहे थे। ऐसे में हमें एक दूसरे की मदद तो करनी ही चाहिए।

चित्रा जोशी, कक्षा 8
सरस्वती विद्या मंदिर उ. र. रामगढ़, नैनीताल

मोबाइल

मोबाइल हूं मोबाइल,
सबकी बात कराता हूं।
हो जाती आंखें खराब,
बच्चों को समझाता हूं।
उपयोगी हूं मैं बहुत,
मुझसे काम लिया करो।
पढ़ाई में लगाओ ध्यान,
मुझे कभी-कभी देखा करो।

- विशाल सिंह, कक्षा - 8
राजकीय इंटर कालेज चूड़, अल्मोड़ा

मोबाइल

मोबाइल का जमाना है,
बहुत काम ये आता है।
स्मार्ट फोन तो बढ़िया,
बहुत बैट्री खाता है।
बहुत काम की चीज ये,
इसका सब उपयोग करें।
पढ़ाई में लगाएं ध्यान,
इसका न दुरुपयोग करें।
सिगनल न आए तो,
मन खट्टा हो जाता है।
हमारे गांव का पप्पू तो,
पेड़ पर चढ़ जाता है।

-अनूप गुरूड़, कक्षा- 8
राजकीय इंटर कालेज उ.रामगढ़,नैनीताल

हमारा स्कूल

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
सराड़ी के सब बच्चे।
मेहनत बहुत करते हम,
दिल के बहुत ही सच्चे।
प्रधानाचार्य अंबालाल जी,
अनुशासन हमें सिखाते हैं।
जो पढ़ेगा आगे बढ़ेगा
ये बात हमें बताते हैं।

- शिवानी प्रजापत, कक्षा-7
रा.उ.मा.वि. सराड़ी, उदयपुर, राजस्थान

मेरे पापा

मेरे पापा प्यारे पापा,
मुझको तो वे भाते हैं।
माली का वे करते काम,
शाम को चीजें लाते हैं।
श्री मनोज है नाम उनका,
फूलों से प्यार करते हैं।
पेड़ लगाओ फूल उगाओ,
हमसे भी वे कहते हैं।

- संगीता, कक्षा 8
रा.कन्या जू.हा.जैनोली, रानीखेत

बच्चों की कलम से:

बस्ता

मेरे स्कूल का बस्ता,
किताब से भर जाता है।
जो रखता बस्ते का ध्यान,
मान वही बस पाता है।
बस्ते को यूं ही मत फेंको,
साफ इसे सब रखना।
जो पुस्तकें स्कूल की न हों,
उन्हें घर पर ही रखना।

- हंसा आर्या, कक्षा -9
रा.इ.का.मुनस्यारी, पिथौरागढ़

पुस्तक

ज्ञान का भंडार है पुस्तक,
हमको देती है ये ज्ञान।
दोस्ती जो इससे करता,
उसका हर लेती अज्ञान।
पुस्तक से करो दोस्ती,
तुम्हारा मान बढ़ाएगी।
अच्छे बुरे का भेद भी,
तुमको यही बताएगी।

- दुर्गा, कक्षा-9
रा.उ.मा.वि.सराड़ा, उदयपुर, राजस्थान

भैंस

देती दूध भैंस हमें,
काली-काली होती है।
भूख लगती जब इसे,
ऊंची आवाज में रोती है।

- आरती जुयाल, कक्षा-5
रा.प्रा.वि.कोकली, अलंती, इनोंदेक, पौड़ी

मोबाइल और बच्चे

आजकल बच्चों का ध्यान पढ़ाई में कम लग रहा है। उनका ध्यान मोबाइल पर अधिक लगता है। इस कारण परीक्षा में उनके अंक कम आ रहे हैं। ये बात भी सही है कि मोबाइल आजकल बहुत जरूरी हो गया है। फोन करने के साथ ही नेट के माध्यम से कई काम की चीजें फोन से मिलती हैं। परंतु हमें मोबाइल का आदी नहीं होना चाहिए। कभी-कभार मोबाइल देख लिया कोई बात नहीं। परंतु घंटों तक मोबाइल देखने से आंखें खराब हो जाती हैं। मैं तो कहती हूं कि कक्षा 12 तक बच्चों को मोबाइल नहीं देना चाहिए।

- खुशी जोशी, कक्षा 8
ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

बेटी

बेटी है घर की शान,
वह आगे बढ़ते जाएगी।
अवसर इसे दीजिए,
वह परिवार का नाम कमाएगी।
बेटियों ने दिखा दिया,
वे नहीं किसी से कम।
बेटियां आगे बढ़ें,
अवसर उन्हें दें हम।

- किरन, कक्षा-10
कस्तूरबा गांधी आ.बा.वि. रतखालीसैंण, पौड़ी

बेटी बचाओ

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ,
जन-जन का ये नारा है।
अभियान चला है देश में,
बेटी बढ़े, ये फर्ज हमारा है।
बेटियां नहीं हैं कम,
ये हम सब जान गए।
बेटियां बढ़ रही हैं,
ये भी हम मान गए।

- काजल कन्यूणी, कक्षा-7
रा.उ.मा.वि. बहुली, बागेश्वर

चंदामामा

चंदा मामा, चंदा मामा,
दिन में कहां जाते हो?
कभी बहुत पतले हो जाते,
खाना नहीं क्या खाते हो?
बहुत मजा आता हमको,
जब बहुत बड़े हो जाते हो।
गुस्सा तो तब आता है,
जब गायब हो जाते हो।

- प्रतिज्ञा शर्मा, कक्षा 6
रामजे बैली स्कूल मार्ग, अल्मोड़ा

चंदामामा

आसमान में चंदामामा,
अपना रूप बदलता है।
जाड़ा हो या गरमी,
ये रोज ही चलते रहता है।
समय के साथ चलो,
हमको ये बतलाता है।
कभी दिन में दिखता यह,
कभी रात में आता है।

- निशा सुयाल, कक्षा 7
रा.बा.इ.का.नैन न, रामगढ़, नैनीताल

चंदामामा

आसमान में चंदामामा,
चक्कर रोज लगाता है।
छोटा-बड़ा हो जाता ये,
कुछ समझ नहीं आता है।

- पवन रावत, कक्षा - 4
रा.प्रा.वि. रामपुर, कोट, पौड़ी गढ़वाल

बेटी

बेटी नहीं है कम,
बेटी को न समझो भार।
घर का मान बढ़ाएगी,
यही है मेरी बात का सार।
चांद पर चढ़ गई बेटियां,
उनको आगे बढ़ने दो।
देश को राह दिखाएंगी,
बस उसको ये अवसर दो।

– महिमा जोशी, कक्षा-9
राजकीय बा.इं.कालेज स्याल्दे, अल्मोड़ा

हमारा खटीमा

खटीमा सुंदर शहर हमारा,
सफाई हमको रखनी होगी।
कोई न हो बीमार यहां,
सफाई हमें रखनी होगी।
आपस में रहता भाईचारा,
मिलजुल यहां सब रहते।
गरमी की तो मत पूछो,
गरमी हम सब सहते।

–कविता कश्यप, कक्षा-8
रा.उ.प्रा.वि.अमाऊँ, खटीमा, उधमसिंहनगर

बंदर

बंदर की खौं खौं सुन,
बच्चे सब डर जाते हैं।
हाथ से छीन लेता सब्जी,
बाजार से जब लाते हैं।
बच्चों का जीना हराम,
स्कूल नहीं जा पाते हैं।
बंदर की डर से आजकल,
बच्चे संग-संग जाते हैं।

– सागर कुमार, कक्षा-6
गोविंद ब.पं.रा.इ.का.खूंट, अल्मोड़ा

गरमी की छुट्टी

हमारे स्कूल में गरमी की छुट्टियां केवल 10 दिन की होती हैं। इस कारण हम छुट्टी का वास्तविक मजा नहीं ले पाते हैं।

गरमी की छुट्टियों में कोई कहीं घूमने जाता है तो कोई बालप्रहरी के कार्यक्रमों में ढेर सारी मस्ती के खेल करते हैं। कुछ बच्चे छुट्टियों में केवल टी.वी. और मोबाइल पर चिपके रहते हैं। इससे उनकी आंखें खराब हो जाती हैं। इस कारण उन्हें चश्मा पहनना पड़ता है। मैं तो कहती हूं कि छुट्टी का आनंद हमको लेना ही चाहिए।

–भावेश तिवारी, कक्षा 10
शारदा पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

नाम

तुम नाम की बात करते हो,
लोग तो चेहरे तक भूल जाते हैं।
तुम प्यार की बात करते हो,
लोग तारीख तक भूल जाते हैं।
तुम समुंदर की बात करते हो,
लोग तो आंखों में डूब जाते हैं।

– प्रकाशसिंह राणा, कक्षा-12
आ. रा.इ.का.डौर, पिथौरागढ़

मेरी मैडम

मेरी मैडम सबसे अच्छी,
रोज ही पाठ पढ़ाती हैं।
अनुशासन में सभी रहें,
सबको बात बताती हैं।
बच्चे सब खुश रहें,
सब को करती हैं वे प्यार।
बच्चो सब मेहनत करो,
कहती हमसे बारंबार।

– योगवता भट्ट, कक्षा-5
रा.प्रा.वि.प्रइगांव मल्ला, ओखलकांडा

आम

फलों का राजा आम,
गरमी में सबको भाता है।
बरसात में होता सस्ता,
गरीब भी इसे खाता है।
आम के आम गुठली के दाम,
बनता है इसका अचार।
कोई चूसकर कोई काटकर,
खाता है इसे बार-बार।

– देवसिंह, कक्षा-8
रा.पू.मा.वि. सिमलटाना, रामगढ़, नैनीताल

हमारा स्याल्दे

अल्मोड़ा जिले की तहसील,
स्याल्दे हमारा प्यारा है।
विनोद नदी बहती यहां,
हर बच्चा यहां का प्यारा है।
कल-कल करती नदी यहां,
हम सबको लगती प्यारी।
चौकोट की इस धरती को,
जाने दुनिया सारी।

–एश्वमता, कक्षा-7
रा.बा.इं.कालेज स्याल्दे, अल्मोड़ा

प्रदूषण

बम पटाखों का धुआं,
पर्यावरण दूषित करता है।
फिजूलखर्च और दिखावा,
हर कोई यहां करता है।
पर्यावरण के लिए खराब,
पटाखा न जलाया करो।
पैसा बरबाद न हो,
ऐसा कुछ किया करो।

– प्रियंका पांडे, कक्षा -8
मानस पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से

गले की घंटी

एक दिन की बात है। एक गांव में एक गाय घास चर रही थी। गाय का बच्चा भी अपनी मां के साथ था। वह मां के साथ खेल रहा था। गाय के बछड़े को एक कुत्ता परेशान कर रहा था।

बछड़े ने अपनी मां से कहा, "यह कुत्ता मुझे परेशान कर रहा है। आप मेरी मदद करोगी।"

गाय ने अपनी गरदन हिलाकर कहा, "हाँ"

थोड़ी देर में कुत्ता फिर बछड़े को परेशान करने लगा। जैसे ही गाय ने कुत्ते को देखा। गाय ने अपने गले में बंधी घंटी जोर-जोर से हिलाई। कुत्ता डर कर भाग गया।

– हर्षी जोशी, कक्षा-5

राजकीय प्रा.वि.धारापद, धौलादेवी,अल्मोड़ा

वर्षा

पहले वर्षा होती थी झमाझम,
बादल भी गरजते धमाधम।
अब वर्षा होती है कम कम कम,
लेकिन कहीं पर होती है झमाझम।
ऐसा क्यों कहीं वर्षा झमझम,
कहीं होती है कम कम कम।
वर्षा का तमाशा समझ न आए,
कहीं बाढ़ तो कहीं पानी न आए।
तुम भी बताओ, हम भी सुझाएं,
प्रकृति को हम मिलकर बचाएं।

– उत्कर्ष धपोला, कक्षा – 5

जिम कार्बेट इंटरनेशनल स्कूल बागेश्वर

पतंग

सर-सर सर-सर उड़ी पतंग,
देखो कैसे चली पतंग।
आसमान में उड़ती जाए,
सब बच्चों को भाए पतंग।

साहिल बड़थ्वाल, कक्षा 6

रा.उ.प्रा.वि. खंदूखाल, भ्यांर, पौड़ी

भोजन की बरबादी

शादी विवाह में आजकल,
भोजन बरबाद होता है।
कोई फेंकता भोजन को,
कोई भूख से रोता है।
कड़ी मेहनत से उगता अन्न,
बरबाद भोजन मत करो।
भोजन है अनमोल जी,
सबको ये बताया करो।

– आंचल राणा, कक्षा – 8

रा.उ.प्रा.विद्यालय सिंगुणी, उत्तरकाशी

दहेज

दहेज आज समस्या एक है,
इससे हमको लड़ना होगा।
जान ले रहा है दहेज,
एकजुट सबको होना होगा।
जलाई जा रही औरतें,
लड़कियों को आगे आना होगा।
नई पीढ़ी सोचे जरूर,
दहेज का खात्मा करना होगा।

– अनुभा पोखरिया, कक्षा – 8

डायनेस्टी मा.पू.अकादमी किनकी फार्म, खटीमा

तिरंगा

तिरंगा है भारत की शान,
मर मिटते इस पर जवान।
एकता का जोश भरे तिरंगा,
इसका हम रखेंगे मान।
राष्ट्रीय ध्वज न झुकने देंगे,
ये हमारे देश की शान।
जान की बाजी लगा देंगे।
ये है मेरा देश महान।

– जिज्ञासा गुप्ता, कक्षा – 9

रा.बा.इ.कालेज स्याल्दे, अल्मोड़ा

स्वच्छता

गांधी जी का एक था सपना,
स्वच्छ भारत हो अपना।
मिलकर कदम बढ़ाना है,
देश को स्वच्छ बनाना है।
शौचालय का हो प्रयोग,
कूड़ेदान का करें उपयोग।
स्वच्छता अभियान चलाएंगे,
देश को आगे बढ़ाएंगे।

– कविता, कक्षा-9

रा.बा.इ.का. कालेज गोपेश्वर, चमोली

मेरा अच्छा दिन

वह तारीख मुझे आज तक याद है। 10 सितंबर, 2007 अगले दिन मेरा जन्म दिन था। मैं बहुत ही उत्साहित थी।

अगले दिन मैं विद्यालय गई। आज विद्यालय में काफी शांति थी। मैंने अपने साथियों से पूछा आज पूरे विद्यालय में शांति का कारण क्या है।

मुझे बताया गया कि आज मधु मैम आई हैं। कुछ ही देर में प्रार्थना की घंटी बजी। सारे बच्चों ने उस दिन मैम की पसंद की प्रार्थना गाई। प्रार्थना पूरी होने पर मैम ने बच्चों को बहुत सी बातें बताई। उनकी बताई बातें ही हैं जो मेरे लिए उस दिन को खास बनाती हैं। उन्होंने हम बच्चों के मन की बात की। उन्होंने हमें सीख दी कि अपने से छोटों को भी उतना ही आदर देना चाहिए जितना की बड़ों को। उस दिन को मैं आज तक याद करती हूं। इस बहाने मैं मधु मैम को बार-बार याद करती हूं।

– ओजस्वी प्रभाकोटी, कक्षा – 10

कुमाऊँ एकेडमी अल्मोड़ा

बच्चों की कलम से

बादल

बादल आए झम-झम झम,
बिजली चमकी चम चम चम।
बादल देखकर डर गए हम,
वर्षा हुई बहुत ही कम।
गरजते हैं जो बरसते नहीं,
क्षण में दौड़ लगाकर जाते कहीं।
दिखते नजदीक होते दूर कहीं।
रूप रंग ये बदलते जहां कहीं।

– अभिन तिवारी, कक्षा -8
सरस्वती विद्या मंदिर इ. रामगढ़, नैनीताल

भारत देश

मेरा भारत देश महान,
भांति-भांति के लोग यहां।
मिलकर रहते आपस में,
खुशदिल रहते सब जहां।
आपसी एकता बनी रहे,
तभी आगे बढ़ पाएंगे।
शांति रहेगी चारों ओर,
शांत देश कहलाएंगे।

– सुमित कुमार, कक्षा 8
राजकीय इ. का. नगरासेरा, पौड़ी

स्वतंत्रता दिवस

सन सैंतालीस पंद्रह अगस्त को,
भारत देश आजाद हुआ।
अंगरेजों ने भारत छोड़ा,
सारे देश में उल्लास हुआ।
याद करें उन शहीदों को,
देश पर जो न्यौछावर हुए।
नमन करें उन वीरों को,
जो देश हित में शहीद हुए।

– हिमानी मनराल, कक्षा-9
रा.इ.कालेज खूंट, अल्मोड़ा

छुट्टी में मस्ती

पिछली छुट्टियों में मुझे अपने भैया के पास लखनऊ जाने का अवसर मिला। 27 मई से हमारे स्कूल की छुट्टियां थी। 28 मई को हम सुबह मासी से जीप में चौखुटिया तक पहुंचे। चौखुटिया से हमें रानीखेत के लिए रोडवेज की बस मिल गई। रानीखेत से हम सीधे लखनऊ की बस में बैठे।

रानीखेत से रानियाखोली, जैनोली, पिलखोली, खैरना व गरमपानी होते हुए आगे बढ़ रहे थे कि हमें कैंची मंदिर दिखाई दिया। मुझे बताया गया कि कैंची मंदिर में पूजा करने के लिए अमरीका से फेसबुक का मालिक जुकरबर्ग भी पहुंचा था। कैंची धाम के बाद भवाली होते हुए हम हल्द्वानी पहुंचे। सुबह 5 बजे हम लखनऊ पहुंच गए। वहां बस अड्डे पर भाई हमें लेने आया था। उस दिन तो हमने रात भर की थकान मिटाई।

दूसरे दिन हमने अपने पिकनिक की शुरूआत चिड़ियाघर से की। लखनऊ का चिड़ियाघर बहुत प्रसिद्ध है। यहां मैंने हाथी, घोड़ा, सफेद बाघ, जंगली भालू व दरियाई घोड़ा आदि जानवर तथा पक्षी देखे। यहां मैंने कुछ नए प्रकार के बंदर देखे। इस बंदर का नाम लोग हुक्कू बंदर कह रहे थे। उसी के पास हमने संग्रहालय में कई पौराणिक वस्तुए देखी।

एक दिन बाद हम लखनऊ में भूलभुलैया और इमामबाड़ा देखने गए। मुझे लगा कि लखनऊ में सभी जाति, धर्म, संप्रदाय व क्षेत्र के लोग आपस में मिलजुल कर रहते हैं। पर हमारे समाज में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो अपने स्वार्थ के लिए समाज को जाति, धर्म व संप्रदाय के नाम से बांटते हैं। सब लगाकर लखनऊ में हमने खूब मस्ती की। अपने स्कूल में सारे दोस्तों को लखनऊ के बारे में बताया। सबने ध्यान से मेरी बात सुनी।

– रिया नेगी, कक्षा – 8
राम गंगा वैली स्कूल मासी, अल्मोड़ा

अरविंदो आश्रम

अरविंदो आश्रम मधुबन
ये रामगढ़ की शान है।
प्रकृति की अनुपम छटा,
हम सबकी यह आन है।
देश विदेश से आते लोग,
यहां की सुगंध ले जाते हैं।
फूलों की क्यारियां देख,
सभी खुश हो जाते हैं।
शांत वातावरण यहां का,
ध्यान भी लोग लगाते हैं।
वातावरण स्वच्छ यहां का,
खुश होकर सब जाते हैं।

– शंकर, कक्षा-6
समरहज पब्लिक स्कूल म.रामगढ़, नैनीताल

देहरादून

देहरादून शहर हमारा,
हम सबको अच्छा लगता है।
स्कूल पहुंचने में हो जाती देर,
यहां सड़क पर जाम लगता है।
उत्तराखंड की राजधानी,
लीची यहां की सुंदर है।
न अधिक गरमी न ठंड,
देहरादून हमारा सुंदर है।

–अभय, कक्षा – 8
बाल मंदिर पब्लिक स्कूल देहरादून

मेरी मां

सबसे प्यारी मेरी मां,
मुझको राह दिखाती है।
मेरा रखती है वह ध्यान,
आगे मुझे बढ़ाती है।
रिश्ते नाते निभाती है वह,
दादी का भी रखती ध्यान।
मेरी मां सा कोई नहीं,
सचमुच मेरी मां महान।

– आस्था भट्ट, कक्षा-6
रा.बा.इं.कालेज न. रामगढ़, नैनीताल

बच्चों की कलम से:

हरियाली

आज समय की मांग यही है,
चारों ओर हरियाली हो।
धरती को सजाएं पेड़ों से,
चारों ओर खुशहाली हो।
एक पेड़ हम भी रोपेंगे,
आज शपथ ये ले लो।
उस पेड़ की रक्षा करेंगे।
मन में प्रण ये कर लो।

– साहिल चंद, कक्षा - 5

एस ई मिल पब्लिक स्कूल, गड़ोली, पौड़ी

राखी

भाई-बहन का त्योहार,
रक्षाबंधन जब आया।
बहुत प्यार से बहना ने,
भाई को लड्डू खिलाया।
आपसी प्रेम का त्योहार,
रिश्ते दोनों निभाते हैं।
एक दूजे की रक्षा का,
अपना फर्ज निभाते हैं।

-मानसी आर्या, कक्षा-6

रेनेसा नर्सरी एंड स्कूल गंगोलीहाट, पिथौरागढ़

किसने बनाया

ये पहाड़ और मैदान,
फूलों को किसने महकाया?
आसमां में सूरज व चांद,
तारों को किसने सजाया?
सर-सर चलती ये नदियां,
बादलों को किसने बहकाया?
इंद्रधनुष और ये मौसम,
इंसान को किसने बनाया?

– मो. साहिक अब्बासि, कक्षा - 7

रा.उ.मा.वि.बिझोली, नारसन, हरिद्वार

गांव की याद

कलेत गांव की बात है। वहां सभी लोग आपस में मिलजुल कर रहते थे। गांव के बूढ़े दिन में एक दूसरे के घर आते-जाते। एक दूसरे के सुख-दुख में भागीदारी करते।

गांव में रामू का परिवार रहता था। परिवार में रामू की बूढ़ी मां, पत्नी और बेटा सोनू थे। एक दिन सोनू ने अपने पिताजी से पूछा,'' पिताजी! गांव के सारे लोग शहर क्यों जाना चाह रहे हैं। सारे लोग आखिर गांव से क्यों जा रहे हैं।

सोनू ने अपने दोस्तों से शहर की रौनक के बारे में बहुत सी बातें सुनी। शहर में बिजली की चमक, मोटर गाड़ी व पूरे शहर की रौनक यानी रोज चहल-पहल। पर सोनू को अपना गांव प्यारा था।

गांव में रंग-बिरंगी तितलियां। सुबह-सुबह चिड़ियों की चहचहाट। स्कूल से आकर वह मां के संग खेत में जाता। वहां मिट्टी से हलुवा बनाता। खेल-खेल में वह हरी पत्तियों की सब्जी बनाता।

अपने दोस्तों के साथ वह लुका छिपी खेल करता। छुट्टी के दिन गायों को लेकर ग्वाला जाता। वहां गधेरे में सारे बच्चे पानी में तैरते। सारे बच्चे मछली पकड़ते। गधेरे के पानी में वे सब पनचक्की बनाते तो कभी दीवारें काटकर मोटर रोड बनाने का खेल करते।

देखा-देखी गांव के दूसरे बच्चे भी अपनी माता के साथ शहर चले गए। अब तो सोनू के साथ गांव में खेलने वाला कोई नहीं था। वह अपनी मां के साथ खेलता। पर मां को इतनी फुरसत कहां थी। अब सोनू सहमा-सहमा सा रहता।

सोनू की मां ने सोनू के पिताजी से कहा, ''गांव के सारे बच्चे शहर में पढ़ रहे हैं। सोनू के साथ खेलने वाला कोई नहीं है। क्या हम भी शहर में कमरा लेकर रहें?''

रामू ने कहा, 'शहर में बहुत खर्च करना पड़ता है। वहां सारे चीज के पैसे लगते हैं। हम लोग इतना कहां से जुटा पाएंगे।''

सोनू की मां ने कहा, ''गांव में पूरे साल मेहनत करके भी एक महीने का अनाज पैदा नहीं होता। जितनी मेहनत हम गांव में करते हैं। उतनी शहर में करेंगे तो अधिक आमद होगी। यहां बंदर भी बहुत परेशान करते हैं। रात को बाघ का डर अलग है। मैं तो कहती हूं कि हमें भी गांव छोड़ देना चाहिए। शहर में मैं भी कुछ मेहनत करूंगी।''

रामू ने अपनी बूढ़ी मां से पूछा, ''मां! सारा गांव शहर चले गया है। क्या हम लोग भी चलें?''

'' तुम लोग खुद समझदार हो। जैसे अच्छा होता है, वैसा करो।'' मां की सहमति लेकर रामू भी बच्चों को लेकर शहर चले गया।

अब पूरे गांव में रामू की मां अकेले रह गई। सोनू के जिद करने पर रामू अपनी मां को भी शहर ले आया। उन्हें भी सोनू के साथ अच्छा लगता।

शहर के स्कूल में सोनू को बहुत अधिक होम वर्क मिलता। ट्यूशन था। अब सोनू भी दादी को समय नहीं दे पाता। दादी बहुत परेशान थी। उससे बात करने का समय तक किसी के पास नहीं था। शहर में रौनक तो बहुत थी। पर सब अपने काम में व्यस्त हैं। कोई मोबाइल पर तो कोई दूसरे काम में। दादी हमेशा गांव को याद करती। पर उसकी सुनने वाला कोई नहीं था।

-शीतल भट्ट, कक्षा 12

भट्यूड़ा, गंगोलीहाट,
पिथौरागढ़

पानी

पानी है सबका जीवन,
पानी हमें बचाना है।
सूख रहे पानी के स्रोत,
हमको इन्हें बचाना है।
बरबाद न करो पानी को,
पानी का मोल सब जानो।
पेड़ हैं जल के आधार,
बात सभी ये मानो।

– नगमा खान, कक्षा-7
फूलचंद ना.शि.मं.क.इं.का.देहरादून

हमारा द्वाराहाट

मां दूनागिरी के आंचल में,
बसा है हमारा द्वाराहाट।
मंदिरों की नगरी यह,
बड़ा गांव यहा है हाट।
पूजा करने लोग यहां,
मंदिरों में आते हैं।
पौराणिक मंदिर यहां,
पर्यटक देखकर जाते हैं।

– ज्योत्सना, कक्षा-6
होप पब्लिक स्कूल पुनाडीह द्वाराहाट

मन करता है

मन करता तितली बन जाऊं,
फूलों का मैं रस पी जाऊं।
मन करता गाड़ी बन जाऊं,
जगह-जगह की सैर कराऊं।
मन करता पौधा बन जाऊं,
सुंदर-सुंदर फूल खिलाऊं।
मन करता कोयल बन जाऊं,
सबको प्यारा गीत सुनाऊं।
मन करता तारे बन जाऊं,
चम चम चम चमकती जाऊं।
मन करता सूरज बन जाऊं,
अंधकार को दूर भगाऊं।

– पूर्वांशी, कक्षा - 6
राजकीय इंटर कालेज पुनाकोट, पौड़ी

अरमान

अक्सर कुछ लोग यहां,
पत्थर पर देखते हैं भगवान।
जाति धर्म के नाम पर लड़ते,
लोगों का लड़ाना इनका अरमान।
किसी की कलाई से चूड़िया टूटी,
कितने घर हुए बरबाद।
न अल्ला आया न ही राम,
बस आतंकियों के घर आबाद।
हैं यहां ढोंगी व पाखंडी,
रोज नए-नए रिवाज बनाते।
दूसरों के मुंह का निवाला छीनते,
भोले भाले लोगों को सताते।

– गौरांशी पांडेय, कक्षा-11
राजकीय इंटर कालेज अंडोली, अल्मोड़ा

फौजी

फौजी हैं देश की शान,
देश के लिए मरते हैं।
सोचते हैं देश के लिए,
मरने से न डरते हैं।
फौजी की ड्रेस पहनकर,
मैं भी लड़ने जाऊंगा,
दुश्मन पानी न मांगेगा,
उसको मजा चखाऊंगा।

– कुलदीप बधानी, कक्षा 7
सरस्वती शि.वि.मं.छिरना, गरमपानी

गांव की याद

एक दिन की बात है। मैं स्कूल से घर को जा रही थी। मुझे रास्ते में कुछ टप्प टप्प की सी आवाज सुनाई दी। मुझे लगा कि मुझे इस आवाज का पीछा करना चाहिए। मैं थोड़ी रुकी। जिस ओर से आवाज आ रही थी। मैं उस ओर बढ़ी। ओह! यहा पानी का नल खुला था। पानी बरबाद हो रहा था। मैं नल के पास गई। मैंने नल बंद कर दिया।

दूसरे दिन मैंने अपने स्कूल में नल बंद करने की अपनी बात सर जी को बताई तो सर ने सारे बच्चों के बीच मेरी तारीफ की। सर ने कहा, ''पानी की एक-एक बूंद अनमोल है। पानी की बरबादी नहीं करनी चाहिए।'' मुझे बहुत अच्छा लगा। उस दिन से मेरे सारे दोस्त भी पानी की बरबादी नहीं होने देते।

– तनु रावत, कक्षा - 7
एन ई मिल पब्लिक स्कूल, गडोली, पौड़ी

पर्यावरण

मेरा देश भारत देश,
सब देशों से प्यारा है।
नमन करूं इसकी माटी को,
ये हम सबको प्यारा है।
देश ने हमको बहुत दिया है,
हमको कर्ज चुकाना है।
राष्ट्रीय एकता बनी रहे,
ऐसा कर दिखाना है।

– जिया जोशी, कक्षा - 8
राम प्यारी आर्य क.इं.कालेज देहरादून

फूल

खुश्बू हमको देते फूल,
हम सब फूल लगाएंगे।
घर आंगन की शोभा होती,
सबको बात बताएंगे।

भूपेंद्र बिनवाल, कक्षा 3
रा.प्रा.वि. हल्दूचौड़ा नायक, नैनीताल

जानकारी :

ऐसा क्यों होता हैं ?

● घमंडीलाल अग्रवाल

विज्ञान की तीन शाखाएं हैं – भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं जीव विज्ञान। विज्ञान की इन्हीं शाखाओं से संबंधित कुछ रोचक प्रश्नोत्तर नीचे दिए जा रहे हैं जो तुम्हारा ज्ञानवर्धन करेंगे।

● हमें गुस्सा क्यों आता है?

तेज रफ्तार से भागती जिंदगी में जब लक्ष्य हाथ नहीं आता दिखता, तो हमारा स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। ऐसे में हमें छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आने लगता है। अमूमन पर सहनशक्ति कम होने से तेजी से गुस्सा आता है। कभी-कभी लोगों को अच्छी बातें भी बुरी लगती हैं। जिससे तनाव पैदा होता है तथा गुस्सा आने लगता है। सकारात्मक रवैया अपनाने से गुस्से पर काबू पाया जा सकता है।

● तरबूज पानी की कमी क्यों पूरी कर देता है?

तरबूज शरीर को ठंडक पहुंचाने के साथ-साथ ऊर्जा भी प्रदान करता है। इसमें पानी की मात्रा 92 प्रतिशत है जबकि कैलोरी की मात्रा शून्य रहती है। तरबूज में प्रचुर मात्रा में विटामिन 'ए', 'बी' तथा 'सी', आयरन, मैग्नीशियम और पोटेशियम भी पाया जाता है। यह रक्त को साफ करने के साथ-साथ पथरी, हृदय रोग और कैंसर जैसी बीमारियों में भी लाभप्रद है। इसमें वसा नहीं होती जिससे वजन नहीं बढ़ता है।

● बच्चों में शैय्या-मूत्र की समस्या क्यों मिलती है?

पांच वर्ष से ऊपर की आयु के बच्चों द्वारा सोते समय अनजाने में स्वयं पेशाब निकल जाने को 'शैय्या मूत्र' कहा जाता है। बाल्यावस्था में ऐसा होना स्वाभाविक है। नवजात बच्चों में मूत्र-त्याग की क्रिया एक परिवर्तन के रूप में होती है। जैसे ही बच्चे का मूत्राशय मूत्र से भर जाता है, उसकी पेशियों में आकुंचन होता है और मूत्र बाहर निकल जाता है। बड़े होने पर बच्चों में पेशियों पर नियंत्रण होने से यह समस्या समाप्त हो जाती है।

● मुस्कान लाभकारी क्यों मानी जाती है?

मुस्कुराहट को खुशी का प्रतीक कहा जाता है। इसकी कोई कीमत नहीं है। बल्कि यह अत्यंत गुणकारी व अमूल्य है। मुस्कान जहां खुशी देती है, वहीं तनाव को भी दूर करती है। यह सोच को सकारात्मक बनाती है। लोगों से मित्रता करने में भी मुस्कान की प्रशंसनीय भूमिका होती है। मुस्कुराने से शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। आत्मविश्वास बढ़ता है। यह हमारे प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत बनाती है।

● अभिवादन महत्त्वपूर्ण क्यों होता है?

वस्तुतः जब कोई व्यक्ति किसी विशिष्ट या सम्मानित व्यक्ति को प्रणाम करता है अथवा उनके चरण स्पर्श करता है तो उसी दौरान बुजुर्ग प्रायः सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हैं। शोध के अनुसार आशीर्वाद की इस प्रक्रिया में बड़ों के हाथों की ऊर्जा अभिवादन करने वाले के शरीर में प्रविष्ट हो जाती है। यह सकारात्मक ऊर्जा उसे उत्साह से भर देती है।

● स्वीमिंग पूल का पानी नुकसानदेह क्यों होता है?

दरअसल स्वीमिंग पूल के पानी में पसीना, बाल, चमड़ी और पेशाब के अतिरिक्त तैराकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कॉस्मेटिक भी होते हैं। जब ये कीटाणुनाशकों के संपर्क में आते हैं, तो रासायनिक प्रतिक्रिया द्वारा जहरीले एजेंट में बदल जाते हैं। इससे एजिंग प्रोसेस तेज हो जाता है एवं अस्थमा होने की आशंका भी बढ़ जाती है। साथ ही मूत्राशय का कैंसर भी हो सकता है।

● दांतों में कीड़ा क्यों लगता है?

छोटे बच्चों के दांतों में कीड़ा लगने की सबसे बड़ी वजह चॉकलेट लेना है तथा डिब्बा बंद दूध का प्रयोग भी है। वस्तुतः दांतों में कीड़ा बैक्टीरिया की वजह से ही लगता है। जब किसी भी प्रकार का खाद्य दांतों पर चिपका रह जाता है। तो उस पर जीवाणुओं की क्रिया होती है। परिणामस्वरूप कीड़ा लगने की शुरुआत हो जाती है। बेहतर होगा कि दांतों में चिपकने वाली चीजों (बिस्कुट, ब्रेड, चॉकलेट, मिठाई आदि) का सेवन कम से कम किया जाए।

● अनिद्रा की बीमारी क्यों लगती है?

स्वस्थ जीवन के लिए नींद भी अत्यंत आवश्यक है। किंतु, जब किन्हीं कारणों से नींद में बाधा पड़ती है तो नींद उचट जाती है। अनिद्रा कई कारणों से होती है। कुछ औषधियों एवं पेय पदार्थों के सेवन से भी नींद उचट जाती है। जैसे – चाय, कॉफी, उत्तेजक दवाएं आदि। यदि किसी कारणवश रात को नींद पूरी नहीं होती है तो दिन में उसकी पूर्ति कर लेनी चाहिए।

● फूल गोभी जोड़ों के दर्द में गुणकारी क्यों मानी जाती है?

हरी सब्जियां कंपाउंड सल्फोराफेन कैमिकल की धनी होती हैं। फूलगोभी में यह कैमिकल बहुतायत से पाया जाता है। जिससे हड्डियों एवं जोड़ों के दर्द में राहत मिलती है। अर्थराइटिस रोग के लिए लाभकारी इस फूल गोभी में उपस्थित सल्फोराफेन कैमिकल उपास्थि के विनाश को धीमा करता है और जोड़ों व गठिया रोग में लाभ पहुंचाता है।

-785-8 अशोक विहार, गुरुग्राम (हरियाणा)
मो- 9210456666

निबंध प्रतियोगिता – 32

निबंध प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे निःशुल्क भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता के तहत 'फास्ट फूड और मैं' विषय पर लगभग 250 शब्दों का निबंध लिखकर भेजना है। चयनित निबंध को बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। निबंध के साथ नाम/पता/कक्षा/स्कूल व घर का पूरा पता तथा टेलीफोन न. अवश्य लिखें। निबंध संपादक बालप्रहरी अल्मोड़ा, उत्तराखंड-263601 के पते पर दिनांक 15 अक्टूबर, 2019 तक भेजें। निबंध प्रतियोगिता-31 में निम्न निबंध चयनित हुआ है। इन्हें उपहार में पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं। - संपादक

परीक्षा के लिए मेरी तैयारी

जो लोग अपना रोज का काम करते हैं। स्कूल में बताए हुए पाठ को अच्छे ढंग से समझ लेते हैं। उन्हें परीक्षा के लिए कोई अलग से तैयारी नहीं करनी होती है।

आजकल तो यों समझिए रोज ही परीक्षा होती है। हमारे स्कूल में तो रोज कुछ न कुछ याद करने के लिए दिया जाता है। अब तो लगभग सभी स्कूलों में मासिक परीक्षाएं हो रही हैं। मुझे लगता है कि अब परीक्षा के लिए अलग से तैयारी करने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी परीक्षा तो परीक्षा ही होती है। उसके लिए कुछ न कुछ तैयारी करनी ही होती है।

मैं तो परीक्षा की तैयारी करते समय एक बार जहां तक हमारा कोर्स बताया जा चुका है। वहां तक के पाठ को कई बार दोहराती हूं। उसमें से जो नहीं आए तो उसे स्कूल में सर या मैडम से दोबारा पूछती हूं। अपनी माता जी से भी सवाल दोहरा लेती हूं। कभी-कभी सर या मैडम द्वारा इंपोर्टेंट बताए जाते हैं तो उनको भी दोहरा लेती हूं। लेकिन यह जरूरी नहीं है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि परीक्षा में ऐसा पेपर आता है जो हमारी समझ में नहीं आता है। जवाब तो वे हमारी पुस्तक के ही होते हैं। परंतु उसे ऐसे अंदाज में पूछा जाता है कि हम उत्तर देने के लिए तैयार नहीं हो पाते हैं। यानी उसका उत्तर कैसे लिखा जाए। ये हमारी समझ में नहीं आता है। ऐसे में हमें सोचना भी पड़ता है। परीक्षा की तैयारी के लिए जो मैं करती हूं वह यह कि मैं अपने बॉक्स में पैन, पेंसिल आदि को एक बार जरूर देख लेती हूं। परीक्षा के समय कई बच्चे दूसरे से पैन आदि मांगते हैं। इस मामले में मैं पहले से अपनी तैयारी कर लेती हूं।

उपासना तिवारी, कक्षा 7
विवेकानंद इंटर कालेज रानीधारा,अल्मोड़ा

(इनके अतिरिक्त स्नेहा निषाद (कानपुर), अंजली गर्ग (उदयपुर), प्रियंका डंगवाल (पौड़ी), शिखा गुप्ता (अहमदाबाद) सना मलिक (देहरादून) हिमानी बेलवाल (रामनगर), प्रियांशु शर्मा (गाजियाबाद), अंजली कश्यप (पटियाला), दीप्ती जोशी (बागेश्वर) का निबंध भी प्रशंसनीय था। -संपादक

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा
अल्मोड़ा नगर की जनता से विनम्र अनुरोध है कि अल्मोड़ा नगर को साफ और सुंदर बनाए रखने में सहयोग प्रदान करें।
कृपया निम्न बातों पर ध्यान दें।
1.पॉलीथीन कैरी बैग एवं डिस्पोजल आइटम्स का कोई प्रयोग न करें। पकड़े जाने पर रुपए 5,000/- तक जुर्माना वसूला जाएगा। 2.कूड़ा कलेक्शन निश्चित स्थानों पर ही डालें तथा सूखा व गीले कूड़े के लिए अलग-अलग डस्टबिन रखें। 3.कूड़ा कदापि न जलाएं। 4.सार्वजनिक मार्गों में कदापि न थूकें। सार्वजनिक मार्ग पर थूकना उत्तराखंड कूड़ा फेंकना एवं थूकना प्रतिषेध अधिनियम 2016 के अन्तर्गत दंडनीय है। 5.सार्वजनिक मार्गों पर कूड़ा न फेंकें। कूड़ा फेंकते हुए पाए जाने पर जुर्माना वसूला जाएगा। 6.अपने पालतू कुत्तों को पालिका के सार्वजनिक मार्गों पर कदापि शौच न कराएं तथा उनका पालिका से लाइसेंस अवश्य बनवा लें। 7.पालिका करों का समय से भुगतान करें। 8.शहर में अपने जानवरों को आवारा न छोड़ें। 9.बाजार मार्गों, गलियों व मुहल्लों एवं नालों व नालियों के ऊपर कहीं भी अतिक्रमण न करें। 10.मुख्य बाजार में प्रातः 8.00 बजे से सायं 8.00 बजे तक दुपहिया वाहनों का प्रयोग पूर्णतया वर्जित है।
स्वच्छ अल्मोड़ा सुंदर अल्मोड़ा

(श्याम सुंदर प्रसाद)
अधिशासी अधिकारी
नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा

(प्रकाशचंद्र जोशी)
अध्यक्ष
नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा

सभासदगण
(1)श्रीमती दीपा साह, मेलाखोला वार्ड, (2)श्रीमती तरन्नुम जी रामशिला वार्ड, (3) श्री मनोज जोशी,बद्रेश्वर वार्ड, (4)श्री सौरभ वर्मा धारानौला वार्ड, (5) श्री विनय पांडे, त्रिपुरासुंदरी वार्ड (6) श्री अमित साह, लक्ष्मेश्वर वार्ड, (7) श्रीमती दीप्ती सोनकर, मुरली मनोहर वार्ड, (8)श्री जगमोहन बिष्ट, चालेश्वर वार्ड (9)श्री हेमचंद्र तिवारी, विवेकानंदपुरी वार्ड (10)श्री सचिन आर्या, राजपुर वार्ड, (11) श्री राजेंद्र तिवारी नंदादेवी वार्ड (12)श्रीमती रेखा अधिकारी, रैलापानी वार्ड (13) श्रीमती आशा रावत, दुगालखोला वार्ड एवं समस्त कर्मचारीगण, नगरपालिका परिषद अल्मोड़ा

दौड़

आओ हम सब दौड़ लगाएं,
मंजिल अपनी छूकर आएं।
मंजिल तक सबको जाना है,
अपने लक्ष्य को पाना है।
हर समय तैयार रहो,
हम दौड़ेंगे सब कहो।
कभी न हिम्मत हारो तुम,
मिल कर सब चलेंगे हम।

- विद्या निषाद, कक्षा 8
शा.क.उ.मा.वि.महासमुंद,छत्तीसगढ़

(इसके अतिरिक्त शिखा शर्मा (प्रतापगढ़), हिमांशी रावत (रामनगर), शीतल चौहान (देहरादून), मैनसी पगाई (ओखलकांडा), मोहित राणा (खटीमा), अंजु श्रीवास्तव (जबलपुर), किरीता गौतम (दिल्ली) की कविताएं भी प्रशंसनीय थीं। - संपादक

कविता लिखो प्रतियोगिता-61

दाएं बने चित्र को ध्यान से देखो। चित्र को देखकर-विचारकर तुम्हें 8 पंक्ति की स्वरचित कविता 15 जुलाई, अक्टूबर, 2019 तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड 263601 के पते पर भेजनी है। प्रतियोगिता में 14 वर्ष तक के बच्चे नि:शुल्क प्रतिभाग कर सकते हैं। कविता के नीचे अपना नाम, पता तथा उम्र तथा फोन नंबर लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कविता को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा। ग्रामीण समाज कल्याण समिति (ग्राम) तल्ला चौनाखान, अल्मोड़ा के सौजन्य से 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जाएंगी। कविता लिखो प्रतियोगिता-60 में यहां दी गई कविता चयन की गई है। इन्हें पुस्तकें/पत्रिकाएं उपहार में भेजी जा रही हैं।

सुडोकू

सुडोकू 9×9 यानी 81 खानों का वर्ग है। यह 3×3 खानों के 9 छोटे खानों में बंटा होता है। पहेली सुलझाने के लिए खाली स्थान पर 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। ध्यान रखें आड़ी या खड़ी लाईन में एक संख्या केवल एक ही बार आए।

		6	2	8				
							1	
7				1		9		2
6			8			2		
8	1						3	7
		5			9			6
4		2		3				8
	5							
				2	6	4		

समाज कल्याण विभाग

अल्मोड़ा

की ओर से सभी प्रदेशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

समाज कल्याण विभाग द्वारा वृद्धावस्था, विधवा, किसान एवं दिव्यांग पेंशनर्स जिनके द्वारा अभी तक पी. पी. एस. बैंक में खाता न खोलकर खाता संख्या इस कार्यालय को उपलब्ध नहीं कराया है, को सूचित किया जाता है कि तत्काल अपना पी.ओ.एस.बैंक में खाता खोलकर खाता संख्या एवं आधार कार्ड की प्रति अपने विकास खंड के सहायक समाज कल्याण अधिकारी अथवा इस कार्यालय को उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें।

(राजीव नयन)
जिला समाज कल्याण अधिकारी
अल्मोड़ा

चुटकुले

चुनाव के दिनों की बात है। सोनू ने मोनू को कमल का एक फूल दिया। मोनू ने उसे थप्पड़ मार दिया।

सोनू – तुमने क्यों मारा? मैं भाजपा का प्रचार कर रहा था।

मोनू – मैं भी कांग्रेस का प्रचार कर रहा था।

गोपू – भोलू! क्या तुम कभी मंदिर नहीं जाते हो?

भोलू – क्यों नहीं? मेरा जूता पुराना हो जाता है। तब जाता हूं।

मां – (बच्चे से) मैं बाजार जा रही हूं। कोई पूछे तो कहना कि मेरी मां पापा के साथ बाजार गई है। थोड़ी देर में पिताजी पहुंच गए।

पिताजी – तुम्हारी मां कहां गई है?

बच्चा– वह तो पिताजी के साथ बाजार घूमने गई है।

दीनानाथ – यार! ये बताओ, आज नेताजी का चेहरा कुछ लटका-लटका सा लग रहा था न?

बद्रीदत्त – अरे क्यों नहीं? बेचारे के गले में केवल एक माला पड़ी। जबकि उसने पांच माला के लिए पैसे दिए थे

एक लड़का अल्मोड़ा में नंदादेवी मंदिर में प्रार्थना कर रहा था कि हे भगवान! उत्तराखंड की राजधानी अल्मोड़ा में बना दो।

पुजारी–बच्चे! अल्मोड़ा राजधानी बनने से तुम्हें क्या लाभ होगा?

बच्चा– पुजारी जी! दरअसल बात यह है कि मैं परीक्षा में उत्तराखंड की राजधानी अल्मोड़ा लिखकर आया हूं।

पहला बच्चा – तुम्हारे सारे दांत कैसे टूट गए?

दूसरा बच्चा – अरे! हंसने के कारण टूटे हैं मेरे दांत

पहला बच्चा – यह कैसे?

पहला बच्चा – अरे! कल मैं एक पहलवान को देखकर हंस पड़ा था, उसने ही ये हाल किए हैं।

भोलू– ऐसी चीज कौन सी है जो फ्रिज में भी गरम ही रहती है।

सोनू – गरम मसाला।

- कंचन सिरस्वाल, कक्षा 10 गोपेश्वर, चमोली
- तनु, कक्षा 8, राजकीय बालिका इंटर कालेज देहरादून
- तरुणसिंह नेगी, कक्षा 8 महर्षि विद्या मंदिर अल्मोड़ा
- खुशी जोशी, कक्षा 8 ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल अल्मोड़ा
- मनदीप, कक्षा 5, रा.उ.प्रा.वि. उंद्राखाल, पौड़ी

शुभचिंतकों से

- बालप्रहरी केवल एक पत्रिका ही नहीं बच्चों के मन में वैज्ञानिक सोच जाग्रत करने, उन्हें साहित्यिक मंच प्रदान करने तथा रचनात्मक कार्यों व पठन-पाठन की संस्कृति से जोड़ने का एक सामूहिक प्रयास भी है।
- बालप्रहरी के लिए रचनाएं भिजवाकर सहयोग करें। पारिवारिक व परिचित बच्चों को बालप्रहरी के लिए रचनाएं लिखने के लिए प्रेरित कीजिएगा। एक कागज पर एक ही रचना लिखी हो।
- बार-बार शुल्क भेजने की परेशानी से बचने के लिए आजीवन सदस्यता भिजवाएं। धनराशि पंजाब नेशनल बैंक अल्मोड़ा स्थित बालप्रहरी के खाता सं. 0862000101357002(IFSC Code : PUNB 0086200)में सीधे भी जमा की जा सकती है। धनराशि बैंक में जमा करने पर कृपया सूचना एस.एम.एस./पोस्टकार्ड या पत्र से देकर सहयोग करें।
- बालप्रहरी के लिए शुल्क/ मनीआर्डर व रचना भेजते समय अपना नाम, पूरा पता एवं फोन नं. अवश्य भेजें। पता बदलने तथा पत्रिका नियमित नहीं मिलने पर पोस्ट कार्ड/पत्र/एस.एम.एस. से सूचित करें।

बालप्रहरी को बालोपयोगी बनाने के लिए आप सबसे सहयोग एवं मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

– संपादक

बालप्रहरी

(बच्चों की त्रैमासिक पत्रिका)

संपादकीय कार्यालय

दरबारीनगर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड – 263601

मो.-9412162950

सदस्यता फार्म

मैं 'बालप्रहरी' की संरक्षक सदस्यता 5000/–, आजीवन सदस्यता 2,000/–, 3 वर्ष का शुल्क 300/–रु. मनीआर्डर / ड्राफ्ट/चैक सं0 .... दिनांक ....द्वारा भेज रहा/रही हूं। कृपया मुझे पत्रिका की प्रति नियमित रूप से डाक से भिजवाएं।

नाम ....

पता ....

....

....

..............................पिन..................

मोबाइल/ फोन ....

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-61

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर नीचे कूपन में गोला भरकर 15 अक्टूबर, 2019 तक संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा-263601 उत्तराखंड के पते पर (कूपन काटकर) भेजना है। प्रतियोगिता में 14 साल तक के बच्चे भाग ले सकते हैं। अधिक बच्चों के सही उत्तर होने पर ड्रा से नाम निकाला जाएगा। सर्वोत्तम आने वाले बच्चे का नाम पत्रिका में छपा जाएगा। उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी जाएंगी। सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता-60 में कु. वैशाली गुप्ता, कक्षा 8 [illegible] चंडीगढ़ का चयन किया गया है। इन्हें पुरस्कार में पुस्तकें/पत्रिकाएं भेजी गई हैं।

1. भारत के राष्ट्रीय ध्वज के चक्र में तीलियां होती हैं?
   (a) 3 (b) 24
   (c) 22 (d) 26
2. बारकोड का आविष्कार किसने किया ?
   (a) जुकरबर्ग (b) नार्मन जोसेफ वुडलैंड
   (c) मारकोनी (d) डार्विन
3. विश्व पुस्तक दिवस कब मनाया जाता है?
   (a) 8 सितंबर (b) 23 अप्रैल
   (c) 1975 14 नवंबर (d) 7 मार्च
4. टोकियो किस देश की राजधानी है?
   (a) चीन (b) रूस
   (c) जापान (d) भूटान
5. सुभाष चंद्र बोस का जन्म दिन कब मनाया जाता है,
   (a) 23 अप्रैल (b) 12 जनवरी
   (c) 23 जनवरी (d) 11 जनवरी

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता–60 का सही उत्तर

1- (c), 2- (c), 3- (b), 4- (b), 5- (b)

बालप्रहरी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता–61

नाम : .... कक्षा ....

पता : ....

....

फोन (कोड सहित)........................ मो. ....

		(a)	(b)	(c)	(d)
प्र.सं.	1	O	O	O	O
	2	O	O	O	O
	3	O	O	O	O
	4	O	O	O	O
	5	O	O	O	O

नोट : सही उत्तर वाले गोले को पेंसिल या काले पेन से प्रकार ● काला करना है।

क्या आप जानते हैं?

● महेंद्रप्रताप पांडेय 'नंद'

"स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूंगा।" का नारा देने वाले स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक बाल गंगाधर तिलक का जन्म 23 जुलाई, 1856 को हुआ था। भारत में पूर्ण स्वराज की मांग उठाने वाले गंगाधर तिलक जी पहले नेता थे। 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, और मैं इसे लेकर रहूंगा' उनका ये उद्घोष बहुत लोकप्रिय हुआ। उनके समर्पण के कारण लोग उन्हें लोकमान्य के संबोधन से बुलाने लगे।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की क्रांतिकारी गतिविधियों से अंगरेज बहुत परेशान हो गए। अंगरेजों ने उन पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया। उन्हें 6 वर्ष तक देश निकाला करते हुए बर्मा की मांडले जेल में रखा गया। वहां उन्होंने गीता का अध्ययन किया। गीता रहस्य नामक पुस्तक भी लिखी। एक अगस्त,1920 को मुंबई में उनका देहांत हो गया।

उनके बचपन की एक घटना है। वह मुंबई के एलिफिन्स्टन कालेज में पढ़ते थे। वहां के गणित के प्रोफेसर कई बार बच्चों के सवालों का जवाब नहीं दे पाते थे। सवाल का जवाब बाद में देने का आश्वासन दे देते थे। एक बार सवाल का जवाब बाद में देने का आश्वासन देकर वे क्लास से चले गए। प्रोफेसर के जाने के बाद मध्याह्न अवकाश में तिलक ने क्लास के ब्लैक बोर्ड में वह सवाल हल कर दिया। कहने का आशय गणित में उनकी अच्छी पकड़ थी।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक बारह वर्ष के ही थे। बचपन से ही वे कई पत्रिकाओं को पढ़ते। उनके पिता नहीं चाहते थे कि वे स्कूल से बाहर की पत्रिकाएं पढ़ें। उन्होंने एक पत्रिका पढ़ने के लिए अपने पिताजी से कहा। पिताजी ने उनकी बात को टालते हुए गणित का एक कठिन सवाल उन्हें हल करने को दिया। कहा कि इस सवाल का हल करने के बाद तुम्हें वह पत्रिका दी जाएगी। गंगाधर ने थोड़ी ही देर में गणित का सवाल हल कर दिया। उनके पिताजी को वह पत्रिका उन्हें देनी पड़ी।

एक बार उनके क्लास में कुछ बच्चों ने मूंगफली खाकर छिलके क्लास रूम में बिखेर दिए। क्लास रूम गंदा हो गया। शिक्षक ने पूछा तो किसी ने नहीं बताया। शिक्षक ने सारे बच्चों के हाथ में डंडे से मारा। तिलक ने कहा जब मैंने गंदगी की ही नहीं तो मैं दंड का भागी क्यों बनूं। शिक्षक ने इसे आदेश का अवहेलना माना। उनके पिता को बुलाया गया। पिता ने कहा मैंने अपने बेटे को पैसे ही नहीं दिए हैं। वह बाजार की चीजें ही नहीं खाता। शिक्षक को मानना पड़ा। कहने का तात्पर्य है कि तिलक बचपन से ही निडर थे।

सहोंगा, अलीगढ़?

कहानी लिखो प्रतियोगिता – 61

दाएं बने चित्र को देखकर 14 वर्ष तक के बच्चे एक कहानी बनाकर संपादक बालप्रहरी, अल्मोड़ा उत्तराखंड- 263601 के पते पर 15 अक्टूबर, 2019 तक भेज कर प्रतियोगिता में नि:शुल्क भाग ले सकते हैं। कहानी के नीचे अपना नाम व पता तथा उम्र लिखकर हस्ताक्षर करने हैं। सबसे अच्छी कहानी को बालप्रहरी में प्रकाशित किया जाएगा तथा उपहार में 200 रुपए की पुस्तकें भारत ज्ञान विज्ञान समिति अल्मोड़ा के सौजन्य से भेजी जाएंगी। कहानी लिखो प्रतियोगिता-60 के लिए निम्न कहानी का चयन किया गया। इन्हें पुरस्कार में पुस्तकें / पत्रिकाएं भेजी जा रही हैं।

जो देगा उसका भला

सरोजनीनगर के पास सपेरों की बस्ती में था बुधनाथ का घर। बुधनाथ के तीन और भाई थे। वे भी स्थान-स्थान पर सांप को पिटारे में रखकर सांप व नाग के नाम पर पैसा कमाते थे। बुधनाथ ने सांप के बजाय बंदर पालकर अपना धंधा प्रारंभ करने की योजना बनाई।

उसका असली नाम था बुधनाथ। पर सब लोग उसे धन्नू मदारी के नाम से जानते थे। धन्नू मदारी दिन भर करतब दिखाता। ऊंची-ऊंची आवाज में लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता। तब जाकर लोग उसका खेल देखने आते। तब उसकी तथा उसके परिवार की शाम की रोटी का जुगाड़ होता।

दरअसल धन्नू मदारी के पास एक बंदरिया थी। वह उसे धन्नू कहकर पुकारता था। इस कारण मदारी का नाम ही धन्नू मदारी प्रचलित हो गया। धन्नू को उसने नाच करना, दौड़ना आदि कई करतब सिखाए थे। बंदरिया कभी मदारी के गाल को चूमती तो कभी लोगों को हाथ जोड़कर बैठने को कहती।

मदारी कभी बंदरिया को चुन्नी ओढ़ाकर नाच कराता तो कभी दौड़ लगाने या दूसरे करतब करवाता।

रूमाल से दियासलाई की तिल्ली तोड़ने, दो कटी डोरियों को एक करने, भरी सभा में किसी प्रतिष्ठित दुकान की मिठाई का स्वाद चखाने जैसी गतिविधियां करता। वह कहता कि ये कोई जादू नहीं है ये हाथ की सफाई है। इसी हाथ की सफाई के नाम पर सबसे कुछ ईनाम चाहता हूं।

''बाबू जी! मेरे लिए न सही, इस बंदरिया के नाम से तो कुछ दे दो। पेट का सवाल है। मेरी कोई नौकरी नहीं है। बस यही मेरा रोजगार है। इसी से परिवार का पेट पालता हूं। हनुमान जी तुम्हारी कमाई में बरकत करेंगे। हनुमान जी के नाम पर कुछ तो दे दो।''

धन्नू मदारी के बंदर का करतब देखने को बहुत भीड़ जमा हो जाती। पर जब धन्नू मदारी पैसे देने की बात करता तो भीड़ से अधिक लोग निकल लेते।

धन्नू मदारी कहता, ''मेहरबान ! मैं कोई भीख नहीं मांग रहा हूं। हाथ की सफाई यानी अपनी मेहनत का ईनाम चाहता हूं। जो देगा उसका भला, जो नहीं देगा, उसका भला।''

— बलवंत भदौरिया, कक्षा 9
सुभाषचंद्र बो. शि.नि.फर्रुखाबाद,उ.प्र.

(इसके अतिरिक्त हिमांशु जोशी (हल्द्वानी), चांदनी मौर्य (जयपुर), अखिलेश साह (गोपेश्वर), दिव्या गौतम (कन्नौज), कामिनी चौरसिया (कानपुर), कविता भरतोला (स्याल्दे), आरती भोज (खूंट), माया सक्सेना (खटीमा), विवेक ज्ञानी (देहरादून), आरती भोज (खूंट), वंदना (इलाहाबाद), सोनू गुप्ता (पीलीभीत), प्रियंका मुखर्जी (नैनीताल) की कहानी भी प्रशंसनीय रही।) - संपादक

अंकों से बनाओ चित्र

● चाँद मोहम्मद घोसी
– गणेश बाजार, नैनवा सिटी (राजस्थान)

अनमोल वचन

- पुत्र के प्रति पिता का यही कर्तव्य है कि वह उसे सभा की पहली पंक्ति में बैठने लायक बना दे। - तिरुवल्लुवर
- जो भी मनुष्य मुझे मिलता है, वह किसी न किसी रीति से मुझसे श्रेष्ठ होता है। - इमर्सन
- *बुद्धिमान को स्वेच्छा से सही मार्ग पर चलना चाहिए। विवश होकर किसी बात को मानना मोहग्रस्त मूढ़ लोगों का काम है।* - हजारीप्रसाद द्विवेदी
- *अपना मत उस व्यक्ति को दो जो सबसे कम वायदे करता है। उससे आपको कम निराशा होगी।* - बर्नार्ड शॉ

संकलन- जी.आर.एस.राघव भाई, 28 प्रधानमंत्री सचिवालय अपार्टमेंट, विकासपुरी, नई दिल्ली - 11 00 28

पहेलियां

● हेमा बिष्ट, खुर्पाताल, नैनीताल

1. रहूं पेड़ में पंछी नहीं, जटा-जूट पर साधु नहीं,
बाहर बाल है अंदर लाल, देखो बच्चों इसका हाल।
2. धरती रखूं मैं हरी-भरी, बात करूं मैं खरी-खरी,
न आऊं तो हाय-हाय करते, आ जाऊं सब थर-थर करते।
3. छोटे-छोटे दाने हैं मेरे, लाल-लाल है खोल,
खाते ही रोना आ जाए, सोचकर, नाम इसका बोल।
4. दिन भर लटका रहता हूं, नहीं मुझे थोड़ा आराम,
हर घर की रखवाली करता बूझो बच्चो मेरा नाम।

[illegible]

बालप्रहरी - वर्ग पहेली - 19 (उत्तर इसी अंक में)

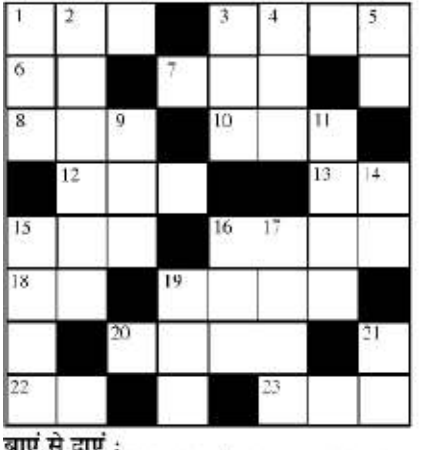

1	2		■	3	4		5
6		■	7			■	
8		9	■	10		11	■
■	12			■	■	13	14
15			■	16	17		
18		■	19				■
	■	20				■	21
22		■		■	23		

बाएं से दाएं :

1. हिंदुकुश पर्वत के दर्रे... और बोलन जिसमें से विदेशी भारत में आए (3)
2. इस प्रदेश की राजधानी जयपुर है (4)
6. हुकूमत; शासन (2)
7. भव्य भवन जिसमें शाही परिवार रहता है (3)
8. लहर; उमंग (3)
10. त्यागना; छोड़ना (3)
12. आकाश; नभ। (3)
13. मूर्ख समझा जाने वाला/बोझा ढोने वाला पशु (2)
15. भीलनी जिसने राम को जूठे बेर खिलाए (3)
16. उत्तर प्रदेश के गंगातट पर बसा औद्योगिक नगर (4)
18. पैंदा; भरी कढ़ाई में सिके पूरी कचौरी आदि (2)
19. गवर्नमेंट; देश का शासन करने वाला व्यक्ति समूह (4)
20. वस्त्र बुनने वाला (4)
22. संसार; भव; दुनिया (2)
23. रंगमंच पर कलाकारों द्वारा खेला जाता है (3)

ऊपर से नीचे :

1. दान (3)
2. हनुमान जी; पवनपुत्र (6)
3. मदद; सहायता; आराम (3)
4. पानी में उत्पन्न कमल; नीरज (3)
5. सरिता (2)
9. छोटी धातु की मटकी (3)
11. संतरों के लिए प्रसिद्ध नगर (4)
14. तरल पदार्थ का धारा में बहना (2)
15. खेल जिसमें हाथी, घोड़े, ऊंट पैदल आदि होते हैं (4)
16. करने वाला; व्याकरण में कर्ता कर्म संप्रदान आदि (3)
17. स्वीकार न करना (4)
19. जिसे धुन सवार हो; जिसे सनक सवार हो (3)
21. संदेह (2)

- प्रस्तुति:
सुधा जौहरी, ए-2 विजय पथ, तिलकनगर, जयपुर (राजस्थान)

सोने का पेड़

बाल कविता संग्रह में 55 बाल कविताएं आकर्षक चित्रों के साथ दी गई हैं। कविताएं जहां बच्चों के मन को गुदगुदाएंगी वहीं उन्हें प्रकृति एवं समसामयिक विषयों से भी जोड़ेंगी। बच्चों को मानवीय मूल्यों एवं सामाजिक सरोकारों से जोड़ने में भी रचनाएं सक्षम हैं। बच्चे इन कविताओं को गुनगुनाएंगे एवं इनका आनंद लेंगे।

पृष्ठ संख्या : 120 मूल्य- 200/- रुपए

रचनाकार : शशि सक्सेना

संपर्क : 6 ख-23, जवाहरनगर, जयपुर (राजस्थान)

नानी का घर

बाल कहानी संग्रह में 40 बाल कहानियां संग्रहीत हैं। कहानियां बाल मनोविज्ञान पर खरी उतरती हैं। छोटी-छोटी कहानियां जहां बच्चों को आनंद प्रदान करेंगी वहीं उन्हें कुछ सोचने-समझने के लिए भी प्रोत्साहित करेंगी। कहानियों के साथ चित्रों का समावेश हो जाता तो पुस्तक और आकर्षक बन जाती। मुखपृष्ठ बहुत लुभावना तथा आकर्षक है।

पृष्ठ संख्या : 192 मूल्य- 400/- रुपए

रचनाकार : प्रकाश मनु

प्रकाशक : ज्ञान गंगा, 205 सी, चावड़ी बाजार, दिल्ली- 110006

56 रोटियां

बाल कथा संग्रह में 11 कहानियां दी गई हैं। संग्रह की पहली कहानी के नाम पर ही पुस्तक का शीर्षक रखा गया है। कहानियां बच्चों में रचनात्मकता एवं सामाजिकता का भाव जाग्रत करती हैं। पुस्तक में चित्र भी दिए गए हैं।

पृष्ठ संख्या : 64 मूल्य- 90/- रुपए

रचनाकार : तरुणकुमार दाधीच

संपर्क : अनुपम, 36 सर्वऋतु विलास, मेन रोड, उदयपुर,राजस्थान

गौरैया ने घर बनाया

बाल गीत संग्रह में 27 रचनाएं संकलित हैं। तितली, आम, चंदा, घंटी, रेल, मेंढक जैसे विषय पर बाल मनोविज्ञान पर आधारित रचनाएं बच्चों को खूब भाएंगी। रचनाएं बच्चों को मनोरंजन के साथ ही काफी सीख देती हैं। चित्रों ने पुस्तक को आकर्षक बनाया है। मुखपृष्ठ भी अच्छा है।

पृष्ठ संख्या : 76 मूल्य- 100/-रुपए

रचनाकार : जयसिंह आशावत

संपर्क : नैनवां, बूंदी, राजस्थान - 323801

समझो मम्मा

बाल कविता संग्रह में बाल मनोविज्ञान पर आधारित 24 कविताएं संग्रहीत हैं। कविताएं जहां बच्चों को प्रकृति से जोड़ती हैं। वहीं दीवाली व कूड़ा जैसे सम सामयिक विषयों से भी बच्चे जुड़ते हैं। बहुत ही आकर्षक चित्र पुस्तक में दिए गए हैं। बच्चे चित्रों के माध्यम से पुस्तक की ओर आकर्षित होंगे, ऐसा हमारा मानना है। रंगीन मुखपृष्ठ भी बेहद सुंदर व आकर्षक है।

पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य 60 रुपए

रचनाकार - पवन पहाड़िया

संपर्क : नेम प्रकाशन, आयुर्वेदिक अस्पताल के पास, डेह,नागौर,राज.

धरती पर नन्हा संसार

बाल कविता संग्रह में 23 बाल कविताएं दी गई हैं। कविताएं बच्चों को मानवीय मूल्यों तथा सामाजिक सरोकारों से जोड़ती हैं। कविताओं के माध्यम से बच्चों को प्रकृति से भी जोड़ने का अच्छा प्रयास है। चित्रों से पुस्तक को आकर्षक बनाने का प्रयास रहा है। बच्चे मनोरंजन के साथ ही काफी कुछ इन कविताओं से सीखेंगे।

पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य- 80/- रुपए

रचनाकार : रजनी सिंह

प्रकाशक : रजनी प्रकाशन, रजनी विला, डिबाई, बुलंदशहर, उ.प्र.

आत्मदान का उपहार

कहानी संग्रह में आस्था का मजहब, आत्मदान का उपहार, उस पार तथा आंगन का एक टुकड़ा चार कहानियां दी गई हैं। आकर्षक साज-सज्जा के साथ चित्रों ने इस पुस्तक को बहुत ही सुंदर बना दिया है। आपसी भाईचारा, देशप्रेम व सद्भाव जाग्रत करने के लिए पुस्तक बहुत ही उपयोगी है। रंगीन मुखपृष्ठ भी बच्चों को आकर्षित करेगा।

पृष्ठ संख्या : 24 मूल्य- 70/- रुपए

रचनाकार : करुणाश्री

संपर्क : एफ के कॉम्प्लेक्स, 220 गज कृपा कॉम्प्लेक्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर, राजस्थान

हिप हिप हुर्रे हो

बाल कविता संग्रह में 23 कविताएं संकलित हैं। मुखपृष्ठ रंगीन है। अंदर के पृष्ठों पर कविता के साथ चित्र दिए गए हैं। मोर, सर्कस, कछुआ, पतंग आदि कविताएं बच्चों के मनोविज्ञान को समझते हुए दी गई हैं। कविताएं बातों ही बातों में काफी कुछ कह जाती हैं।

पृष्ठ संख्या : 36 मूल्य 75/- रुपए

रचनाकार : अनिल अग्रवाल

संपर्क : बी. एम.- 106, मैहकबाद, भोपाल, म.प्र. - 462023

समीक्षक :
रतनसिंह किरमोलिया :
मो.7534987179

गढ़वाली कविता :

राष्ट्रपिता

● ललित केशवान

सत्य अहिंसा वलो पुजारी,
एक लंगोटी वलो छयो।
संत छयो व महंत छयो,
पर नौ न मातमा गांधी छयो।
अंगरेजू का शासन खेन,
बैठ बैठी हिलै द्याई।
हमथै थमैगी आजादी,
अफ लाठी लेकी चलि ग्याई।
त्यागे जैन राजनीति,
और राजमुकुट भी ठुकराई।
जन जन का मंदिर मा,
छवि राष्ट्रपिता की बणि ग्याई।

- 196 गली 7, मंडावली, मिंडावली, दिल्ली-110092

मोबाइल 9211673020

कुमाउनी कविता :

ढोक

● दिनेश भट्ट

हिमाला का उच्च शिखरों में,
सूर्ज के किरणों ल ढोक दी।
ह्यूं की सफेद चादर में,
सुनू की पिंगल पट्ट फिचाली दी।
समुंदर बटी मांगि ल्याओ, बादल ल्याया चार,
धर्तिक आंचल में छड़कि दिया ल्याया चार।
खेत में सितिया बी का दाना, उठि ग्या
हरिया कामोलो, खेतपन् फैला दी
घाम की ताप् लागि, धाड़ों कि चौंबाट पड़ि।
किरमुलि की बर्यात, धुति-धाना लागि
मौनों की भौनाट हैगे, प्यूरा का बोटपन्
प्यूलीं-बुरांसीं ले धर्ति सारि सजै दी।

न्यू सैरा, निकट नौला, जीआईसी रोड, पिथौरागढ़

मोबाइल - 9568524189

पहाड़ा ननां हाल-चाल

मितुरो,

गरमी में पहाड़ा उच्च डर्ना स्कूलों में छुट्टी निछी। येति जाड़ों में स्कूल बंद रुनी। निच्च डान कना स्कूलों में गरमी छुट्टी छी। येति जाड़ों में केवल दस दिना छुट्टी हुनी।

आज गौं पना स्कूलों में लै नना कैं खूब होम वर्क मिलण री। क्वे-क्वे नान तो स्कूलक होम वर्क देखि परेशान छन। उनर मन न तो खेल करण में छु न कैं घुमण जाणा मन छु। होम वर्कोक "बहुत दबाव नना लिजी हैगो। क्वे-क्वे तो होमवर्क कैं पुर करि बै खूब मस्ती करण रछी।

पहाड़ पन य बीच चौमास में ककाड़ बहुत है रयीं। गौं पनां स्कूली नान ककाड़ चोरण में फर्स्ट छन। गौं पना बुड़ बाड़ि गाई लै दीकने छन। पहाड़ाक घरौं पन आज भौत दाड़िम, मिहो, नाशपति खणौं बहार हैं। किल्मोड़ और घिंघारू बुंज लै लाल है रयीं। घिंघारू लै आज भौत खूबै हैरी।

पहाड़ा स्कूल में पढ़ाई आज भौत ठीक चलि रै। पंदर अगस्त गीत नाच लै नान सिखण रयीं। बांकि फिर लेखुल।

तुमर मितुर,
प. गुसाईंराम आचार्य

पहाड़ के बच्चों के हाल-चाल

दोस्तो,

गरमी में पहाड़ की ऊंची चोटी के स्कूलों में छुट्टी नहीं थी। यहां जाड़ों में स्कूल बंद रहते हैं। नीची पहाड़ियों के स्कूलों में गरमी की छुट्टियां थीं। यहां जाड़ों में केवल दस दिन की छुट्टियां होती हैं।

अब गांव के स्कूलों में भी बच्चों को खूब होम वर्क मिल रहा है। कोई-कोई बच्चे तो स्कूल का होमवर्क देख परेशान हैं। उनका मन न तो खेल में है न कहीं घूमने जाने का मन है। होम वर्क का बहुत दबाव बच्चों के लिए हो गया है। कोई-कोई तो होमवर्क पूरा करके खूब मस्ती कर रहे थे।

पहाड़ में इस बीच बरसात में ककड़ी बहुत हो रही हैं। गांव के स्कूली बच्चे तो ककड़ी चुराने में माहिर हैं। गांव के बूढ़े गाली भी देते हैं। पहाड़ के घरों में आजकल दाड़िम (अनार), मेहल, नाशपति खाने की बहार हो रही है। किल्मोड़ा और घिंघारू की झाड़ियां भी लाल हो रही हैं। घिंघारू भी आजकल खूब हो रहा है।

पहाड़ के स्कूलों में पढ़ाई आजकल ठीक चल रही है। पंद्रह अगस्त के लिए गीत नाच भी बच्चे सीख रहे हैं। बाकी फिर लिखूंगा।

तुम्हारा दोस्त,
प. गुसाईंराम आचार्य

कहानी :

पायल की उड़ान

● संगीता माथुर

''अरे वाह! बहुत खुशी की बात है। एक खुशी की खबर मेरे पास भी है।'' कब से बेटी का इंतजार कर रही राधाबाई जल्द से जल्द अपनी बात बताकर पायल की सहमति ले लेना चाहती थी। ''शाम को शालिनी मैडम ने अपने बेटे के जन्मदिन की पार्टी रखी है। उसके स्कूल के दोस्त और कुछ बड़े लोग भी हैं। शालिनी मैडम ने कहा है वे उनका खाना बनाने के मुझे अतिरिक्त पैसे देंगी और मैं अपनी मदद को एक बाई और ले आऊं। उसे भी वे पूरे पैसे देंगी, तो तू मेरे साथ चलना। सब्जी कटवा देना, पूरियां बेल देना। घर में डबल पैसे आ जाएंगे और फ्री में अच्छा खाना भी मिल जाएगा।'' अपने उत्साह में राधाबाई को ख्याल ही नहीं रहा कि पायल का चेहरा यह सब सुनकर लटक सा गया था।

''मां मेरी परीक्षाएं समीप हैं, मुझे पढ़ने दो, मुझे टॉप करना है।''

''अरे टॉप करके कौन सा पहाड़ उखाड़ लेगी? पराए घर जाकर दाल रोटी ही तो बनानी है।'' राधाबाई उखड़ गई थी। बेटी का पढ़ाई के प्रति अतिशय झुकाव उसे फूटी आंख नहीं सुहाता था। वह तो उसके बापू उसे स्कूल में डाल गए थे। उन्हें बेटी को पढ़ाने का बहुत चाव था। उनके असामयिक निधन के बाद राधाबाई ने कुछ घरों में रसोई बनाने का काम ले लिया था। वह तो बेटी को भी पढ़ाई छुड़ाकर साथ लगाना चाहती थी। पर एक तो मुफ्त कन्या शिक्षा, दूसरा पायल का पढ़ाई के प्रति अतिशय झुकाव देख रुक गई थी।

दो साल में आठवीं कर लेगी। उसके आगे तो वैसे भी गांव में पढ़ाई की व्यवस्था नहीं है। तब अपने साथ काम में लगा लेगी। जल्दी-जल्दी चार पैसे जोड़कर उसका ब्याह भी रचा देगी। अनपढ़ राधाबाई की सोच की सीमा यहीं तक थी। पर पायल की सोच अलग थी। वह पढ़ लिखकर अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती थी। मां का काम छुड़वाना चाहती थी। पर विधवा मां को और दुखी भी नहीं देख सकती थी। इसलिए इच्छा न होते हुए भी उनकी हर बात मान लेती थी।

शालिनी मैडम के घर पहुंचकर जब पायल को पता लगा कि यह तो सहपाठी वैभव की बर्थ डे है, तो संकोच के मारे मुंह छुपाती, बिना किसी को कुछ बताए वह रसोई में घुस गई और मां की आड़ में दुबककर काम करने लगी। काश उसने कपड़े तो बदल लिए होते। रसोई में काम करते इकलौती बाहर की फ्रॉक खराब हो जाएगी, यह सोचकर वह घर की फ्रॉक में ही आ गई थी।

''लाओ, मैं सब बच्चों के लिए गरम-गरम पूरियां ले आती हूं'' कहती हुई धप-धप करती वंदना मेम रसोई में आ धमकी तो पायल की तो सांस ही अटक गई। अपनी सबसे होनहार विद्यार्थी को वहां इस अवस्था में देख पहले तो मेम भी सकपका गई। वैभव की मां से सारी जानकारी जुटाकर अंततः उन्होंने कुछ निर्णय ले लिया।

खाना खत्म हुआ तो वे पायल को हाथ पकड़कर सबके सामने ले आईं। ''आप सब पूछ रहे थे न कि एन.एस.टी.एस.ई. में जिला टॉपर कौन रहा? तो वो ये है, हमारी मेधावी छात्रा पायल। यह न केवल पढ़ाई में अव्वल है, वरन् अत्यंत खुद्दार भी है। इतनी कम उम्र में मां का हाथ बंटाकर, चार पैसे कमाकर घर चलाने में उन्हें पूरा पूरा सहयोग दे रही है।'' डरी सहमी सी पायल ने नजरें उठाईं तो पाया मेम के साथ-साथ उपस्थित सभी बड़ों और बच्चों की आंखों में उसके लिए प्रशंसा और आदर के भाव थे। यही नहीं, उन्होंने उसके लिए तालियां भी बजाईं।

''ये सभी पायल को आगे पढ़ने भेजने के लिए मदद को तत्पर हैं'' मेम ने खुशी-खुशी राधाबाई को बताया तो पाया वह असमंजस की सी स्थिति में थी। ''पर छोरी जात को इतना पढ़ाने से क्या फायदा होगा मैडम जी? ब्याह ही तो करना है?''

"जब यह पढ़ लिखकर बड़ी अफसर बन जाएगी तो इसके लिए अच्छे रिश्ते खुद चलकर आएंगे। तुम्हें ऐसे घर-घर जाकर रसोई नहीं बनानी पड़ेगी। घर का सब हिसाब किताब, लिखा पढ़ी सब ये संभाल लेगी। अभी तो तुम्हें अनपढ़ जानकर कोई भी बेवकूफ बना जाता है। बेटी शिक्षित होगी तो दो घरों का उद्धार हो जाएगा। अपने मायके को तो संभालेगी ही ससुराल को भी संवार देगी। अपने बच्चों को शिक्षित करेगी तो तुम्हारी तो पीढ़ियां तर जाएंगी। शिक्षित लड़की सामाजिक कुरीतियों, महिलाओं पर अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाएगी। नए कानून बनाकर समाज का ढांचा सुधार देगी। तुम्हें अपनी बेटी को अफसर की कुर्सी पर बैठे देखकर गर्व नहीं होगा? मुझे तो अपनी छात्रा पर होगा।" घर लौटने तक मां बेटी की सोच बदल चुकी थी। पायल को समझ आ गया था कि कोई काम छोटा नहीं होता और राधाबाई बेटी को आगे पढ़ाने के साथ-साथ स्वयं भी सांयकालीन प्रौढ़ शिक्षा कक्षा में जाने का मन बना चुकी थी।

बी 11 स्टाफ कॉलोनी,
राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय
कोटा (राजस्थान) - 324010
मोबाइल- 9461515760

उत्तराखण्ड की माटी में जन्मे,
भारत माँ के वीर सपूत
पेशावर कांड के नायक
वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली
तथा उनके साथियों को
**पेशावर कांड की
वर्षगांठ पर
प्रदेशवासियों की ओर से
शत-शत नमन**

सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग, उत्तराखण्ड
www.uttarainformation.gov.in f UttarakhandDIPR DIPR_UK

अल्मोड़ा से प्रकाशित कुमाउनी मासिक पत्रिका
पहरू
के लिए कुमाउनी भाषा में कहानियां, कविताएं आदि रचनाएं सादर आमंत्रित हैं। आजीवन सदस्यता 2000 रुपए अथवा वार्षिक सदस्यता 200 रुपए भिजवाकर सहयोग करें।
डॉ हयात सिंह रावत,
संपादक- पहरू
'इंद्र सदन' सुनारीनौला, अल्मोड़ा,
मोबाइल - 9412924897

"हमारा उद्देश्य" "आपकी उन्नति"
अल्मोड़ा अर्बन को-आपरेटिव बैंक लि.
(उत्तर भारत का सबसे बड़ा नगर सहकारी बैंक)
प्रधान कार्यालय,
लाला बाजार अल्मोड़ा (उत्तराखंड)
फोन- 05962-230743, 231947, फैक्स- 05962-237708
स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।
पी. सी. तिवारी — वरिष्ठ महाप्रबंधक
सुनील कुमार अग्रवाल — उपाध्यक्ष
आनंदसिंह बगड़वाल — अध्यक्ष

तिरंगा झंडा

● संतोष किरौला

भारत 1947 में आजाद हुआ। लेकिन उससे पहले हमारे नेताओं ने राष्ट्रीय झंडे की परिकल्पना की थी। भारतीय झंडे का प्रथम प्रारूप श्रीमती भीकाजी कामा ने सन् 1905 में लंदन में क्रांतिकारी साथियों के साथ मिलकर तैयार किया। इसके प्रथम प्रारूप में हरा,लाल और केसरी तीन रंग की पट्टियां थी। इसमें

सबसे ऊपर लाल रंग की पट्टी थी। जिसमें आठ खिले हुए कमल तात्कालीन भारत के 8 प्रदेशों के प्रतीक थे। बीच में केसरी रंग की पट्टी पर 'वंदेमातरम्' लिखा था। नीचे की हरी पट्टी पर दांई ओर अर्धचंद्र और बांई ओर उगता हुआ सूरज दिखाया गया था। यह तिरंगा सबसे पहले बर्लिन में फहराया गया। सन् 1909 में इसे बंगाल में फहराया गया था।

सन् 1921 में महात्मा गांधी ने अपने जर्नल 'यंग इंडिया' में राष्ट्रीय ध्वज बनाए जाने की बात कही थी। महात्मा गांधी की पहल पर राष्ट्रीय झंडा बनाने के लिए मछलीपट्टनम निवासी पिंगली वैंकैया को जिम्मेदारी दी गई। भारत के राष्ट्रीय झंडे में तीन रंगों का समावेश किया गया। गांधी जी की व्याख्या के अनुसार केसरिया रंग लोगों के बलिदान के लिए, सफेद रंग पवित्रता के लिए तथा हरा रंग उम्मीद के लिए प्रतीक स्वरूप जोड़ा गया।

तिरंगे के बीच में चरखा रखने का गांधीजी का तर्क था कि यह प्रमाणित हो सके कि यह झंडा स्वदेशी यानी भारत में निर्मित कपड़े से बनाया गया है। भारत की आजादी की लड़ाई में तिरंगे ने एक नया जोश भर दिया। सन् 1931 में कांग्रेस ने इस झंडे को राष्ट्रीय ध्वज की स्वीकृती प्रदान की। संविधान सभा में जवाहरलाल नेहरू ने 22 जुलाई,1947 को तिरंगे को राष्ट्रीय ध्वज घोषित किया। तिरंगे में सबसे ऊपर केसरिया रंग, बीच में सफेद रंग तथा नीचे हरा रंग। सफेद रंग की पट्टी में नीले रंग से बना अशोक चक्र, जिसमें 24 तीलियां होती हैं। जो धर्म और कानून का प्रतिनिधित्व करती हैं। भारत में तब से इसी राष्ट्रीय ध्वज को मान्यता मिली है। तीन रंगों का होने के कारण इसे तिरंगा कहा जाता है।

भारत में राष्ट्रीय झंडे यानी तिरंगे को फहराने के लिए कुछ नियम कानून फ्लैग कोड आफ इंडिया द्वारा बनाए गए। पहले के कानून के अनुसार खादी के इस झंडे का प्रयोग केवल स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस के अवसर पर किया जाता था। सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका के बाद सुप्रीम कोर्ट ने भारत सरकार को निर्देश दिए कि अन्य अवसरों पर भी राष्ट्रीय झंडे का प्रयोग किया जा सकता है। यदि तिरंगा किसी अधिकारी की गाड़ी पर लगाया जाए तो उसे सामने की ओर बीचों-बीच या कार के दाईं ओर लगाए जाने का प्रावधान है।

केवल राष्ट्रीय शोक के अवसर पर ही झंडा आधा झुकाया जाता है। झंडे को कभी भी जमीन में नहीं रखा जाना चाहिए। पानी में डुबोना, आग से जलाना व किसी तरह का फिजीकल डैमेज करना, तिरंगे की यूनिफार्म बनाना, कानूनी अपराध है। पुराने झंडे का प्रयोग मेज ढकने, मंच सजाने के लिए नहीं किया जाएगा। यदि दूसरे झंडे साथ में लगाने हों तो तिरंगे से ऊंचा कोई झंडा नहीं होना चाहिए। कपड़े के साथ ही अब केवल कागज के बने राष्ट्रीय तिरंगे झंडे का उपयोग किया जा सकता है। पॉलीथीन के तिरंगे झंडे अब मान्य नहीं हैं।

तहसील परिसर,
रानीखेत, अल्मोड़ा

धूम-धड़ाम

● डॉ. रामपुनीत ठाकुर 'तरुण'

हुई आज से गर्मी की छुट्टी,
चलो, चलें माँ, नानी गांव।
हरे-भरे पेड़ों की हमको,
वहां मिलेगी ठंडी छांव।
खेलूंगा, कूदूंगा जी भर,
खाऊंगा मैं लीची-आम।
वहां नहीं कहना मुझसे माँ,
करने को तुम कोई काम।
नाना जी से सुना करूंगा,
रोज शाम मैं कविता-गीत।
और सुनूंगा नानी माँ से,
रामायण की कथा पुनीत।
मामा जी के साथ घूमने,
जाऊंगा जब भी बाजार।
लूंगा टॉफी, चिप्स, कुरकुरे,
आलू-भुजिया, मिल्कीबार।
छुट्टी में पढ़ना-लिखना क्या?
माँ, कर लूं कुछ दिन आराम।
चलो, करूंगा वहां नहीं मैं,
घर में कोई धूम-धड़ाम।

- श्रीकृष्णापुरी, गली नं.-1, आर.एन.
ए.आर. कॉलेज रोड,समस्तीपुर,बिहार
मो.-9473138476

पैसों का पेड़

● माधुरी शास्त्री

मम्मी दिन भर कहती रहती,
घर पर पैसा एक नहीं।
आटा महंगा, दालें महंगी,
महंगे हैं सब दूध दही।
एक बार बढ़ जाती कीमत,
घटने का लेती न नाम।
बच्चे बूढ़े परेशान हैं,
सबका जीना हुआ हराम।
मुन्ना-मुन्नी बैठे सोचें,
पैसों का इक पेड़ लगाएं।
जब भी पड़े जरूरत उनको,
पैसे तोड़ घर ले आएं।
चिंता मुक्त करें मम्मी को,
पापा से शाबाशी पाएं।

-सी/8 पृथ्वीराज रोड, सी. स्कीम
जयपुर-1 (राज.)

खरगोश

● हितेशकुमार शर्मा

आओ बच्चों तुम्हें बुलाते,
मोर पपीहे मधुवन में।
सुंदर-सुंदर फूल खिले हैं,
देखो कैसे उपवन में।
हाथी का संदेशा आया,
आओ मेरी करो सवारी।
वर्तमान में इस धरती पर,
मैं ही तो सबसे भारी।
दूर कहीं कोयल बोली है,
हुई गुदगुदी तन मन में।
भीनी-भीनी हवा चल रही,
झूम रही डाली-डाली।
फल खाने को उछल रही है,
वह देखो लोमड़ काली।
फुदक रहे हैं हिरन और,
खरगोश मगन हो जीवन में।
तैर रही पानी में बतख,
बगुले खड़े किनारे पर।
नाच रहा है मोर वहां पर,
खोले अपने सारे पर।
दूर कहीं से दादुर की,
आवाज आ रही निर्जन में।
शेर सांप से बचकर रहना,
जंगल में चीता एक भयानक है।
डर का साम्राज्य होता है,
बब्बर शेर के गर्जन में।
धीरे - धीरे बदल रहा है,
वातावरण हवाओं से।
आसमान भी आच्छादित हो,
रहा है आज घटाओं से।
वर्षा आने वाली है,
है खबर हवा की सन-सन में।
निकल चलो जंगल से,
जल्दी आओ बैठो गाड़ी में।
चलते चलते रीछ देख लो,
बैठा है उस झाड़ी में।
आगे कभी घूमने आएंगे,
फिर फुरसत के क्षण में।

- सिविल लाइंस, बिजनौर,उ.प्र.-246701
मोबाइल- 9319935979

लेटर बॉक्स

● प्रभा मेहरा

सबकी चिट्ठी ले लेकर,
गुड़ुप-गुड़ुप कर लेता हूं।
सबको तसल्ली दे देकर,
उनकी धरोहर सेता हूं।
पर हजम नहीं करता मैं,
चाहे कितना फूल ही जाऊं।
मोटा पेट सेठ बना मैं,
चिट्ठी का बक्सा कहलाऊं।
कह लो मुझको एक सिपाही,
जो बना हुआ है टीन का।
दोस्त हमारा हर एक राही,
प्यारा हूं इस जमीन का।
हंसी खुशी सुख दुख सारे,
पहले मेरे पास में आते।
रंग बिरंगे टिकट ये प्यारे,
उन पर चिपकाए जाते।
दूर देश में भी जो तुम,
हो अपनी दुआ सलाम।
और संदेशा पहुंचाएं हम,
देश अपना सदा महान।

- 14/91, ताजगंज, आगरा-282001

सवेरा

● प्रदीप बहराइची

दूर कहीं से हुआ सवेरा,
रोशनी आई भागा अंधेरा।
शीतल मंद पवन बहती है,
कोयल कूक-कूक कहती है।
सुन लो प्यारा गीत ये मेरा,
दूर कहीं से हुआ सवेरा।
खिली हुई फूलों की डाली,
भौंरे गाते धुन मतवाली।
हुआ प्रफुल्लित मन मेरा,
दूर कहीं से हुआ सवेरा।
उगता सूरज लगता प्यारा,
आसमान भी सबसे न्यारा।
सबसे सुंदर है घर मेरा,
दूर कहीं से हुआ सवेरा।

- बढ़कागांव,पयागपुर,बहराइच (उ.प्र.)
मो.- 6931015684

कहानी :

अनोखा बर्थ डे

● अब्दुल समद राही

''मम्मी आज वसु का बर्थ डे था। फरिया, झालर, लाइटिंग के साथ गुब्बारों की सजावट देखते ही बनती थी। इतना बड़ा केक मैंने पहली बार देखा। खाना क्या लाजवाब! खाते ही रह गए। सब ने खूब पेट भर-भर खाया।''

मम्मी जीतांशु की बात बीच में काटते हुए बोली, ''कौन वसु? डॉक्टर हर्ष का बेटा। जिसके बर्थ डे पर तू पिछली बार भी गया था।''

''हां मम्मी! ठीक पहचाना। वसु के पापा हर्ष जी शहर के बहुत बड़े डॉक्टर हैं।'' जीतांशु ने अपनी मम्मी शशिकला को बताया।

''मैं जानती हूं बेटा! ये अमीर लोग गरीबों को लूटकर खूब पैसा खर्च करते हैं। खून-पसीना एक कर कमाया पैसा खर्च करें तो पता चले।'' शशिकला ने जीतांशु से कहा, ''मैं समझा नहीं मम्मी आप यह क्या कह रही हैं?'' शशिकला ने कहा, ''मैं बाद में समझाती हूं बेटा।''

''मुझे कुछ नहीं समझना मम्मी। मैं भी अपना बर्थ डे इस बार धूम-धड़ाके से मनाऊंगा बस। पिछले दो-तीन साल का बर्थ डे मुझे याद है। पापा मेरे बर्थ डे पर ज्वार-बाजरे की बोरी खरीद पक्षियों के दाने के लिए मंदिर में दे आते हैं। अब की बार यह सब नहीं चलेगा।'' जीतांशु ने अपनी मम्मी को बताया।

शशिकला ने जीतांशु को समझाते हुए कहा, ''बेटा यह कितना नेक काम है। तेरे बर्थ डे पर मूक पक्षी दाना खाकर हमें दुआ देते हैं। यह भलाई हर किसी के नसीब में नहीं होती। तेरे पापा भी कितना खुश होते हैं यह सब करके। केक काटने व गुब्बारे उड़ाने से किसको क्या फायदा होगा? मुंह पर हाथ फेर लो बस।''

''ना मम्मी ना! अबकी बार यह नहीं होगा। केक ही आएगा। आप पापा को समझा दें।'' यह कहते हुए जीतांशु रोने लगा। ''अच्छा बाबा आप हाथ-मुंह धो लो और आराम करो, थक गए होगे। अभी तो आपके बर्थ डे में दो दिन बाकी हैं। अच्छे बच्चे रोते नहीं। मैं पापा से बात करूंगी।'' शशिकला ने जीतांशु के सर पर हाथ फेरते हुए प्यार से समझाते हुए कहा। जीतांशु हाथ मुंह धोने चला गया। उसके पापा आशीष टांक यह सब बातें अपने रूम में बैठे सुन रहे थे। शशिकला आशीष टांक के पास गई और बोली, ''इस बार तो बेटे का मन रख लेना, एक केक ही तो लाना है।''

आशीष टांक मुस्कुराते हुए बोले, ''शशि बात केक की नहीं है। मैं चाहता हूं बच्चों के मन में दया, समर्पण, त्याग, प्रेम, मदद करने की भावना जगे। वो बड़े होकर डॉक्टर हर्ष की तरह किसी को लूटें नहीं, सेवा भावना से कार्य करते हुए एक-दूसरे की मदद करें।''

''हां-हां यह सब ठीक है, मगर इस बार तो केक लाना ही पड़ेगा।'' शशिकला ने गुस्से से कहा। आशीष टांक बोले, ''अच्छा बाबा आप नाराज ना हो, सब हो जाएगा।'' जीतांशु भी बरामदे में खड़ा सब बातें सुन रहा था। फिर खुश होकर अपने कमरे में जाकर सो गया।

सुबह मम्मी ने आवाज लगाते हुए कहा, ''जीतांशु उठ जाओ बेटा! नहा-धो लो। आपका नाश्ता तैयार है। स्कूल का टाइम हो जाएगा।'' जीतांशु ने कहा, ''मम्मी, मैं तो कब का उठ गया और स्नान भी कर लिया। आप तो रसोई में थी। आप नाश्ता लगा दो और मेरा टिफिन भी तैयार कर दो। कल तो मेरा बर्थ डे है। मैंने आपकी सब बातें सुन ली हैं। आप पापा को थोड़ा और खुश कर दो। आज मैं सब दोस्तों को दावत देकर आऊंगा। पापा को आप केक लाने को कह देना। मेरे गुल्लक के पैसों से गुब्बारे और फरियां भी आ जाएंगी। खूब मस्ती करूंगा इस बार देखना।''

जीतांशु ने जल्दी-जल्दी अपना नाश्ता किया और टिफिन बस्ते में रखकर स्कूल चला गया। प्रार्थना की घंटी बज गई थी। जीतांशु भी प्रार्थना में शामिल हो गया। प्रार्थना सभा में प्रधानाचार्य जी ने अपना उद्बोधन देने के पश्चात तीन बच्चों को नाम लेकर पुकारा और उनको आगे बुलाकर कहा, ''आपकी स्कूल की फीस अब तक जमा नहीं हुई है। इस सप्ताह स्कूल की फीस जमा नहीं हुई तो तुम्हारा नाम काट दिया जाएगा। आपको फिर स्कूल आने की कोई जरूरत नहीं। कई बार कहने के बाद भी आपकी फीस जमा नहीं हुई है। यह अंतिम मौका दिया जा रहा है।'' तीनों बच्चे

गरीब थे। रोते हुए कक्षा में चले गए। जीतांशु अंदर तक हिल गया था। कल मम्मी-पापा के बीच हुई बातें उसको याद आ रही थी। दया, त्याग, भलाई, समर्पण शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे। उसका आज स्कूल में मन नहीं लगा। उसने दोस्तों को बर्थ डे की दावत भी नहीं दी। छुट्टी होते ही वह घर गया। पापा घर पर ही थे। वह पापा से लिपट कर रोने लगा और बोला, ''पापा मुझे केक वाला बर्थ डे नहीं मनाना।''

पापा बोले, ''क्या हुआ बेटा! क्यों नहीं मनाना केक वाला बर्थ डे?'' जीतांशु ने कहा, ''पापा! आज स्कूल में प्रधानाचार्य जी ने तीन बच्चों की फीस जमा नहीं होने के कारण नाम काटने को कह दिया। इस सप्ताह उनकी फीस जमा नहीं हुई तो उनका नाम काट दिया जाएगा। मैं उनकी मदद करना चाहता हूं। मेरे गुल्लक में कुछ पैसे हैं। मैंने बर्थ डे के लिए अपनी रोजाना के खर्च में से बचाकर इकट्ठा किए हैं।'' पापा ने जीतांशु को गले लगा लिया।

जीतांशु दौड़ता हुआ गुल्लक ले आया। उसमें पूरे एक हजार रुपए थे। पापा ने उसमें पांच सौ रुपए और मिलाकर बच्चों की फीस पूरी कर दी और जीतांशु से कहा, ''बेटा! कल स्कूल जल्दी जाकर ये पैसे अपने प्रधानाचार्य जी को दे देना और कहना सर आज मेरा बर्थ डे है। ये पैसे मैं अपने तीनों साथियों की फीस जमा करा कर खुशी बांटना चाहता हूं।''

जीतांशु ने ऐसा ही किया। सुबह जल्दी उठकर वह स्कूल पहुंचा। उसने पैसे प्रधानाचार्य जी को दे दिए और सारी बात कह दी। प्रधानाचार्य जी बहुत खुश हुए। प्रार्थना सभा में जीतांशु को आगे बुलाया और सभी को संबोधित करते हुए कहा, ''आज जीतांशु का जन्म दिन है। इसने जन्म दिन पर फालतू पैसा खर्च करने के बजाय अपने साल भर के बचत किए हुए पैसे इन तीन गरीब बच्चों की फीस के लिए जमा करवाए हैं। धन्य है यह बच्चा और इसके माता-पिता जिसके दिल में त्याग की भावना है।'' प्रधानाचार्य जी ने पूजा की थाली मंगवाई। बच्चियों द्वारा जीतांशु को मोली बांधकर तिलक लगा बहुमान किया। उसके हाथों से पूजा करवाई। पूरा स्कूल 'जीतांशु हैप्पी बर्थ डे टू यू' के नारों से गुंजायमान हो गया। सभी अध्यापकों ने भी शाबाशी देते हुए बधाई दी।

जीतांशु अपना अनोखा बर्थ डे देखकर गद्गद् हो गया। घर आकर सारी बात मम्मी-पापा को बताई। मम्मी-पापा भी बहुत खुश हो गए। जीतांशु की खुशी का भी कोई ठिकाना नहीं था। मम्मी-पापा ने सुकून की सांस ली। उन्हें जीतांशु का सुनहरा भविष्य दिखाई दे रहा था।

- सिलावट मोहल्ला, ढाल की गली,
सोजत शहर, राजस्थान
मोबाइल - 9251568499

मान धन

● जी.आर.के. रेड्डी 'अमर जी'

राजस्थान का चित्तौड़गढ़ बहुत मशहूर है। चित्तौड़गढ़ पर अनेक बार हमले हुए। चित्तौड़ के शासक ने उन चढ़ाइयों का मुंहतोड़ जवाब दिया। वह बड़ा ही साहसी और स्वधर्म परायण था।

अकबर ने ऐसे महान व्यक्ति से दोस्ती करनी चाही। उसने अपने दरबार के मानसिंह नामक राजपूत को चित्तौड़ भेजा। चित्तौड़ के राणा ने मानसिंह का सादर सत्कार किया। उसने कहा, ''आप बहुत दूर से आए हैं, भूखे से दिखते हैं। पधारिए, भोजन कीजिए।''

राणा के बेटे ने भोजन का इंतजाम किया। वह भोजन था आम आदमी का आहार। मानसिंह आश्चर्य चकित हो गया, खाने को सकपकाया।

''आप मेरे साथ भोजन करेंगे न?'' मानसिंह ने कहा।

"आप हमारे मेहमान हैं, हम से पहले आप को खाना चाहिए।" राणा ने कहा।

"धन्यवाद राजन! मेहमान के साथ मेजबान को भी भोजन करने का रिवाज है।" मानसिंह ने कहा।

"माफ कीजिए, मैं आपके साथ भोजन नहीं कर सकता।" राणा ने धीरे से दिया जवाब।

"कारण क्या है, मालूम कर सकूं?" मानसिंह ने पूछा।

"आपने अपनी आन दुश्मनों के यहां गिरवी रख दी थी।" राणा का उत्तर था। यह उत्तर सुनकर मानसिंह आपे से बाहर हो गया। उसने कहा," मैं आपके यहां दोस्त के तौर पर आया हूं। लेकिन आपने मुझे अपमानित किया। आप इसका वाजिब नतीजा पाएंगे।''

"मान-धनी कभी किसी से नहीं डरते। मुझे मालूम है आप क्या कर सकते हैं? रणक्षेत्र में होगा आमना-सामना।'' राणा ने गुस्से से कहा। राणा की बातें सुनकर मानसिंह आग बबूला होते हुए लौट गया। वह राजा था-महाराणा प्रताप। कई मुसीबतें घेर लेने पर भी बादशाह अकबर के सामने उसने सर नहीं झुकाया।

- फ्लैट 201, द्वितीय तल, साई अखिल एकिटका अपार्टमेंट,
रायडू बाजार के पीछे, निजामपेट(बी) हैदराबाद 500090
मोबाइल-9620186222

कहानी :

बहुत बड़ी बात

● श्यामा शर्मा

बहुत समय पहले की बात है। धारा नगरी में एक राजा विक्रम सिंह राज्य करता था। राजा बड़ा ही पराक्रमी दयालु एवं प्रजापालक था। उसके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। अपने राजा की सहायता के लिए प्रजा हमेशा तैयार रहती थी।

धारा नगरी इतना शक्तिशाली राज्य था कि पड़ोसी राज्य आक्रमण करने की बात तो क्या, आंख उठाकर देखने की हिम्मत भी नहीं करते थे। राजा विक्रम सिंह को शिकार का बड़ा ही शौक था। वह सुबह शिकार के लिए अकेला ही निकल जाता था।

एक दिन राजा यह सोचकर शिकार पर निकला कि मुझे आज बब्बर शेर का ही शिकार करना है, लेकिन उस दिन राजा को शेर दूर-दूर तक दिखाई नहीं दिया। राजा विक्रम सिंह घने जंगलों में शेर के शिकार की तलाश में चलता रहा और कुछ समय पश्चात् रास्ता भटक गया।

राजा विक्रम का भूख एवं प्यास से बुरा हाल हो गया था। प्यास की अधिकता से वह घने जंगल में बेसुध होकर घोड़े से गिर गया। उसी समय भेड़ें चराती हुई एक बालिका जंगल से गुजरी। उसने देखा कि कोई मनुष्य बीच रास्ते में बेहोश पड़ा है। उसने पास आकर देखा तो उसे राजा के कपड़ों एवं घोड़े को देखकर पहचानने में देर नहीं लगी। वह जान गई कि यह तो किसी देश का राजा है।

उसने अपनी छागल से पानी निकाला और राजा के मुंह पर थोड़े छींटे डाले। राजा ठंडक पाकर उठ बैठा। वह बालिका से बोला, "बेटी बहुत प्यास लगी है, थोड़ा पानी पिला दे।"

बालिका ने राजा के आगे अपनी छागल आगे बढ़ा दी और बोली, "आप जितना चाहो पानी पी लो मालिक।"

राजा बोला, "बेटी! फिर तुम क्या पिओगी?"

बालिका राजा से बोली, "मैं घर जाकर पी लूंगी। आप मेरी बिल्कुल चिंता न करें।" राजा बालिका की बात सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ। बोला "बेटी! तुम्हारा घर कहां है?"

वह बोली, "महाराज! कोई दो कोस भर है।" राजा को बालिका पर प्रेम उमड़ आया। वह जान गया इस समय जबकि पानी का कोई मोल नहीं और बालिका को भी उसकी आवश्यकता होगी, फिर भी बालिका उसके खातिर पूरा पानी देना चाहती है। वह बालिका के प्रति कृतज्ञ हो गया। राजा बोला, "बेटी दो कोस तो बहुत दूर होता है। आओ, मैं तुम्हें घोड़े पर बिठाकर घर छोड़ देता हूं।" राजा ने बालिका को घोड़े पर बिठाया और उसके घर की तरफ चल दिया। घर पहुंचकर बालिका ने जोर से आवाज लगाई, "बाबा! बाबा देखो! हमारे घर कौन आया है?"

बेटी की आवाज सुन उसके बाबा झोपड़ी से बाहर आए। राजा को देख वह उनके चरणों में झुककर बोले, "महाराज! धन्य भाग हमारे, जो आज आप हमारे घर पधारे।"

वृद्ध किसान की बात सुन राजा बोला, "धन्य भाग तो हमारे हैं भाई। जो तुम्हारी बेटी ने पानी पिलाकर हमारी जान बचाई है।"

किसान की बेटी को गोद में लेकर राजा बोला, "बहुत भूख भी लगी है भाई कुछ खाने को दे दो।"

राजा की बात सुन किसान दुखी मन से बोला, "हुकुम! इस गरीब के घर में तो प्याज और ज्वार की रोटी है। आप कैसे खाओगे सरकार!"

किसान की बात सुन राजा बोला, "आज तो तुम जो भी खिलाओगे, वह पांच पकवान से बढ़कर होगा, मैं वो ही खाऊंगा।"

राजा को आसन लगाकर भोजन खिलाया गया। राजा ने भोजन करने के बाद बालिका से कहा, "बेटी! आज तुम जो चाहो मांग लो, वह तुम्हें मिलेगा। क्योंकि तुमने मुझे पानी पिलाकर जीवनदान दिया है।"

किसान की बालिका बड़ी समझदार थी। वह बोली, "महाराज! पानी का कोई मोल नहीं होता, इसलिए मैं उसके बदले आपसे कुछ नहीं लूंगी।"

राजा नहीं माना। वह बोला, "बेटी! मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हें कुछ न कुछ देकर ही जाऊंगा।"

किसान की बेटी ने कहा कि "महाराज! आप जब नहीं मानते हो तो मुझे एक सिक्का बख्शीश समझकर दे दें।

राजा ने सोचा लड़की को लोभ नहीं है। वह बड़ा खुश हुआ। उसने घोषणा की "बेटी! एक सोने का सिक्का तुम अभी लो। हर माह तुम्हें एक सिक्का मेरा सिपहसालार बिना नागा दे जाया करेगा।"

लड़की बड़ी प्रसन्न हुई, उससे ज्यादा प्रसन्न उसके वृद्ध पिता हुए, क्योंकि उनके दिए हुए संस्कार से उन्हें हमेशा के लिए आजीविका मिल गई थी। ।

- बी-422, आर.के.पुरम, कोटा-10, राजस्थान
मोबा. - 941334544

तितली

● संजाराम मनमौजी

रंग बिरंगी होती तितली,
होते रंग हजार।
तितली उपवन में आ जाए,
तो आ जाए बहार।
बसंत ऋतु के आते ही,
तितली लगती है उड़ने।
बच्चे भागें दौड़ें पीछे,
तितली को रोज पकड़ने।
पीछे बच्चे आगे तितली,
उड़ती पंख पसार।
पकड़ो न तुम देखो दूर से,
करो तितली से तुम प्यार।
मनमौजी तितली बच्चों के,
मन को बहुत ही भाती है।
बाग बगीचों में देखो तितली
फुर्ती से उड़ती आती है।
प्र क ति की अति सुंदर रचना,
देखो नयन निहार।
बच्चों को भाती है तितली,
तितली के रंग हजार।

- रविदास कालोनी, वार्ड नं - बासौदा,
गंज बासौदा, जिला-विदिशा म प्र
मोबा -

पतंग

● मीना शुक्ला

उड़ जा उड़ जा, ओ मेरी पतंग,
आसमां को चूम ले पतंग।
स्कूल में है गरमी की छुट्टी।
किसी से नहीं हमारी कुट्टी।
अब तो मजा आएगा,
हम भी पतंग चलाएगा।
नीली, पीली, लाल, रंग की,
हवा में पतंग हम उड़ाएंगे।
जीवन में सदा आगे बढ़ने का,
हम राज सब को बताएंगे।

- अस्मिक, बारा गांव, गांतोक, सिक्किम
मोबा -

चिड़ियां

● डा सुंदर दास संगल्डी

उड़कर आइ चिड़ियां डाल,
कोइ काली कोइ है लाल।
सबने बैठकर गाया गान,
अलग-अलग थी उनकी तान।
सुनकर लगा सबको अच्छा,
प्र स न्नचित लगा हर बच्चा।
रखा छत-मुंडेर पर पानी,
पीने लगी तब चिड़ियां रानी।

-ग्रा पो पुजार गांव चंबा टिहरी
मोबा -

लंगूर

● राजपाल सिंह गुलिया

आज शहर से गांव पधारा,
नटखट एक लंगूर।
लाठी ले दादा जो दौड़े,
मजा चखाऊं ठहर निगोड़े।
रहा गुस्से से उनको घूर,
नटखट एक लंगूर।
कभी किसी के मटके फोड़े,
आम कहीं पर कच्चे तोड़े।
कर दिया सब कुछ चकनाचूर,
नटखट एक लंगूर।
देख उसे चिंटू घबराया,
मुझे बचाओ वह चिल्लाया।
लगता है ये बड़ा मगरूर,
नटखट एक लंगूर।
वानर सेना इससे डरती,
भागी वह तो त्राहि-त्राहि करती।
लगता है गुस्से में हुजूर,
नटखट एक लंगूर।

-राजकीय प्राथमिक पाठशाला भटेड़ा,
झज्जर हरियाणा पिन-
मोबा -

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण

स्वजल परियोजना अल्मोड़ा

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण ठोस एवं तरल अपशिष्ट प्रबंधन(SLWM)

- ग्राम पंचायत के प्रत्येक परिवार में जैविक एवं अजैविक कूड़े को एकत्र करने के लिए पृथक डस्टबिन की व्यवस्था।
- स्थानीय बाजार एवं घरों से कूड़ा एकत्र करने की व्यवस्था।
- जैविक कूड़े तथा गोबर से खाद बनाने हेतु खाद गड्ढों का निर्माण।
- कूड़े के एकत्रीकरण हेतु ग्राम पंचायत में कचरा पृथक्कीकरण केंद्र की व्यवस्था।
- ग्राम पंचायत के प्रत्येक परिवार के प्रयोग करने के उपरान्त अनुपयोगी बेकार पानी (Unused Water) जैसे किचन, लॉन्ड्री, आर.ओ. फिल्टर तथा वाशरूम के पानी का सदुपयोग साग-सब्जी में करना, जिससे जल जनित बीमारियों की रोकथाम की जा सकती है।
- जल निकास हेतु नालियों तथा सोख्ता गड्ढों का निर्माण।
- ग्राम पंचायत को साफ सुथरा रखकर पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रखना।

संचय जल, बेहतर कल

जुलाई , से सितंबर, तक जल शक्ति अभियान के अंतर्गत जल संरक्षण एवं संवर्धन कर जल संचय में अपना अमूल्य योगदान दें।

परियोजना प्रबंधक/सदस्य सचिव
जिला जल एवं स्वच्छता मिशन, अल्मोड़ा

मुख्य विकास अधिकारी/अध्यक्ष
जिला जल एवं स्वच्छता समिति अल्मोड़ा

जिलाधिकारी
अल्मोड़ा

कहानी :

राजा की महत्वाकांक्षा

● डॉ. विनीता राहुरीकर

प्रतापगढ़ का राजा महेंद्र बहुत महत्वाकांक्षी था। उसे रात-दिन अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार करने की धुन लगी रहती। वह बड़े-बड़े मंदिरों, स्तंभों और सुंदर इमारतों का सतत् निर्माण करवाता रहता। उसकी कलाप्रियता और ख्याति सुनकर दूर-दूर से कलाकार, शिल्पकार और कारीगर आकर उसके राज्य में बसने लगे। धीरे-धीरे उसके राज्य की जनसंख्या बढ़ने लगी। घर बनाने तथा खेती करने के लिए भूमि कम पड़ने लगी।

तब राजा ने आस-पास के जंगल काटकर नगर बसाने का आदेश दिया। राजा के आदेश पर लकड़हारे तेजी से जंगल काटने लगे। जंगल कटने के कारण पक्षियों के घोंसले नष्ट हो गए। पशु डरकर दूर-दूर तक भाग गए। वन्य जीवों के पास खाने को कुछ नहीं बचा तो वे खेतों में घुसने लगे। जो खेतों में मारे न जाते, वे बेचारे पशु शिकारी के हत्थे चढ़ जाते। धीरे-धीरे जंगल में जानवरों की संख्या काफी कम हो गई।

एक दिन राजा सायं अपने मंत्री के साथ बात कर रहा था। राजा ने मंत्री से कहा, ''नया नगर बसने के कारण सारे लोग खुश होंगे। आखिर लोगों को और क्या चाहिए?'' मंत्री ने कहा, '' महाराज! आप बुरा न मानें तो एक बात कहूं।''

'' कहो न'' कहते हुए राजा ने अपनी सहमति दी।

'' हमने एक नया नगर तो बसा दिया है। परंतु हमने हजारों जीव जंतुओं के घर उजाड़ दिए हैं। नया नगर बनने से कई वनस्पतियां समाप्त हो गई हैं। हमने कभी इस बारे में नहीं सोचा। क्या हम कुछ पश्चाताप कर सकते हैं।'' कहते हुए मंत्री ने अपनी बात पूरी की।

''इस पर सोचते हैं'' कहकर राजा उठकर चले गया। राजा को मंत्री की बातें कुछ सोचने के लिए कह रही थी। राजा सोने की तैयारी करता। पर उसे नींद ही नहीं आ रही थी।

सोचते-सोचते राजा को पता नहीं कब नींद आ गई। राजा ने बड़ा ही विचित्र सपना देखा। वह एक वीरान नगर में खड़ा है। चारों तरफ भयानक सन्नाटा है। नगर के सभी मकान खंडहर हो चुके हैं।

बंजर धरती पर मोटी-मोटी दरारें हैं। एक भी तिनका नहीं था उस पर। राजा ऐसा वीरान और उजाड़ नगर देखकर भयभीत हो गया। डर के मारे उसका गला सूख गया। उसने पूरा नगर ढूंढ लिया किंतु कहीं भी पानी की एक बूंद नहीं मिली। कुंए, तालाब भी सूखे पड़े थे।

सहसा राजा को एक स्त्री दिखाई दी। उस स्त्री को देखकर राजा खुश हुआ। उसने उस स्त्री से पूछा,'' कहीं पीने का पानी मिलेगा क्या?''

उस स्त्री ने कहा,''यहां कहीं पानी है ही नहीं। हमारा राजा पागल हो गया है। उसने राज्य के सारे पेड़ काट दिए हैं। पेड़ कटने से पूरा पर्यावरण दूषित होने लगा है। पानी के लिए लोगों में हाहाकार है। पशु-पक्षी ही चराई करके तथा फलों के बीज गिराकर नए पेड़ों के उगने में मदद करते हैं। जब वे ही चले गए तो नए पेड़ कहां से उगेंगे। प्रकृति के चक्र में सभी का

योगदान होता है। यहां दूर-दूर तक कहीं भी पानी नहीं है। मुझे राजा दिखाई देता तो मैं उसे रस्सी से बांध देती।''

डरकर राजा की नींद खुल गई। पलंग से उतरकर वह झरोखे के पास जाकर खड़ा हो गया। पूरब तरफ पौ फटने वाली थी। उसने देखा कि किले की दीवार के अंदर भी और बाहर भी

चारों तरफ बस घर और भवन ही दिख रहे थे। पहले जब वह झरोखे से देखता था तब दूर तक हरियाली दिखती थी। चिड़ियों का मधुर कलरव सुनाई देता था। आज चारों तरफ अजीब सा सन्नाटा है। राजा समझ गया कि यह सिर्फ सपना नहीं था वरन् यह भविष्य की चेतावनी थी। सचमुच अगर वह प्रकृति को ऐसे ही नष्ट करता रहा तो यह धरती कुपित हो जाएगी और उसका सपना सत्य हो जाएगा।

''नहीं-नहीं।'' सपने की कल्पना मात्र से ही राजा कांप गया। वह सोचने लगा कि उसका राज्य हरा भरा रहेगा। वह प्रकृति मां को उसका राज्य छोड़कर नहीं जाने देगा। राजा ने उसी दिन से पेड़ काटने पर रोक लगा दी। वह पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों का महत्व समझ चुका था। उसने सभी राज्य कर्मचारियों को वृक्षारोपण कार्य पर लगा दिया। प्रत्येक घर में, सड़कों के दोनों तरफ छायादार वृक्ष लगाए गए। बगीचों का निर्माण हुआ। कुछ ही समय में उसका राज्य पहले की तरह हरा भरा हो गया। चिड़िया चहचहाने लगीं, वन में वन्य पशु विचरने लगे।

- 28 फेस 2, श्री गोल्डन सिटी, जाटखेड़ी,
होशंगाबाद रोड, भोपाल, म.प्र.-462026
मोबा. : 9826044747

खोजो तो जानें

नीचे वर्ग में बहुत से शब्दों के पर्यायवाची शब्द दिए हैं। देखें कितनी जल्दी ढूंढ सकते हैं?

च	व	न	पा	नी	वी	णा
कु	न	अ	भा	ज	पा	क्षी
पु	सु	द्र	र	नु	ल	त
श	ठ	म	मा	ण्टा	सू	रू
सु	शि	प	ग	ग	न	र्य
ता	ब	टी	स	र	स्व	ती
चि	ट	प	दि	न	व	र

● बीना जोशी, रा.प्रा.विद्यालय, गड़वाली, अल्मोड़ा

मीकू बंदर

● मंजू पांडेय 'उदिता'

मीकू बंदर की शैतानी से प्रहरी वन के सारे जानवर परेशान थे। हाथी दादा, भालू चाचा, लोमड़ी चाची, बिल्ली मौसी सब समझा-समझा कर हार गए। पर मीकू की शैतानी कम होने का नाम ही नहीं लेती। एक दिन तो हद ही हो गई। मीकू पेड़ की सबसे ऊंची डाल पर अकड़ कर बैठ गया। वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा, "सुनो! सुनो! सुनो! मैं आज से तुम्हारा राजा हूं। प्रहरी वन का राजा सबका राजा हा-हा-हा!

शेर ने सुना तो उसे बहुत गुस्सा आया। पर वह बेचारा नीचे से ही गुर्रा सकता था! गुर्र ... गुर्र ...।

मीकू छलांग लगा कर और भी ऊंची डाल पर बैठ गया। ऊंची डाल से वह बोला, ''तुम तो हो सबके राजा। पर मैं अब से सबके साथ तुम्हारा भी राजा ... महाराजा देखो! तुमसे बहुत ऊपर जहां तुम भी नहीं आ सकते हो। वहां मेरा सिंहासन है देखो ... सबसे ऊंचा हां ... है ना। हां तो सब बोलो-मीकू महाराज की जै।

शोर सुनकर सारे जानवर इकट्ठा हो गए। सबने मिलकर एक सभा की। अब तो मीकू को सबक सिखाना ही होगा। खरगोश ने कहा, ''पर यह काम होगा कैसे?'' तब नन्ही गौरैया बोली, ''मैं सिखाऊंगी इस शैतान मीकू को सबक।'' इसकी शैतानी का फल तो इसे मिलना ही चाहिए। अभी देखो सब। मैं इसे कैसे मजा चखाती हूं। कह कर वह फुर्र से उड़ गई। अकड़ू बंदर इतनी ऊंचाई पर बैठा था कि वह सभा में हुई कोई भी बात नहीं सुन सका।

गौरैया मीकू के पास जाकर बोली,

''मैं नन्हीं सी चिड़िया हूं। मेरा एक बसेरा है।
तुम महाराज हमारे फिर भी न कोई घर न डेरा है।''

मीकू बोला,

''मैं तो महाराज रौब जमाऊं, मधुमक्खी का घर हथियाऊं।
सुंदर प्यारा महल मिलेगा, अपना शासन खूब चलेगा।''

इतना कहकर फटाफट मीकू ने छलांग लगाई। वह मधुमक्खी के छत्ते पर कूद पड़ा। मीकू के कूदते ही सारी मधुमक्खियां उस पर चिपट पड़ीं। मीकू जोर-जोर से रोने लगा। उसे उसकी शैतानी का सबक मिल चुका था। उसने कान पकड़ कर वादा किया कि अब वह कभी किसी को तंग नहीं करेगा।

रा.जू.हा. मुखानी, हल्द्वानी, नैनीताल
मोबाइल -7017023565

कहानी :-

करनी का फल

● रामराज 'राज'

तड़-तड़ की आवाज सुन महिमा की मां चीख उठी। ''अरे! मर गई। किसी ने पत्थर मारा।'' आवाज सुनकर रेल के डिब्बे में बैठी महिमा ने मां की ओर देखा। मां की आंख से खून टपक रहा था। और मां चीख रही थी। तभी पवनपुर स्टेशन आ गया। महिमा ने अस्पताल की जानकारी ली। तो उसे पता चला कि यहां कोई अस्पताल नहीं है। उसने सोचा चंदौसी जिला अस्पताल ले चलें। उसी ट्रेन से उसने चंदौसी जाना उचित समझा।

मां को चंदौसी जिला अस्पताल में दिखाया। जहां डॉक्टर ने देखकर बताया, ''उसकी मां की आंख चोट से जा चुकी है। उसे इलाज के लिए कम से कम पंद्रह दिन भर्ती रखना पड़ेगा।'' महिमा मां को भर्ती कराकर पास ही अपने घर चली गई और उसके घर के लोग इलाज कराने लगे। उधर हनकू और धनकू दो साथी पाठक पुर साथ-साथ पढ़ने जाते थे। आज जब सुबह स्कूल जा रहे थे। तभी धनकू ने हनकू के हाथ में पत्थर देखकर कहा,'' यह क्या है?''

उसने कहा, ''कुछ नहीं।'' इतने में अलीगढ़ से चंदौसी जाने वाली ट्रेन निकल पड़ी। हनकू पत्थर उठा-उठा कर चलती ट्रेन को मारने लगा। धनकू के मना करने पर भी वह रुका नहीं। गाड़ी निकल गई। गाड़ी में बैठी महिमा की मां की दशा इसी शरारत से हुई थी। विद्यालय से पढ़कर घर वापस आते समय धनकू ने हनकू को बहुत समझाया कि चलती ट्रेन पर पत्थर मत फेंका करो। किसी भी यात्री को चोट लग सकती है। जो खुली खिड़की के पास बैठा होगा। लेकिन इस बात का हनकू पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। धनकू कई बार हनकू को पत्थर मारने से रोक चुका था। पर इस पर उसने कभी ध्यान नहीं दिया। दोनों बातें करते-करते घर पहुंच गए।

धनकू एक दिन बीमार हो गया। विद्यालय कई दिन न जा सका। ऐसे में हनकू अकेले ही विद्यालय जाता और रास्ते में पटरी के किनारे चलते-चलते जो ट्रेन निकलती उस पर पत्थर फेंकता, अब वह आजाद था। उसे कोई रोकने वाला नहीं। घर पर उसकी मां भी न थी। वह अपने मैके आटा गांव गई थी। सभी ताड़ से पत्थर उनके सिर पर लगा। वह अचेत होकर सीट पर गिर पड़ी।

गाड़ी पाठकपुर स्टेशन पर रुकी। हनकू के मामा जी जो मां को भेजने आ रहे थे। उन्होंने उन्हें गाड़ी से स्टेशन पर उतारा। ट्रेन चली गई। स्टेशन पर काफी भीड़ थी, लोगों ने चंदौसी जिला अस्पताल भेजने की सलाह दी। वह उनको जिला अस्पताल ले गए। डॉक्टरों ने देखा तो पता चला कि वह अधिक चोट के कारण कोमा की शिकार हो चुकी थी। यह खबर हनकू के घर गई। हनकू खबर सुनकर हड़बड़ा गया। सुबह धनकू ने सोचा क्यों न हनकू के घर चलें। एक साथ विद्यालय जाएंगे। पढ़ाई लिखाई के बारे में भी पता चलेगा, जो मैं बीमार होने पर न जा सका। वह हनकू के घर जा पहुंचा। हनकू द्वार पर सिर झुकाए बैठा था। धनकू ने हनकू से कहा, ''गुम-सुम क्यों बैठे हो?'' हनकू कुछ नहीं बोला। वह रुआंसा हो गया। ''माजरा क्या है हनकू भैया ?'' धनकू ने कहा।

हनकू ने सारी बात बताई। बात सुनकर धनकू को संदेह हो गया। हो न हो इस कार्य में हनकू का हाथ हो, पर कुछ नहीं कहा। आज धनकू अकेले ही विद्यालय गया। शाम को घर वापस आया। तो पता चला उसके मामा आए थे। वह हनकू को साथ ले गए हैं। जहां उसकी मां भर्ती है। हनकू जब अस्पताल पहुंचा तो मां की हालत देख कर दंग रह गया। मन ही मन अपने किए पर पछता रहा था। किंतु इसकी जानकारी किसी को न थी।

अस्पताल में महिमा भी अपनी मां की देख भाल कर रही थी। तभी उसने हनकू की मां को देखा। दोनों मां का एक ही हाल था। हनकू भी यह सब देखकर परेशान था। महिमा की मां की आंख जाने का दुख इधर कोमा में पड़ी मां की हालत गंभीर थी। दोनों का इलाज चल रहा था। लेकिन हनकू की मां ठीक न थी। धीरे-धीरे हनकू की मां की हालत खराब होती जा रही थी।

शाम का समय था। सभी अपनी-अपनी मां के पास बैठे बातें करते। पर हनकू की मां कोमा में होने के कारण हनकू चुप-चाप अपनी मां को बैठा देखता रहता। तभी डॉक्टर आया और उसने हनकू की मां को देखा। डॉक्टर ने बताया वह अब इस दुनिया में नहीं रही। सुनकर हनकू जोर-जोर से रोने लगा। आवाज सुनकर महिमा, महिमा की मां तथा अन्य लोग आ गए। हनकू ने महिमा की मां के पैर पकड़ कर कहा, ''मां ! मुझे माफ कर दो। यह सब हमारा ही काम था। जो चलती ट्रेन पर पत्थर मारता था।'' महिमा की मां उसे चुप कराती और सांत्वना देती। किंतु हनकू ने रोते-रोते सारी रात गुजार दी।

सुबह उसका साथी धनकू अस्पताल आ पहुंचा। देखा हनकू रो रहा है। सभी उसे ढांढस बंधा रहे थे। हनकू बार-बार सिसकियां ले रहा था। और माफी मांग रहा था। महिमा की मां ने उसे अपने गले लगा लिया। उसे अपनी करनी का फल मिल चुका था। मां को खो कर अब वह भविष्य में ऐसी गलती नहीं करेगा। धनकू ने कहा सभी उसके दुख से दुखी थे।

- बरूद वाटिका, प्रह्लादपुर, खालगांव, सीतापुर, उ.प.

मोबाइल - 9685294675

हाथी

● शकुंतला शर्मा

हाथी भोले भाले हैं,
रंग के बिल्कुल काले हैं।
घास फूस गन्ना खाते,
केला खाकर हरषाते।
गर्मी में अकुलाते हैं,
जल में खूब नहाते हैं।
नदी में घुसने वाले हैं,
ये चिंघाड़ लगाते हैं।
सूंड उठा चिल्लाते हैं,
सूंड नाक सी लगती है।
काम हाथ का करती है,
समझ बूझने वाले हैं।
बच्चों को लगते प्यारे,
करतब हैं इनके न्यारे।
सबको पीठ बिठा लेते,
सूंड उठा आशीष देते।
खुशियां देने वाले हैं,
नहीं किसी से लड़ते हैं।
शेर भी इनसे डरते हैं,
सैलानी को पीठ चढ़ाकर,
लाते हैं जंगल में घुमाकर।
राजा इन पर चढ़ते थे,
समर भूमि में लड़ते थे।
कवच पहनकर जाते थे,
दुश्मन मार भगाते थे।

- 86 तिलक नगर, बाई पास रोड,
फिरोजाबाद 283203

फल

● आचार्य सूर्यप्रसाद शर्मा 'निशिहर'

पेड़-पौधों में फलते हैं,
कई रंग आकार के।
खट्टे मीठे फल आते हैं,
काम सदा आहार के।
देख-देख कर पशु-पक्षी,
मानव सब ललचा जाते।
कोशिश करके जब पाते,
मन मुदित स्वाद ले खाते।
भूख मिटा, बल बढ़ा,
मिटाते रोग अनेक प्रकार के।
खट्टे - मीठे फल आते हैं,
काम सदा आहार के।
इनमें खनिज, लवण,
विटामिन खूब पाई जाती।
पोषण करती पूरे,
तन मन में खुशी बढ़ाती।
बड़े लाभ के फलदाता तरु,
शोभा है संसार के।
खट्टे-मीठे फल आते हैं,
काम सदा आहार के।
आम बेर, अमरूद पपीता,
बड़हर, अनार, केला।
नारंगी, अंगूर, सेब,
जामुन भर लाओ झोला।
सबको प्रतिदिन धोकर खाओ,
ढंग से सोच विचार के।
खट्टे-मीठे फल आते हैं,
काम सदा आहार के।

- 822 ए-कृष्णा नगर,
रायबरेली- 229001 (उ.प्र.)
मोबा. - 9453712120

साइंस

● रजनी सिंह

साइंस का है कमाल,
न्यूटन ने दिया सेब उछाल।
पृथ्वी खींचती प्रत्येक चीज,
गुरुत्वाकर्षण की पड़ी नींव।
राईट बदर्स लगे रहे,
चीर के नभ का विचर चले।
वायुयान का हुआ आविष्कार,
विश्व में हुआ खूब प्रचार।
अंधकार का हुआ खात्मा,
एडीसन ने बल्ब जला दिया।
रामानुज भारत का सितारा,
शून्य अंक को पुनः उभारा।
गणित में नाम कमाया,
दुनिया में यश फैलाया।
आइंस्टीन की दुनिया गोल,
अणु का कोई ओर न छोर।
सार्थक हो उपयोग यदि,
बदले सूरत दुनिया की।
हैं अनेक ऐसे खोजी,
मानव को सुविधा दे दी।
कठिन-परिश्रम, इच्छा-बल,
सफलता के ये गुण प्रबल।

- रजनी विला, छिबाई- 233343 (उ.प्र)
मोबा. 9412653980

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) बागेश्वर

स्वतंत्रता दिवस
की
हार्दिक शुभकामनाएं

समस्त स्टाफ
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डायट) बागेश्वर

कहानी :

अच्छे दोस्त

● अल्का प्रमोद

आगत लॉन में गेंद खेल रहा था। उसकी गेंद गुलाब की क्यारी में चली गई। जब वह लेने गया तो गुलाब के कांटे उसके हाथ में चुभ गए। खून निकलता देखकर वह रोने लगा। उसने पापा के पास जाकर कहा, ''पापा ये सब पेड़-पौधे कटवा दीजिए। इनकी वजह से मैं गेंद नहीं खेल पाता।''

पापा ने कहा, ''बेटे! लॉन फूलों से कितना सुंदर लगता है। फूलों में खुशबू आती है। पेड़ों से तुम्हें आम मिलते हैं।''

आगत मुंह बना कर बोला, ''पापा उसके लिए हम कमरे में परफ्यूम डाल सकते हैं। बाजार से फल ले सकते हैं।''

पापा ने हंस कर पूछा, ''क्या तुम्हें पता है कि परफ्यूम भी इन्हीं फूलों से ही बनती है?''

''पापा जो बनाते हैं, वह लगाएं। आपने क्यों लगाया है? आप आज ही इसे हटा दीजिए।'' आगत ठुनकते हुए बोला।

तभी मान्या आ गई। उसने कहा, ''पापा प्लीज आप पौधे नहीं हटाइएगा।''

''हां-हां तुमको अपनी मैम को देने के लिए रोज गुलाब चाहिए। इसीलिए कह रही हो मत हटाइए'' आगत ने चिढ़ते हुए कहा। पापा ने कहा, ''मान्या ठीक कह रही है। हम पेड़ पौधे नहीं हटाएंगे।''

आगत को गुस्सा आ गया उसने कहा, ''आप सब दीदी की तरफ से बोलते हैं। मेरी बात कोई नहीं मानता।''

आगत मम्मी के पास गया और बोला, ''मम्मी सब लोग मान्या दीदी की बात मानते हैं, सब उसी को प्यार करते हैं, मुझको कोई नहीं करता।''

मम्मी ने आगत को प्यार करते हुए पूछा, ''क्या हुआ, मेरे आगत की बात कोई क्यों नहीं मान रहा है?''

मान्या बोली, ''मम्मी यह कह रहा है लॉन से पौधे हटवा दो क्योंकि यह क्रिकेट खेल पाता।''

मम्मी ने कहा, ''ठीक है हम आज ही सारे पेड़-पौधे कटवा देंगे।''

मान्या ने आश्चर्य से कहा, ''मम्मी आप यह क्या कह रही हैं? पेड़-पौधे तो हमारे लिए कितने जरूरी होते हैं।'' मम्मी ने कहा, ''ठीक है पेड़-पौधे जरूरी होते हैं पर हमारे आगत को क्रिकेट खेलना है। वह भी तो जरूरी है।''

यह सुनकर आगत प्रसन्न होकर नाचने लगा। वह मम्मी के गले लग गया। ''मम्मी अगर सब लोग ऐसे ही पेड़-पौधे काट देंगे तो हमें खाना कैसे मिलेगा'' मान्या ने पूछा।

''आगत खाना नहीं खाएगा'' मम्मी ने कहा।

आगत बोला, ''हां हां मैं खाना और फल नहीं खाऊंगा, मैं पिज्जा खाऊंगा।''

मान्या ने कहा, ''बुद्धू! जब अनाज नहीं होगा तो पिज्जा भी नहीं बनेगा।''

आगत ने कुछ सोचा फिर बोला, ''मैं कम खा लूंगा थोड़े पौधे रहने देते हैं।''

मान्या ने कहा, ''जब पेड़ नहीं होंगे तो लकड़ी नहीं होगी फिर क्रिकेट का बैट कैसे बनेगा?''

''हम एक पेड़ बचा लेंगे बैट बनाने के लिए'' आगत ने कहा।

''पर मम्मी अगर सब लोग ऐसे ही पेड़-पौधे कटवा देंगे तो ऑक्सीजन कैसे बनेगी'' मान्या ने कहा।

आगत ने कहा, ''मैंने तो कभी पेड़ पौधों को ऑक्सीजन बनाते नहीं देखा।''

पापा ने कहा, ''बेटे जब पेड़-पौधों में सूरज की रोशनी से फोटो सिंथेसिस होती है। तब हवा की कार्बन-डाई-ऑक्साइड ऑक्सीजन में बदलती है। उसी ऑक्सीजन से सांस ले कर हम जीवित रहते हैं।''

कर्म

● पवन पहाड़िया

सर सर सर सर चलता सांप,
चूं चूं चूं चूं करती चिड़िया।
मीठा मीठा केवल मीठा,
सूंघ सूंघ कर आती चिड़िया।
दूध दूध बस केवल दूध,
पीना चाहती है बिल्ली।
चूंट चूंट बस चूंट चूंट कर,
नाज चूंटती है इल्ली।
घास हरी बस घास हरी ही,
खाता है केवल खरगोश।
कुतर-कुतर कर कुतर डालना,
शौक चूहों का कैसा दोष।
सबकी अपनी अलग साधना,
सब करते पूरी भरपूर।
तुम भी अपना फर्ज निभाओ,
भाग रहे क्यों डर कर दूर।

– नेह, नागौर (राजस्थान)
मोबा.-9636594009

मां

● डॉ. हरिश्चंद्र बोरकर

मां न मुझे तुम छोटा मानो,
बड़ा हो गया, अब तो जानो।
पहले जैसा अब न रोता,
छोड़ बिछौना कहीं न सोता।
बात-बात पर हठ न करता,
फर्क जरा तुम इतना जानो।
मां, न लगाओ काजल मुझको,
अभी न भाए माला मुझको।
'फ्राक' अभी ना, 'फुल' दो मुझको,
बड़ा हो गया, इतना जानो।
कहां अभी मैं नंगा घूमता?
कहां बिछौना गीला करता?
कहां जागकर तुम्हें जगाता?
भेद जरा सा इतना जानो।
मां, न मुझे, तुम छोटा मानो,
बड़ा हो गया, इतना जानो।

– रेंगेपार (कोहली), सड़क पिंपलगांव,
भंडारा (महाराष्ट्र) मोबा.- 9422890937

पीपल

● सुरेश चंद्र 'सर्वहारा'

पेड़ निराला पीपल का,
लगता है कितना प्यारा।
ऊंचा, घेर - घुमेर हुआ,
फैला बन कर छतनारा।
चलती है जब तनिक हवा,
डोल-डोल जाते पत्ते।
मधुमक्खी ने बना दिए,
डाली पर अनगिन छत्ते।
फल इसके पक्षी खाते,
पत्ते पशुओं का चारा।
प्राण वायु देकर करता,
वातावरण शुद्ध सारा।
उपयोगी पावन पीपल,
सदियों से पूजा जाता।
धरती की शोभा इससे,
जीवन से गहरा नाता।

– 3 फ 22 विज्ञान नगर, कोटा (राज.)
मोबा.-9928539446

"तो क्या हुआ आगत ऑक्सीजन का सिलेंडर ले कर खेलेगा।" मम्मी ने मुस्कुराते हुए कहा।

अब आगत सोच में पड़ गया उसने कहा, "सिलेंडर लेकर तो मैं दौड़ भी नहीं पाऊंगा।" पापा, मम्मी को देखकर मुस्कुराए और बोले, "तो क्या हुआ खड़े-खड़े खेलना।"

"खड़े-खड़े भी कहीं कोई क्रिकेट खेलता है।" आगत ने सोचा। आगत को तो पता ही नहीं था कि पेड़-पौधे कितने काम के होते हैं।

उसने कहा, "इसका मतलब हुआ कि पेड़-पौधों के बिना हम जीवित नहीं रह सकते।"

वह धीरे से बोला, "ठीक है फिर हम क्रिकेट नहीं खेलेंगे।" पापा ने कहा, "अरे वाह, मेरा बेटा क्रिकेट क्यों नहीं खेलेगा। खेलना तो हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी होता है।"

आगत ने कहा, "कैसे खेल सकते हैं। जब खेलो मेरी गेंद पेड़-पौधों में चली जाती है फिर आप सब डांटते हैं।"

अचानक उसे अपनी चोट याद आ गई। उसने कहा, "और इसीलिए मेरे खून भी निकला।"

"बेटे! पेड़-पौधों की वजह से खून नहीं निकला। तुम गलत जगह खेल रहे थे। इसलिए तुम्हें चोट लगी। क्रिकेट खेलना है तो पार्क में चलो हम भी खेलेंगे", पापा ने कहा।

यह सुन कर आगत उत्साहित हो गया, "पापा! आप भी खेलेंगे? देखिएगा, मैं आपको आउट कर दूंगा।"

मान्या ने हंसते हुए पूछा, "अब तो पेड़-पौधे नहीं काटोगे?"

"कभी नहीं, अब तो वह मेरे सबसे अच्छे दोस्त हैं। हमें पता चल गया कि पेड़ की लकड़ी से ही बैट बनता है। मैं खूब पेड़ लगाऊंगा।"

"मुझे ऑक्सीजन सिलेंडर भी नहीं लेना पड़ेगा, फिर मैं खूब दौड़ूंगा और सौ रन बनाऊंगा।" आगत अपनी ही धुन में बोला। पापा मम्मी और मान्या हंसने लगे।

– 5/41 विराम खंड, गोमतीनगर, लखनऊ (उ.प्र.)
मोबाइल - 9839022552

कहानी :

जीत का जश्न

● मीरा सिंह 'मीरा'

प्रहरी वन के सभी पशु पक्षी चिंता मग्न थे। होते भी क्यों नहीं? बात ही कुछ ऐसी थी। बीते शाम गोलू बंदर पास के शहर में कुछ खरीदारी करने गया था। लौटते वक्त उसकी नजर आम के पेड़ के नीचे खड़े बोलेरो एवं बाइक पर पड़ी। वहां खड़े सेठ रामलाल तीन चार लोगों से बातें कर रहे थे। गोलू सुस्ताने की नियत से उसी पेड़ पर जा बैठा। नीचे से खुसर-फुसर की तेज आवाजें आ रही थी। वह कान लगाकर सुनने लगा।

"सेठ जी फैक्टरी कब तक लगानी है?"

"अरे भाई, जितनी जल्दी काम शुरू करो, उतना ही बेहतर होगा।"

"मगर सेठ जी, प्रहरी वन तो बहुत घना है। साफ करने में बहुत समय लगेगा।"

"क्या बात कर रहे हो भाई? अरे, हाथ से थोड़े साफ करना है। आधुनिक मशीनें आएंगी... दो चार दिन में पूरा जंगल सफाचट हो जाएगा ...।"

"सो तो ठीक है सेठ जी! सुना है इसमें कई खूंखार जानवर रहते हैं। उन सबका क्या होगा? मीडिया को अगर भनक लग गई तो बखेड़ा खड़ा कर देंगे सब ...?

"तुम इसकी चिंता क्यों कर रहे हो। यह सब मेरे ऊपर छोड़ दो। तुम बस फैक्टरी का इस्टीमेट बनाओ। मैं सब संभाल लूंगा। कोई पहली बार थोड़े ही काम करवा रहा हूं ... जानते नहीं हो क्या?"

''ठीक है सेठ जी। मैं चलता हूं '' कहकर वह मोटर साइकिल स्टार्ट कर चले गया। "ठहरो ... फिर अटैची से रुपए की कुछ गड्डियां थमाते हुए बोला, ''ये लो, कुछ पेशगी रख लो।" इसके साथ ही गाड़ी व बाईक धूल उड़ाते, धुंआ छोड़ते शहर की ओर दौड़ पड़ी। उनकी बातों को सुनकर गोलू बंदर हक्का-बक्का रह गया।

प्रहरी वन पहुंचकर मंत्री भालूराम सहित समस्त वन प्राणियों को आने वाले संकट के बारे में उसने बताया। राजा शेरसिंह कुछ दिनों से विदेश दौरे पर थे। मंत्री जी से खबर मिलते ही वे भी तुरंत प्रहरी वन लौट आए।

भावी संकट को देखते हुए आपात सभा का आयोजन किया गया। शेरसिंह ने कहा, ''हम सब जानते हैं मनुष्य स्वभाव से स्वार्थी होता है। न खुद चैन से रहता है न दूसरे को चैन से रहने देता है। हम वन्य प्राणी अमन चैन से जंगल में वास करते हैं पर

महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग

बागेश्वर

क्या आप इन्हें जानते हैं? 1.श्रीमती इंदिरा गांधी (प्रथम महिला प्रधानमंत्री), 2.श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल (प्रथम महिला राष्ट्रपति), 3.कल्पना चावला (अंतरिक्ष यात्री), 4.हीमा दास(धावक), 5.एम मैरीकॉम (मुक्केबाज) 6.किरन बेदी (आई.पी.एस.अधिकारी)

ये वे महिलाएं हैं जिन्होंने पुरुषों के ही समान देश का नाम रोशन किया है तथा अपने-अपने क्षेत्र में नए मुकाम हासिल किए हैं, तथा अपनी एक अलग पहचान बनाई है। क्षेत्र चाहे राजनीति हो या फिर खेल, बिजनेस हो या समाज सेवा हो, कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो महिलाओं की प्रतिभा से अनछुआ रह गया हो। ऐसी प्रभावशाली महिलाएं जो हर वर्ग के लिए मिसाल बनी हैं तथा प्रत्येक वर्ग को नए मुकाम हासिल करने की प्रेरणा देती हैं। एक नए राष्ट्र के निर्माण हेतु स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर क्यों न हम भी बेटियों को बचाने व शिक्षित करने की शपथ लें।

आइए हम संकल्प लें कि -

- अपने घर तथा आस-पड़ोस में बालिका का जन्म होने पर खुशी एवं उत्सव मनाएं।
- बेटियों को घर से बाहर जाने, उच्च शिक्षा प्राप्त करने, व्यवसाय, नौकरी करने, जन समुदाय तक सामंजस्य स्थापित करने हेतु प्रेरित एवं सहयोग करेंगे।
- बेटियों एवं महिलाओं के प्रति भेद-भाव नहीं करेंगे।
- एक ऐसे समाज/समुदाय की संकल्पना करेंगे जिसमें लड़का/लड़की को एक समान शिक्षा एवं स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त हो।
- दहेज, बेटे द्वारा वंश चलाने की प्रथा, अंतिम संस्कार तथा संपत्ति और विरासत की भावनाओं का सदैव विरोध करेंगे।
- अपने घर तथा आस-पड़ोस में उत्कृष्ट कार्य करने वाली बालिका/महिलाओं को शासकीय योजनाओं के अंतर्गत पुरस्कृत करने हेतु प्रयास करेंगे तथा उसका व्यापक प्रचार प्रसार करेंगे, ताकि जन समुदाय के मध्य बेटियों के प्रति जागरूकता स्थापित की जा सके
- अल्ट्रासोनोग्राफी तकनीक का दुरुपयोग न करेंगे न होने देंगे तथा इसकी शिकायत कानून/उच्चाधिकारियों तक पहुंचाएंगे।

(राजेंद्रप्रसाद बिष्ट)
जिला कार्यक्रम अधिकारी
बागेश्वर

(सुंदरसिंह पपोली)
मुख्य विकास अधिकारी
बागेश्वर

(रंजना राजगुरु)
जिलाधिकारी
बागेश्वर

उसे यह गंवारा नहीं। मूर्ख इंसान नहीं जानता कि हम सब को बेघर करके वह भी चैन से नहीं रह पाएगा। साथियो! हमें उनके विनाशकारी कदमों को रोकना होगा। अपने अस्तित्व की रक्षा करनी होगी। प्रहरी वन को बचाना होगा।" सभी जानवर एक स्वर में बोले। ''प्रहरी वन बचाएंगे, अपना घर बचाएंगे।'' सभी ने अपने अनमोल सुझाव सभा में रखे। अंत में गोलू बंदर की बारी आई। वह सिर खुजलाते हुए बोला, ''क्यों नहीं हम सब वन्य प्राणी दो दिनों के लिए शहर चलें।" चिंतामग्न सियार खिसियाकर बोला, "चुप मजाक मत कर ..."

"मैं गंभीरता से कह रहा हूं हुजूर।" वह हाथ जोड़कर बोला। "वो भला क्यों?" शेर सिंह ने गुर्राते हुए पूछा। इस पर गोलू समझाते हुए बोला, ''हम सब वन्य प्राणियों को सड़क पर उतरता देख कोई तो होगा जो हमारी समस्या समझेगा। मैंने सुना है कि सब इंसान बुरे नहीं होते। हाथी दादा तनिक याद करो ... पिछले बार जब हम जंगल से शहर गए थे तो क्या देखे थे ... ? याद आया कुछ ... ?"

तभी दादा कुछ सोचते हुए बोले "हुजुर! सब इंसान बुरे नहीं होते। उस वक्त हमने कुछ लोगों को वृक्ष कटने से बचाते हुए देखा। वे सब नारा लगा रहे थे। 'वृक्ष लगाओ', जंगल बचाओ' शेष मंत्रीगण भी गोलू की राय के पक्षधर थे।

अगली सुबह सभी वन्य प्राणी शहर के गली कूचे, चौक एवं चौराहे पर बिखर गए। राजा शेर सिंह की दहाड़, हाथी दादा की चिंघाड़, बंदर व लंगूर की धमा चौकड़ी सियार की डरावनी आवाज से शहर की रफ्तार थम गई। लोग डर से भागने लगे। चारों तरफ अफरा तफरी का माहौल बन गया। प्रशासन के हाथ पांव फूल रहे थे। पुलिस को एक बहेलिया के बारे में सूचना मिली जो पास ही के नुक्कड़ पर रहता था। उसे वन्य प्राणियों से बातों के लिए तैयार किया गया। शेर सिंह ने बहेलिए को प्रहरी वन पर मंडरा रहे संकट के बारे में बताया और आगाह किया कि हम वन्य प्राणी इस बार चुप नहीं बैठेंगे। जाकर अपनी सरकार को बता दो। हकीकत जानकर प्रशासन के कान खड़े हो गए।

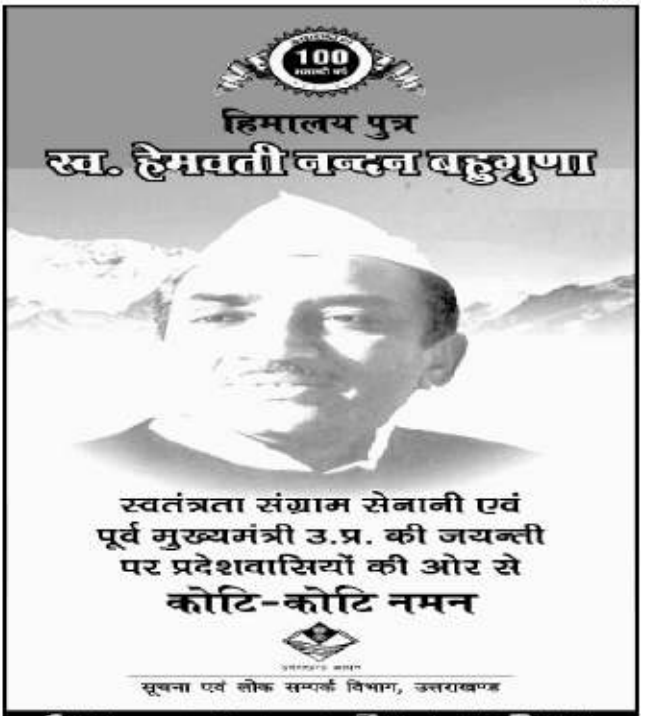

बहेलिया प्रशासन से बात कर दुबारा शेरसिंह के पास आया। उसने कहा, ''सरकार प्रहरी वन व उसमें निवास करने वाले प्राणियों की रक्षा के लिए वचनबद्ध है।'' बहेलिया ने जब सरकार का फरमान सुनाया तो सभी वन्य प्राणी खुशी से उछल पड़े। जीत का जश्न मनाते, नाचते गाते सभी वन्य प्राणी राजा शेर सिंह के साथ अपने प्यारे प्रहरी वन की ओर चल पड़े।

- महारानी उषारानी बालिका उच्च विद्यालय डुमरांव,
जिला-बक्सर, बिहार, मोबाइल - 9304674258

कहानी :

दादी की दादी

● अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन'

''दादी जी! कोई मजेदार कहानी सुनाइए।'' अपनी दादी की रजाई में घुसने के बाद एकता बोली।

''आज तुझे मैं सूरज और चंद्रमा की कहानी सुनाती हूं। सूरज और चंद्रमा सगे भाई हैं। एक बार की बात है, उन्हें कहीं दावत खाने का निमंत्रण मिला। दोनों भाई जब घर से निकलने लगे ......।''

''गलत ...... दादी बिल्कुल गलत। सूरज और चंद्रमा कोई आदमी थोड़े न हैं जो भाई-भाई होंगे और दावत खाने जाएंगे। सूरज तो एक तारा है। हमारी धरती इसके चारों तरफ घूमती है और चंद्रमा हमारी धरती का एक उपग्रह है जो धरती के चारों ओर घूमता है।'' दादी की बात बीच में ही काट कर एकता बोल पड़ी।

''ऐसा नहीं कहते बेटी। सूरज और चंद्रमा देवता हैं। इनकी पूजा की जाती है।'' दादी ने कहा।

''इसका मतलब दादी और कुछ नहीं जानतीं। सुनिए मैं बताती हूं।'' एकता ने बताना शुरू किया, ''अब से कई हजार करोड़ साल पहले अंतरिक्ष में कई प्रकार के गैसों के मिलने से एक जोरदार धमाका हुआ था। उस धमाके से आग का एक बहुत बड़ा गोला बना। इसी गोले को सूरज कहा जाता है। धमाके के कारण सूरज के चारों ओर धूल के कण फैल गए। फिर गुरुत्वाकर्षण शक्ति के कारण धूल के कण आपस में जुड़कर पत्थर बन गए। इस प्रकार हमारी पृथ्वी तथा ढेर सारे दूसरे ग्रह बने।''

''देख चिड़िया! सूरज के बारे में तो मुझको नहीं पता लेकिन चंद्रमा तो समुद्र मंथन से निकला था। पौराणिक कथा है कि अमृत की तलाश के लिए देवताओं तथा राक्षसों ने मिलकर समुद्र का मंथन किया था। जैसे मथानी से दही को मथा जाता है उसी तरह मंदराचल पर्वत को मथानी तथा शेषनाग को रस्सी बनाकर देवताओं और राक्षसों ने समुद्र को मथा था। उस मंथन में समुद्र के अंदर से कुल चौदह प्रकार के रत्न निकले थे, जिसमें एक चंद्रमा था।'' दादी ने कहा।

''नहीं दादी यह बात भी गलत है। मैं बताती हूं कि चंद्रमा कैसे बना। हमारी धरती की तरह ही ढेर सारे छोटे-बड़े ग्रह सूरज के चारों तरफ तेजी से चक्कर लगा रहे थे। चक्कर लगाते-लगाते थिया नाम का एक बड़ा सा ग्रह बहुत तेजी से आ कर धरती से टकरा गया। उस टक्कर से धरती का एक हिस्सा टूट कर उससे अलग हो गया। धरती से टूटा यही हिस्सा चंद्रमा बन गया और धरती के चारों ओर चक्कर लगाने लगा।'' एकता ने बताया।

''अरी, तू तो बिल्कुल अनोखी बातें बता रही है रे। ये सब तुमने जाना कहां से?'' दादी ने आश्चर्य से पूछा।

''यह सब मेरी विज्ञान की पुस्तक में लिखा है। वहीं से तो पढ़ा है मैंने।'' एकता बोली।

''तो चलो तुमको सोनपरी की कहानी सुनाती हूं। बड़ी-बड़ी आंखों, लंबे बालों तथा सुनहले पंखों वाली एक सुंदर सी परी थी जिसका नाम था सोनपरी। वह परीलोक में रहती थी।''

''दादी यह परीलोक कहां है?'' दादी ने अभी कहानी शुरू ही की थी कि एकता ने पूछ लिया।

'परीलोक? आसमान के उस पार एक सुंदर सी जगह है जहां परियां रहती हैं। परियों के उस देश को परीलोक कहते हैं।'' दादी ने बताया।

व्यक्तित्व

वीर चक्र से सम्मानित : अभिनंदन

● विमला जोशी 'विभा'

पाकिस्तान के एफ-16 विमान को मार गिराने वाले मिग-21 के पायलट विंग कमांडर वर्धमान अभिनंदन को युद्ध के दौरान मिलने वाले तीसरे बड़े पुरस्कार वीर चक्र से सम्मानित किया जाएगा। स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने सेना एवं सुरक्षा बलों के 132 बहादुरी पुरस्कारों की घोषणा की। बहादुरी पुरस्कारों में से दो कीर्ति चक्र, एक वीर चक्र, 14 शौर्य चक्र, आठ बार टू सेना मेडल, 90 सेना मैडल, पांच नौसेना मैडल, सात वायु सेना मैडल , पांच युद्ध सेवा मैडल आदि पुरस्कार सम्मिलित हैं। वीरता पुरस्कार के लिए 6 सम्मान दिए जाते हैं। युद्धकाल में परमवीर चक्र, महावीर चक्र और वीर चक्र सम्मान सर्वोच्च त्याग और बलिदान के लिए दिए जाते हैं। जबकि अशोक चक्र, कीर्ति चक्र तथा शौर्य चक्र शांतिकाल में सर्वोच्च सेवा और बलिदान के लिए दिए जाते हैं। वीर चक्र सहित अन्य सम्मान सेना में मरणोपरांत भी दिए जाते हैं।

21 जून,1983 को तमिलनाडु के तिरुपनमूर में जन्मे अभिनंदन भारतीय वायुसेना के अधिकारी हैं। उनके दादा तथा पिता ने भी भारतीय सेना में महत्वपूर्ण पदों पर जिम्मेदारी निभाई है। उनकी पत्नी भी हेलीकॉप्टर पायलट से सेवानिवृत्त हुई हैं। 12 फरवरी, 2019 को पाकिस्तानी विमान को मार गिराने के बाद भारतीय विमान जिसके पायलट अभिनंदन थे, क्रैश हो गया। अभिनंदन पैराशूट से कूद गए। दुर्भाग्य से वे पाकिस्तानी सीमा में पहुंच गए। पाकिस्तान ने उन्हें बंदी बना लिया। परंतु पाकिस्तान को जेनेवा संधि के अनुपालन में अभिनंदन को भारत को वापस करना पड़ा। अभिनंदन ने जिस वीरता का परिचय दिया। उससे सारा देश गद्‌गद् है। भारत भूमि के लिए उनके त्याग को देखते हुए वे समूचे हिंदुस्तान के चेहते बन गए। अभिनंदन आज भी भारतीय जवानों को नई ऊर्जा देते हैं। अभिनंदन स्टाइल की मूंछें युवाओं को आजकल बहुत पसंद हैं।

-नवाबी रोड, हल्द्वानी, नैनीताल
मोबाइल - 9458353474

''नहीं दादी! यह भी गलत है। अभी तक तो इस धरती के अलावा किसी भी दूसरे ऐसे ग्रह के बारे में पता नहीं चला सका है, जहां जीवन हो। वैज्ञानिक लोग अंतरिक्ष में तथा चंद्रमा और मंगल, बुध ग्रहों पर भी जा चुके हैं। अगर सचमुच में परीलोक जैसी कोई जगह होती तो वैज्ञानिकों को पता तो चल ही गया होता।'' एकता ने कहा।

''तो इसका मतलब कि परियों की जो कहानियां हम बचपन से ही सुनते आ रहे हैं वे सारी गलत हैं?'' दादी ने पूछा।

''हां दादी! अखबार में भी छपा था कि परियों की बातें सिर्फ आदमी के मन की कल्पना है। आप कोई सच्ची-मुच्ची की कहानी सुनाइए।''

''सच्ची-मुच्ची की कहानी? अच्छा चलो एक जादूगर की कहानी सुनाती हूं। कहानी नहीं बल्कि अपनी आंखों देखी सच्ची बात बताती हूं। कई साल पहले हमारे गांव के मेले में एक जादूगर आया था। वह अपने मुंह से आग उगलता था। हवा में हाथ घुमाकर कोई भी चीज मंगा लेता था। देखते ही देखते किसी भी चीज को हवा में गायब कर देता था।''

''अरी दादी! यह जादू-वादू कुछ नहीं होता..... इसमें बस थोड़ा सा विज्ञान और थोड़ी सी हाथ की सफाई होती है। एक दिन मेरे स्कूल में भी एक जादूगर आया था। उसने खुद ही बताया कि जादू वास्तव में हाथ की सफाई होती है। उसने भी अपने मुंह से आग उगली थी। बाद में बताया कि फास्फोरस यानी गंधक को मुंह में रखने के बाद बाहर थूक देने से वह जल उठता है। देखने वालों को लगता है कि जादूगर मुंह से आग उगल रहा है। इसी तरह उसने सबके सामने एक हड्डी रखी और मंत्र फूंक कर उसके ऊपर पानी डाला तो हड्डी से धुआं निकलने लगा। सभी समझे कि कोई जादू है। लेकिन जादूगर ने बताया कि उसने हड्डी पर पहले से ही गंधक का लेप लगाकर सुखा दिया था। गंधक पर पानी पड़ा तो वह जल उठा।''

''अरे बाप रे! तू तो मेरी भी दादी निकली। जाने कितनी नई नई बातें बता दी तुमने मुझको।'' दादी ने हंसते हुए कहा और एकता को सीने से चिपकाकर उसकी पीठ पर थपकी देने लगीं।

-सी-2, एच पार्क, महानगर लखनऊ- 226006
मोबा. 9415215139

कहानी :

सब कुछ बदल गया

● फारूख हुसैन

प्रहरी वन में आज चारों ओर खुशी दिखाई दे रही थी। जिसे देखो वही खुश नजर आ रहा था। आज महाराज शेरसिंह के दोस्त बहादुर सिंह नंदनवन से उनसे मिलने आ रहे थे। इस कारण महाराज शेरसिंह ने बहुत बड़े भोज का आयोजन किया था।

आखिर शाम होते ही बहादुर सिंह प्रहरी वन में पहुंच गए। सभी जानवर उनके स्वागत में लग गए। देर रात तक प्रोग्राम चलता रहा। बहादुर सिंह दो दिनों तक प्रहरी वन में रूके। शेरसिंह ने उनकी खातिरदारी में कोई कमी नहीं की। लेकिन फिर भी बहादुर सिंह उन्हें खुश नहीं दिखाई दे रहे थे। यह बात शेरसिंह से छुपी नहीं थी। आखिर दो दिनों के बाद बहादुर सिंह वापस अपने घर नंदन वन चले गए। उन्होंने शेरसिंह को भी अपने यहां आने का निमंत्रण दिया।

महाराज शेरसिंह परेशान थे कि उन्होंने अपने दोस्त का इतना अच्छा स्वागत किया। लेकिन फिर भी वह खुश नहीं हुए। शेरसिंह को परेशान देखकर उनके मंत्री जैक तेंदुआ से रहा नहीं गया। महाराज ! क्या बात है, आप कुछ परेशान लग रहे हैं," जैक ने शेरसिंह से पूछा।

"हमने अपने दोस्त बहादुर सिंह की खातिरदारी में कोई कमी नहीं की। फिर भी वह मुझे खुश नहीं दिखाई दिए। आखिर हमने उनकी खातिरदारी में कहां कमी कर दी।" शेरसिंह ने जैक को बताया।

"महाराज इस बात का पता तो हमें उनके पास जाकर ही लगेगा। आखिर वह हमारे स्वागत से खुश क्यों नहीं हुए?" जैक ने शेरसिंह को सुझाव दिया। यह सुनकर उन्हें लगा कि जैक सही कह रहा है। उन्होंने उसी दिन उन्होंने अपने दोस्त बहादुर सिंह के पास खबर भिजवा दी कि वह नंदन वन आ रहे हैं। अगले दिन वह नंदनवन पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्हें ऐसा लगा कि वह स्वर्ग में पहुंच गए हैं। वहां चारों ओर खुशबू ही खुशबू बिखरी हुई थी। हर जगह रास्तों पर फूलों से सजे पेड़ लगे थे। चारों ओर बहुत सफाई दिखाई दे रही थी। बहादुर सिंह उन्हें लेकर वहां पहुंचे जहां उनके स्वागत में बहुत बड़े भोज का आयोजन किया गया था। वहां पहुंचकर उन्हें एक सिंहासन पर बिठाया गया। थोड़ी ही देर में उन्हें भोजन के लिए बुलाया गया। उन्होंने देखा भोजन की थाली बड़े सलीके से सजाई गई थी। कहीं भी फालतू खाना नहीं गिरा। हर काम बड़े अच्छे तरीके से हो रहा था।

तभी उन्हें प्रहरी वन का ध्यान आया। जहां चारों ओर बस गंदगी ही गंदगी थी। कहीं कूड़े का ढेर तो कहीं कीचड़। उनके यहां भोज में बहुत खाना बरबाद हुआ था। उन पर सब जानवरों के पैर पड़ रहे थे। शेरसिंह को यह सोचकर बहुत बुरा लग रहा था कि उन्होंने अपने प्रहरी वन को गंदगी का ढेर बना रखा है। उन्होंने सोच लिया कि वापस पहुंचते ही वह पूरा प्रहरी वन बदल देंगे। यह जानकर वह समझ गए थे कि बहादुरसिंह उनकी इतनी खातिरदारी करने पर भी खुश क्यों नहीं हुए थे।

अगले दिन वह वापस प्रहरी वन आ गए। उन्होंने आते ही प्रहरी वन में फैली गंदगी को हटाने के लिए कहा। जगह-जगह फूलों के पेड़ लगवाए। उन्होंने प्रहरी वन में यह घोषणा भी करवा दी कि बचा हुआ भोजन कहीं फेंकने के बजाय किसी गरीब को दे दिया जाए। जिससे बचा हुआ भोजन खराब न हो। कुछ ही दिनों में प्रहरी वन का रूप बदल गया। अगली बार जब शेरसिंह ने बहादुर सिंह को प्रहरी वन बुलाया तो वहां का बदला हुआ रूप देखकर वह बहुत खुश हुआ। शेरसिंह के चेहरे पर भी खुशी लौट आई। क्योंकि प्रहरी वन में अब सब कुछ बदल गया था।

- अभिव्यक्ति, पलिया कला (खीरी)-262902
मोबा. - 9455368501

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

दीवानसिंह कनवाल, लोक गायक
शाखा प्रबंधक
अल्मोड़ा जिला सहकारी बैंक लि.
शाखा - विकास भवन, अल्मोड़ा
मोबाइल - 9412164787-

समस्त देशवासियों को
73वें स्वतन्त्रता दिवस
की
हार्दिक शुभकामनाएं
हमारा प्रयास
ईमानदारी, विकास
और विश्वास
साथ हैं हम...
उत्तराखण्ड

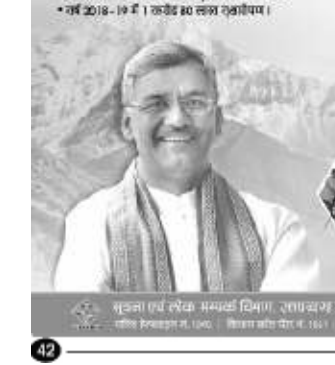

चंद्रयान -2

● डॉ. हेमंत कुमार

जिस चांद को हम पूजा करते हैं। वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि ये चांद भी पृथ्वी की तरह एक ग्रह है। रूस, अमेरिका तथा चीन के बाद भारत पूरे दुनिया में चौथे नंबर का देश हो गया है। जिसने चांद पर साफ्ट लैंडिंग की है। अमेरिका और रूस साठ के दशक में ही अपने मिशन चांद पर भेज चुके हैं। अमेरिका ने अपने 15 मिशन चांद पर भेजे, जिनमें से छह मिशन में 12 इंसान भी चांद पर उतरे। सन् 2013 में चीन ने चैंग-3 चांद पर भेजा। भारत चौथा देश है जिसने चांद पर सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया है।

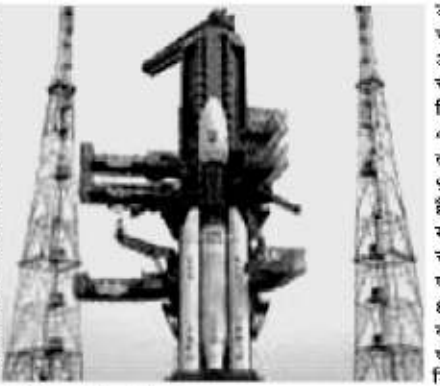

सन् 2008 में इसरो ने चांद पर चंद्रयान-1 का प्रक्षेपण किया। इस प्रक्षेपण के बाद इस बात की पुष्टि हुई कि चांद पर कभी पानी रहा होगा। चंद्रयान-1 के बाद नासा ने 22 जुलाई, 2019 को अपराहन 2.43 बजे श्री हरिकोटा रेंज से चंद्रयान-2 का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण किया है। चंद्रयान-2 में शामिल आर्बिटर, लैंडर और रोवर सभी भारत में बने हैं। इसमें कुल 14 पेलोड हैं। जिनमें से एक अमेरिका(नासा) का है। बाकी 13 पेलोड भारतीय एजेंसियों के हैं। चंद्रयान-2 में लगाए गए अधिकतर उपकरण इसरो की प्रयोगशालाओं में बने हैं। नासा का उपकरण लेजर रेट्रोरिफ्लेक्टर ऐरे है। लैंडर में भेजे गए इस उपकरण का कार्य धरती और चंद्रमा के बीच की दूरी का आंकलन करना है। चंद्रयान-2 का वजन 3,850 किलोग्राम है। यह कुल 45,475 किलोमीटर सफर तय करेगा। इसे बनाने में 978 करोड़ रुपए व्यय हुए हैं। यह लागत दुनिया के सभी मिशनों से कम है। चंद्रयान-2 को चांद पर पहुंचने की अवधि लगभग 84 दिन है। भारतीय मिशन का अधिक समय लेने के पीछे तर्क रॉकेट की डिजाइन, ईंधन व चंद्रयान की स्पीड में भिन्नता का तर्क दिया जा रहा है। चंद्रयान-2 चांद की सतह के आंकड़े एकत्र कर इसरो को भेजेगा। चंद्रयान-2 की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि भारत ने चंद्रयान के माध्यम से दक्षिणी ध्रुव पर लैंडर उतारा है जबकि अभी तक केवल उत्तरी ध्रुव पर लैंडर उतारे गए हैं। चंद्रयान-2 का अगला पड़ाव 7 सितंबर है। इस दिन विक्रम लैंडर चांद के साउथ पोल पर लैंड करेगा। चंद्रयान-2 के प्रेक्षपण के बाद भारत ने समूचे विश्व में अपनी अलग पहचान बनाई है।

गोराडीह, भागलपुर (बिहार)

संस्कृति:

भाई बहन के रिश्ते का त्यौहार : रक्षाबंधन

● कृपालसिंह शीला

रक्षाबंधन भाई व बहन के रिश्ते का प्रसिद्ध त्यौहार है। रक्षा का आशय सुरक्षा से है जबकि बंधन का आशय सुरक्षा के लिए बाध्य होना है। रक्षा बंधन के दिन बहनें अपने भाई के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती हैं कि वे निरंतर तरक्की करें। भाई भी बहन को कुछ न कुछ उपहार देते हैं। वे बहन को उसकी सुरक्षा का आश्वासन भी देते हैं। इतिहास में कई प्रसंग आते हैं जब बहन ने अपने भाई की रक्षा के लिए दुश्मन से प्रतिज्ञा कराई कि वह उसके भाई की रक्षा करेंगे। परंपरागत तौर पर हिंदू समाज में कुल पुरोहित द्वारा घर के सभी लोगों को रक्षा बांधी जाती है। जबकि रक्षा बंधन में बहन भाई के हाथ में राखी बांधती है। इधर काफी समय से देश की सीमा में तैनात सैनिकों को स्थानीय महिलाएं/लड़कियां बतौर बहन राखी बांधती हैं। भारत में डाक विभाग रक्षाबंधन के अवसर पर 50 ग्राम तक राखी वाले लिफाफे के लिए केवल पांच रुपए लेता है। डाक विभाग रक्षा भेजने के लिए आकर्षक लिफाफे की बिक्री भी करता है।

-बसोट, भिकियासैण, अल्मोड़ा

सबसे बड़ा पिरामिड

● श्यामप्रकाश पांडेय

मिस्र देश जो नील नदी का,
बेश कीमती है उपहार।
बड़े पुराने पिरामिडों का,
रचना है अद्भुत संसार।
सबसे ऊंचा बड़ा पिरामिड,
गीजा में है पाया जाता।
सात अजूबों में दुनिया के,
नाम है उसका ऊपर आता।
बाकी छह प्राचीन अजूबे,
नष्ट हो गए समय के साथ।
खड़ा है वह जुझता अकेला,
मिस्र देश का पकड़े हाथ।
नीचे से चौकोर है दिखता,
पर ऊपर त्रिकोण बन जाता।
दूर गगन से देखें जब हम,
है अद्भुत रहस्य भर जाता।
मिस्र देश के राजाओं के,
दफन के लिए बनाए गए।
वास्तु कला के श्रेष्ठ नमूने,
सदा रहे दुनिया में छाए।

- 907, पंचतीर्थ अपार्टमेंट, जोधपुर चार
रास्ता सेटेलाइट, अहमदाबाद- 380015
मो. 9638430340

ककड़ी

● भानुप्रताप सिंह

ककड़ी आई धुलकर खाओ,
बिन पानी प्यास को बुझाओ।
ककड़ी पानी से भरपूर,
करती तन की तपन कपूर।
जिंक विटामिन और फाइबर,
तत्व सभी मौजूद हैं इस पर।
हल्का मीठा इसका स्वाद,
हरती पेट के सभी विषाद।
जब खाओ नमक लगाओ,
गर्मी में नित ककड़ी खाओ।

- ग्राम बलभद्रनगरपुर, पो. सिधांव,
जिला-फतेहपुर (उ.प्र.) - 212663
मोबा. - 9621213335

नाम बताओ

● रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस'

1

गंगा से मैं कम नहीं,
पर पश्चिम को बहती।
दक्षिण भारत के लोगों को,
पावन करती रहती।

2

सूरज की पुत्री कहलाती,
वृज से होकर बहती।
नाग कालिया मैंने पाला,
मेरी श्यामता कहती।

3

भइया नाम बहुत ऊंचा है,
पावन है जल धारा।
भगीरथ ने लाकर इनको,
भारत भाग्य संवारा।

4

आल्हा में स्थान है,
सब लोगों को ध्यान है।
कौन नदी मैं बोलो,
अपनी बुद्धि टटोलो।

5

नहीं जलाशय या समुद्र हूं,
कुछ ऐसा है नाम भले।
पांच आब में बोली जाती,
क्या उतरी कुछ बात गले।

6

साथ रहा गंगा-यमुना का,
नाम त्रिवेणी आया।
लुप्त हुई धारा वह कैसे,
कोई समझ न पाया।

-शिव सदन सुभाष पार्क,
औद्योगिक क्षेत्र कानपुर, हरदोई (उ.प्र.)
मोबाइल-9631339992

[illegible]

मोटर कार

● सुरेशचंद्र दुबे

खूब दौड़ती, मोटर कार,
लगे हुए हैं, पहिए चार।
सभी जगह की, सैर कराती,
ब्रेक लगाने पर, रुक जाती।
डीजल, पेट्रोल, को ही खाती,
जब बिगड़े, तब हमें सताती।
हार्न, जब हम जोर से बजाते,
सुनकर सभी लोग हट जाते।
बहुत तेज, इसकी रफ्तार,
इस पर होते सभी सवार।
दूर दूर तक यह चलती है,
सबको यह अच्छी लगती है।

- 160/13 कविता कुटीर, प्रोफेसर्स
कालोनी, पूर्वी बाईं पास शिवराबाद, कन्नौज
मोबा. - 7607890067

सपने

● सुरेश सौरभ

रात बड़ी मतवाली है,
परी सुहानी आती है।
मीठे सपने लाती है,
बच्चों को सुलाती है।
रंग-बिरंगी अच्छे सपने,
कुछ मीठे कुछ खट्टे सपने।
कुछ सपने चौंकाते हैं,
कुछ रुलाते कुछ हंसाते हैं।
कभी स्वर्ग की, कभी अंबर की
सब की सैर कराते हैं।
कुछ भी हो किंतु
सपने सब को भाते हैं।

- मो. शरीफपुर लखीमपुर, खीरी (उ.प्र.)

टमाटर

● प्रा. गुप्ता

लाल टमाटर हैं,
पौष्टिकता से भरे हुए।
सबको अच्छे लगते हैं,
लालिमा से भरे हुए।
टमाटर का सूप तो भाई,
सबको बहुत ही भाता है।
सास बनाकर लेता कोई,
कोई सब्जी में इसे खाता है।

- सी-18 महर्षिनगर विस्तार योजना

कहानी:

सफेद कबूतर

● डॉ. कामना सिंह

दो साल पहले की बात है। तब मैंने पहली कक्षा पास की थी। पापा का तबादला अहमदाबाद हुआ, तो हमें नए शहर में आना पड़ा था। नई कक्षा ही नहीं, नया शहर, नया स्कूल और नई सहेलियां। मेरा बिल्कुल मन नहीं लगता था वहां। हमेशा अपनी पुरानी सहेलियां याद आती थीं।

एक दिन सुबह उठकर मैं बालकनी में गई, तो चौंक पड़ी। वहां एक कबूतर बैठा हुआ था। वह सफेद कबूतर यहां कैसे आया? अभी तक तो मुझे अपने आस-पास सभी सलेटी रंग के कबूतर दिखे थे।

जो भी हो, यह सफेद कबूतर बड़ा सुंदर था। मुझे इस पर तरस आया। बेचारा! शायद अपने साथियों से बिछुड़ गया था। मैंने एक कटोरी में पानी रख दिया। अनाज के कुछ दाने भी बिखेर दिए। सफेद कबूतर ने उनकी तरफ देखा तक नहीं। डर के मारे वहां से उड़ा और पास वाले फ्लैट की बालकनी में बैठ गया।

मैं भी अंदर आ गई। कई दिन बाद जब फिर बालकनी में गई, तो पहले से बैठा सफेद कबूतर मुझे देखकर वहां से उड़ गया। मेरी बालकनी से उड़कर वह सलेटी रंग के कबूतरों के झुंड में गया। पर वहां किसी ने उसमें रुचि न ली। वे इधर-उधर उड़ गए। सफेद कबूतर फिर अकेले का अकेला रह गया।

मैं बड़े कौतूहल से उसकी ओर देखती रही। वह अब उड़कर पड़ोस की बालकनी में आ बैठा था। पर किसी काम से उनकी नौकरानी वहां आई, तो वह फिर उड़ा और एक खिड़की पर बैठ गया।

मैं समझ गई। एकदम अकेला है यह, मेरी तरह। मेरी भी तो इस नए स्कूल में अब तक कोई सहेली नहीं बनी थी। हर बार ऐसा ही होता है। पापा के ट्रांसफर की वजह से दीदी भी हमेशा यही शिकायत करती है।

एक दिन मैं कमरे में बैठी होमवर्क कर रही थी कि कौओं की कांव-कांव से मेरा ध्यान खिंचा। मैं उठकर बालकनी में आई। देखा, तो एक छोटे से सलेटी कबूतर को दो तीन कौए मिलकर तंग कर रहे थे। उसे छोटा बच्चा जानकर वे एक साथ मिलकर सता रहे थे। बाकी सलेटी कबूतर दूर से देख तो रहे थे, पर डर के मारे पास आने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे थे। छोटा सा बच्चा कबूतर कौओं की चोंच की चोट से अधमरा हो गया था।

अचानक खिड़की पर बैठा सफेद कबूतर उड़ा और उसने बदमाश कौओं पर हल्ला बोल दिया। इस अचानक मदद से छोटे कबूतर में भी हिम्मत आ गई। कौओं के अपने पास से हटते ही उसने सफेद कबूतर का साथ पकड़ा और वहां से भागकर जान बचा ली। अभी तक दूर से तमाशा देखने वाले बाकी सलेटी कबूतर भी उन दोनों के पास आ पहुंचे। तीनों कौए समझ गए कि शिकार उनके हाथ से निकल गया है। वे खिसियाकर उड़ गए।

उस दिन के बाद सफेद कबूतर मुझे कभी अकेला नहीं दिखा। बच्चा कबूतर उसका दोस्त जो बन चुका था। बाकी सलेटी कबूतरों ने भी उससे नाता जोड़ लिया था। सफेद कबूतर अब न अकेला था और न उदास। मेरे हाथों रखा दाना-पानी भी उसने खाना शुरू कर दिया था।

मैं भी खुश थी। जान गई थी कि सभी को एक दिन दोस्त मिल जाते हैं। अपने नए शहर के नए स्कूल में अब मैं भी नई सहेली जरूर-जरूर पा जाऊंगी। सफेद कबूतर ने मुझमें नया भरोसा भर दिया था। सचमुच मुझे कुछ दिनों में वैधवी मिल गई थी।

– फ्लोर नं. 903, टावर बी, पार्कर वी, ब्लॉक ए,
मौलियाखान, नई दिल्ली-110055
मोबाइल – 8287687712

फूलों के नाम ढूंढो

● राजेश मुजरा

इस वर्ग पहेली में 13 सुन्दर, रंग-बिरंगे एवं खुशबूदार फूलों के नाम छुपे हैं। जिन्हें आपको ढूंढना है। ये नाम सीधे, उल्टे, आड़े, तिरछे एवं खड़े हैं।

ही	बे	गु	ड़	ह	ल	पा
जू	ला	ल	ल	प	ल	रि
ब	म	मा	ग	दा	श	जा
क	ग	ह	रा	क	ऊ	त
रा	म्पा	र	चां	त	लि	दी
च	मे	ली	द	की	रा	ली
नी	र	ज	नी	गं	धा	नी

राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी संपन्न

नैनीताल। बालप्रहरी, बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा तथा श्री अरविंद आश्रम नैनीताल के संयुक्त तत्वावधान में वन निवास, श्री अरविंद आश्रम नैनीताल में 8, 9 तथा 10 जून, 2019 को आयोजित 14 वीं राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी का उद्घाटन बच्चों ने 14 दीप जलाकर किया। प्रारंभ में डॉ. भैरूंलाल गर्ग, डॉ. राजकिशोर सिंह आदि अतिथियों ने बाल कवि सम्मेलन के 16 कवि एवं कवयित्रियों को बैज लगाकर मंच पर बैठाया। बाल कवि सम्मेलन की अध्यक्षता कक्षा 7 के छात्र नीरज कुमार ने की। संचालन विनय मेर (कक्षा 9) तथा भास्कर बिष्ट (कक्षा 7) ने संयुक्त रूप से किया। बाल कवि सम्मेलन में सरस्वती स्कूल रामगढ़ के शंकर बिष्ट, विनय मेर, तनुजा दरम्वाल, खुशी दरम्वाल, काजल, रा.बा.इ.कालेज तल्ला रामगढ़ की प्रियंका आर्या, आस्था भट्ट, निशा, श्री नारायण स्वामी रा.इ.का.तल्ला रामगढ़ के नीरज कुमार, सरस्वती विद्या मंदिर रामगढ़ के नितिन सुयाल, चित्रा जोशी, भास्कर बिष्ट, कविता तिवारी, गरिमा जोशी, राजकीय जू.हाईस्कूल पिऊड़ाधाना के देवेन्द्रसिंह सहित 16 बच्चों ने स्वरचित कविताओं का वाचन किया।

8 जून को 'बच्चे और बाल पत्रिकाएं' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता डॉ.शकेश चक्र ने की। इस सत्र को बालवाटिका के संपादक डॉ. भैरूंलाल गर्ग, संगीता सेठी, हरीशचंद्र बोरकर आदि ने संबोधित किया। डॉ.करुणा पांडेय, कमलेश चौधरी, शशि ओझा, मेजर गोविन्दराज, नरेंद्र परिहार आदि ने खुले सत्र में अपनी बात रखी। श्री अरविंद आश्रम की ओर से श्रीमती अंजू खन्ना ने सभी का स्वागत किया।

भंडारा, महाराष्ट्र से आए डॉ. जोगानंद बोरकर के 75 वर्ष पूरे होने पर उनके सम्मान में आयोजित काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता डॉ.उमा ने की। डॉ. सतीश गुप्ता, शंभु खोरंब, हीरालाल सक्सेना, रमाकांत कोसलिया, डॉ. अशोक गुलशन, श्याम मदनाल, सुशील सहित, रफीक नागौरी, कृष्णचंद्र चंद, डॉ. डी.सिंह, देवीप्रसाद पांडेय, डॉ. दिनेश प्रसाद, इकराम सुल्ताना, डॉ. सुषमा सिंह, नरेश कुमार मौर्य, गुडविन मसीह, खुशालसिंह खनी, हेमा पाण्डे, विमला भंडारी, अजीतसिंह, चक्रधर शुक्ल, डॉ. सुशील सागर, रिहाना अंसारी, पी. के. उपाध्याय, नारायण सिंह, विमला भाटिया व प्रेमसिंह नाराज सहित 42 कवि और कवयित्रियों ने कविता पाठ किया।

9 जून को बच्चों की कथा गोष्ठी के बाद 'मोबाइल, बच्चे और बालसाहित्य' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता बालवाटिका के संपादक डॉ.भैरूंलाल गर्ग ने की। इस सत्र को वरिष्ठ साहित्यकार तथा महादेवी वर्मा सृजन पीठ के पूर्व निदेशक डॉ. लक्ष्मणसिंह बिष्ट 'बटरोही', भारत ज्ञान विज्ञान समिति उत्तराखंड के अध्यक्ष विजय भट्ट, डॉ. हरदेवसिंह धोनाल, के.पी.एस. अधिकारी, सोहनलाल आदि ने संबोधित किया। इस सत्र में बालवाटिका के पर्यावरण विशेषांक, ज्ञान विज्ञान बुलेटिन के बालसाहित्य विशेषांक सहित जयसिंह आशावत, राजा चौरसिया, डॉ. रमेश आनंद, गौरीशंकर वैश्य, अश्वनी पाठक, दामोदर जोशी, नारायणसिंह मधुकर, दामोदर जोशी 'देवांशु', चंद्रभान 'चंद्र', स्नेहलता सहित 12 साहित्यकारों की पुस्तकों का लोकार्पण हुआ।

भोजन के बाद 'बच्चे और बाल कविता' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता डॉ.उमा यादव ने की। इस सत्र में प्रभा पैंथ पुष्पा 'रजनी', डॉ सतीश भाल, डॉ.कुसुम चौधरी, ब्रजनंदन वर्मा, चक्रधर शुक्ल व डॉ. शारदे मिलन ने बाल कविताएं पढ़ीं। उपस्थित बच्चों ने बाल कविताओं पर अपनी टिप्पणी दी। इस सत्र के मुख्य वक्ता गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' तथा अध्यक्ष उमा यादव ने बाल कविता पर अपनी बात रखी।

'बच्चे और बाल कहानी' सत्र में अजमेर राजस्थान की डॉ.पोलल उपाध्याय ने बाल कहानी का वाचन किया। जिस पर उपस्थित बच्चों ने अपनी टिप्पणी दी। इसके बाद कमलेश चौधरी तथा करुणा पांडेय कथा सत्र की अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ बालसाहित्यकार शशी खन्ना 'सुमन' ने बाल कहानी पर अपने विचार रखे।

सायंकालीन सत्र में आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन की अध्यक्षता बाल कल्याण साहित्य संस्थान कुशीनगर के अध्यक्ष डॉ. महेंद्रप्रताप पांडेय 'नंद' ने की। इस सत्र में डॉ.शशितराज, डॉ. पुष्पलता जेमर्ट, शशि ओझा, सुनिता सिंह, डॉ. जगदीश पंत 'कुमुद', रामकुमार गुप्त, रेखा मिश्रा, दयाशंकर कुशवाहा, पुष्पा जोशी 'प्राकाम्य', शिवानंदन जोशी, डॉ.मनोज शर्मा, डॉ.सुशील सागर, विजयपाल सेंहलगिया, डॉ.सतीश गुप्ता, अजीतसिंह राठौर, राजकुमार सचान, रमा वर्मा, डॉ. रमेश आनंद आदि ने बाल कविताएं पढ़ीं।

10 जून को 'बालसाहित्य में नाटक' विषय पर आयोजित सत्र की अध्यक्षता डॉ. महावीर रवांल्टा ने की। इस सत्र को रंगकर्मी जहूर आलम, नरेंद्र परिहार, एस.पी.शर्मा, फतेहसिंह लोढ़ा तथा डॉ. उमा भट्ट ने संबोधित किया। समापन एवं सम्मान समारोह की अध्यक्षता 'पहाड़' पत्रिका के संपादक पद्मश्री शेखर पाठक ने की। इस सत्र को मुख्य अतिथि डॉ.राजकिशोर सिंह, डॉ.हरिसुमन बिष्ट, छायाकार पद्मश्री अनूप साह, डॉ.सुनीता मंडल तथा मुन्नी तिवारी ने संबोधित किया। अंत में दिवंगत बालसाहित्यकार डॉ. विनोद पांडेय 'विनोद', डॉ. चक्रधर नलिन, डॉ. शंकर सुल्तानपुरी, डॉ. मनोरमा चतुर्वेदी व अशोककुमार गुप्त के निधन पर शोक व्यक्त किया गया।

सम्मान समारोह में आगरा की डॉ. उमा यादव को डॉ.राष्ट्रबंधु बालसाहित्य सम्मान 2019 श्री बी. पी.सक्सेना के सौजन्य से दिया गया। कलावती साहित्य पुरस्कार इन्द्र अल्मोड़ा, शशी खन्ना 'सुमन' (भवाली), परमेश्वरी शर्मा (पिथौरागढ़), कैलाशसिंह बोनिया (अल्मोड़ा), श्रीमती गीता नेगी (अल्मोड़ा), प्रो. जगतसिंह बिष्ट (अल्मोड़ा), यामिनी जोशी (चंपावत), डॉ. मंजू मठपाल (देहरादून), डॉ. अशोक गुलशन (बहराइच), श्रीमती स्नेहलता (लखनऊ) के सौजन्य से घमंडीलाल अग्रवाल (गुरुग्राम), संगीता सेठी (बीकानेर), श्री सुशील सरित (आगरा), डॉ.अखिल भट्ट (भोपाल), डॉ.आनन्दसिंह (दिल्ली), डॉ.जगदीश पंत 'कुमुद' (अल्मोड़ा), डॉ. विष्णु शास्त्री 'सरल' (भंडारा) को बालसाहित्य सम्मान 2019 दिया गया।

सेवानिवृत्त उप जिला निदेशक दिनेशचंद्र जोशी द्वारा स्थापित पुष्पलता जोशी स्मृति बाल कहानी प्रतियोगिता का पुरस्कार संगीता माथुर (कोटा), अलका प्रमोद (लखनऊ), डॉ.सुधा शर्मा (दिल्ली) तथा रहीम अश्फाक (बिजनौर) को दिया गया। कहानियों का चयन डॉ. दीपा कांडपाल, डॉ.मंजू पांडेय 'उदिता' तथा विनोद जोशी ने किया।

किशोर न्याय बोर्ड के सदस्य शिक्षाविद् के.पी.एस.अधिकारी द्वारा स्थापित गंगा अधिकारी स्मृति बाल कहानी प्रतियोगिता 2019 के पुरस्कार गुडविन मसीह (बरेली), डॉ. विनोद हसूरीकर (भोपाल), शिवचरण सरोहा (दिल्ली), डॉ. शील कौशिक (सिरसा), रजनीश उज्ज्वल (लखनऊ), हरीश कुमार 'अमित' (गुरुग्राम), अखिलेश श्रीवास्तव 'चमन' (लखनऊ) को दिए गए। कहानियों का चयन डॉ. बानो सरताज (चंद्रपुर, महाराष्ट्र), राजीव सक्सेना (मुरादाबाद) तथा रतनसिंह किरमोलिया (बागेश्वर) ने किया गया।

डॉ. दीपा कांडपाल, मंजू पांडेय 'उदिता', प्रमोद तिवारी, विमला जोशी 'विभा', प्रकाश जोशी, जगदीश पंत 'कुमुद', उदय किरौला तथा कृपालसिंह शीला ने विभिन्न सत्रों का संचालन किया। नैनीताल के विधायक श्री संजीव आर्य के सौजन्य से उद्घाटन समारोह में सभी साहित्यकारों को प्रतीक चिह्न भेंट किए गए। संगोष्ठी में उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली तथा मध्य प्रदेश के 117 साहित्यकारों ने प्रतिभाग किया। अंत में आयोजक मंडल की ओर से डॉ. दीपा कांडपाल ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर अमरेन्द्रसिंह, कृष्णा बैराठी, पुष्पा पाल, माया मलयाल, मंजू पांडे, डॉ. गंगा बिष्ट, डॉ. नीलम जोशी, मोहन, पी. एल. वर्मा, सुनीता चौधरी, डॉ. अनीता ओझा, माया जोशी, राकेश रौतेला, प्रभजीत कुलकर्णी, कुलदीप सिंह आदि उपस्थित थे।

संगोष्ठी को संपन्न कराने में आयोजक मंडल के साथी राजीव लोचन साह, मुन्नी तिवारी, रेखा त्रिवेदी, डॉ. उमा भट्ट, गंगा जोशी, जहूर आलम, हिमांशु पांडेय 'मित्र', प्रमोद तिवारी, अनिल पुनेठा, सरोज पाल, नवीन बीनवाल, मनोज किरौला आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

बालप्रहरी समाचार

देहरादून। बालप्रहरी एवं भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा 1 से 5 मई 2019 तक कुल्हान गांव स्थित शिक्षा मंदिर गर्ल्स इंटर कालेज देहरादून में बच्चों की लेखन कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिला शिक्षा अधिकारी तथा सर्व शिक्षा अभियान के विशेषज्ञ आकाश सारस्वत, उत्तराखंड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डी.पी. उनियाल, टिहरी के जिला शिक्षा अधिकारी एस.पी. सेमवाल, दून साइंस फोरम के विजय भट्ट, भारत ज्ञान विज्ञान समिति के एस.एस. रजवार, डॉ. प्रसाद, राकेश कुमार, प्रधानाचार्या एवं साहित्यकार डॉ. कुसुम रानी नैथानी, बालप्रहरी संपादक उदय किरौला, कमलेश अग्रवाल, प्रदीप बहुगुणा, चंद्रशेखर तिवारी, ऋचिका रावत, हेमलता तिवारी, डॉ. कमलेश पसरीचा, आदि ने बच्चों को अलग-अलग गतिविधियां कराई। कार्यशाला के समापन समारोह में सभी प्रतिभागी 48 बच्चों ने अपने विचार रखे। समापन समारोह का संचालन विजय जोशी ने किया। कार्यशाला की समन्वयक डॉ. मंजु बलोदी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

रामगढ़ (नैनीताल)। बालप्रहरी, बालसाहित्य संस्थान तथा श्री अरविंदो आश्रम द्वारा राजकीय इंटर कालेज ग. रामगढ़ में 3 से 7 जून तक आयोजित बच्चों की लेखन कार्यशाला में रा.इ.का. तल्ला रामगढ़, जी.जी.आई.सी. तल्ला रामगढ़, न्यू राइज पब्लिक स्कूल, सरस्वती विद्या मंदिर रामगढ़ तथा जूनियर हाईस्कूल पिछाड़ाताल के 54 बच्चों ने प्रतिभाग किया। रा.इ.का. तल्ला रामगढ़ के प्रधानाचार्य श्री दुबे जी ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। कार्यशाला की संयोजक कमला मेनन, उदय किरौला, प्रणजीत कुलकर्णी, सुगंधा गुलाल, सुनील जोशी, नरेश जी, राकेश पांडेय, रवींद्र कुलकर्णी आदि ने बच्चों को गतिविधियां कराई। बच्चों ने अपनी-अपनी हस्तलिखित पुस्तकें तैयार की। समापन समारोह में आयोजित बाल कवि सम्मेलन में बच्चों ने स्वरचित कविताएं पढ़ी। संचालन बच्चों ने ही किया।

रामगढ़ (नैनीताल)। बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने राजकीय बालिका इंटर कालेज तल्ला रामगढ़ में 11 जून को आयोजित बाल मेले में बच्चों को सुनाई 'आदमी की कहानी'।

रामगढ़ (नैनीताल)। 12 जून को सरस्वती विद्या मंदिर ग. रामगढ़ में बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने सुनाई 'टोपी लाल की कहानी'।

अल्मोड़ा। बालप्रहरी, बालसाहित्य संस्थान तथा भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा 21 से 27 जून तक रा.बालिका इं.कालेज अल्मोड़ा में ... का आयोजन किया गया।

धौलादेवी (अल्मोड़ा)। 7 जुलाई। राजकीय इंटर कालेज अर्जुनी में बालप्रहरी संपादक उदय किरौला ने बच्चों को सुनाई 'आदमी की कहानी'।

जयपुर में हुई बालसाहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

जयपुर (राजस्थान)। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास दिल्ली के तत्वावधान में राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के सभागार में 3 एवं 4 जून, 2019 को बालसाहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति ओम थानवी, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के डॉ. बी.एल. सैनी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास दिल्ली के प्रधान संपादक मानस रंजन महापात्रा एवं संपादक द्विजेंद्र कुमार, देवपुत्र पत्रिका के संपादक विकास दवे, बच्चों का देश पत्रिका के संपादक संचय जैन, राजकुमार जैन 'राजन', गोविंद शर्मा, प्रमोद भट्ट, डॉ. उषा शर्मा, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के उप निदेशक राकेश कुमार तथा कार्टून बैंक के कार्टूनकार विनय पटनायक, डॉ. कुंजन आचार्य आदि विद्वानों ने बालसाहित्य के विभिन्न पक्षों को रखा। संगोष्ठी में बाल फिल्में भी प्रदर्शित की गई।

बालसाहित्य पुरस्कार गोविंद शर्मा को मिलेगा

दिल्ली। केंद्रीय साहित्य अकादमी दिल्ली का बालसाहित्य सम्मान 2019 इस वर्ष प्रसिद्ध बालसाहित्यकार एवं बालप्रहरी के सम्मानित रचनाकार गोविंद शर्मा को उनकी पुस्तक 'बापू की टोपी' पर दिया जा रहा है। पुरस्कार के तहत 50 हजार रुपए, ताम्र पत्र का फलक प्रदान किया जाएगा। गोविंद शर्मा की अभी तक 35 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इससे पूर्व बालसाहित्य में उन्हें राजस्थान साहित्य अकादमी का शंभुदयाल सक्सेना बालसाहित्य सम्मान तथा प्रकाशन विभाग भारत सरकार का भारतेंदु साहित्य सम्मान सहित राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार मिल चुके हैं।

बालसाहित्य संगोष्ठी संपन्न

नैनीताल। आर्य समाज नैनीताल में बालप्रहरी तथा बालसाहित्य संस्थान अल्मोड़ा द्वारा 'मोबाइल, बच्चे और बालसाहित्य' विषय पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता डॉ. उमा भट्ट ने की। सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य रेखा त्रिवेदी, डॉ. गिरीश साह, डॉ. आशा सिंह, मुन्नी तिवारी, डॉ. आर.सी. सिंह, तारा चौहान, राजा पांडे, मथुरा नयाल, सुरेंद्र मोहन रौतेला, आनंद जोशी, डॉ. पी. शर्मा, उमेश चंद्र जोशी, विनीता जोशी, उदय किरौला, तारा जोशी, आदि ने संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी के दूसरे सत्र में 8,9 तथा 10 जून को नैनीताल में आयोजित होने वाली राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी की तैयारी पर भी बातचीत की गई। संचालन बालप्रहरी संरक्षक मंडल की सदस्य वरिष्ठ साहित्यकार, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य डॉ. दीपा कांडपाल ने किया।

राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी का आयोजन

भीलवाड़ा (राजस्थान)। बालवाटिका द्वारा प्रतिवर्ष की तरह इस बार भी 2, 3 तथा 4 अक्टूबर, 2019 को विनायक विद्यापीठ भूणास, भीलवाड़ा, राजस्थान में 'मूल्यपरक शिक्षा और बालसाहित्य' विषय पर राष्ट्रीय बालसाहित्य संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी में बालसाहित्य के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा के साथ ही कई पुस्तकों का लोकार्पण, पुस्तक प्रदर्शनी तथा काव्य गोष्ठी आदि गतिविधियां आयोजित की जाएगी। प्रतिभाग करने के इच्छुक साहित्यकार डॉ. भैरूंलाल गर्ग से टेलीफोन नं. 94132 1903 पर संपर्क कर सकते हैं।

राष्ट्रीय बालसाहित्यकार सम्मेलन सलूंबर में

सलूंबर (राजस्थान)। सलिला संस्था सलूंबर की संस्थापक अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार 22 तथा 23 सितंबर को सलूंबर में दसवां राष्ट्रीय बालसाहित्यकार सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर संगीता सेठी का कॅमिक 'सलिल प्रवाह' तथा 'रंग तुम्हारे लिए' आदि पुस्तकों का लोकार्पण होगा। चित्रकार चांद मोहम्मद घोसी की चित्रों की प्रदर्शनी लगाई जाएगी। साहित्यकारों तथा पत्रिकाओं के प्रकाशकों को सम्मानित किया जाएगा।

लोकार्पण

कोटा (राजस्थान)। भारत विकास शिक्षण-प्रशिक्षण संस्था के सभागार में 17 अप्रैल को वरिष्ठ साहित्यकार विजेंद्र निर्मोही की राजस्थानी भाषा की बाल पुस्तक 'अँगाली औंबी की पगडाग' का लोकार्पण हुआ। डॉ. प्रभात कुमार ने विजेंद्र निर्मोही के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर मुख्य अतिथि गोविंद शर्मा, भगवती प्रसाद गौतम, श्याम शर्मा, अनीता शर्मा, जयसिंह आशावत सहित कई साहित्यकार एवं जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

गरुड़ (बागेश्वर)। सुमित्रानंदन पंत राजकीय महाविद्यालय गरुड़ में प्रसिद्ध साहित्यकार एवं शिक्षक डॉ. हेमचंद्र दुबे की पुस्तक 'कुमाऊंनी संस्कृति: विविध आयाम' का लोकार्पण प्राचार्य डॉ. पी.सी. पांडेय द्वारा किया गया।

एथेंस (ग्रीस)। 7 जून, 2019 को यहां हुए 17वें अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में जयपुर के प्रसिद्ध साहित्यकार यशोदकुमार गोहिल को गुजराती लाइफ अचीवमेंट सम्मान से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर ज्योतिकुमार गोहिल की दो पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया।

अंक पहेली

नीचे दी गई पहेली में रिक्त स्थान पर कितनी संख्या आयेगी।

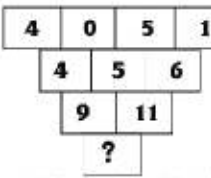

4	0	5	1
4	5	6	
9	11		
?			

ज्ञान विज्ञान बुलेटिन

भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा जन सहयोग से प्रकाशित ज्ञान विज्ञान बुलेटिन मासिक पत्रिका के लिए विज्ञान, जन विज्ञान, महिला मुद्दों एवं सम-सामयिक विषयों पर आलेख, रचनाएं/सुझाव सादर आमंत्रित हैं। मेल से भेजने पर केवल Kurtidev 10 font में रचनाएं भिजवाएं।

बुलेटिन नियमित मंगवाने के लिए तीन वर्ष का सदस्यता शुल्क 160/- मनीआर्डर, चैक या बैंक ड्राफ्ट से संपादक, ज्ञान विज्ञान बुलेटिन, भारत ज्ञान विज्ञान समिति मुहल्ला खोल्टा, अल्मोड़ा उत्तराखंड 263601 के पते भिजवाएं। बालप्रहरी एवं ज्ञान विज्ञान बुलेटिन का शुल्क एक साथ भी भेजा जा सकता है। -संपादक

बाल रचनाकारों की राष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका

अभिनव बालमन

एक प्रति - 30 रुपए,
तीन वर्ष की सदस्यता - 400 रुपए
आजीवन सदस्यता - 1200 रुपए
संपादक : निश्चल
संपर्क सूत्र:
'आरदाघतम', 17/238 जेड 13/59 पंचवटी, सासनीगेट, अलीगढ़, उ.प्र. - 202001
मो. 9084023221 7, 9719007153

वर्ग पहेली 18 का उत्तर

1 शु	2 च	र		3 ग	4 ज	स्था	5 च
6 ग	ज		7 च	इ	ल		री
8 च	र्ष	9 च		10 ग	ज	11 ग	
	12 ग	ग	न			13 ग	14 का
15 अ	च	री		16 बक	17 म	पु	र
18 च	रा		19 च	न	का	र	
र		20 ब्रु	च	क	र		21 ग
22 च	न		जी		25 ग	ठ	क

पुस्तक प्राप्ति

पुस्तक : उमा पाठक का रचना संसार
रचनाकार : डॉ. प्रज्ञा सिंह
संपर्क : 73 नार्थ ईदगाह, आगरा (उ.प्र.)
पुस्तक : आदर्श
रचनाकार : डॉ. नवीन जोशी
संपर्क : बोसी साहित्य सदन, हैमरर अल्मोड़ा, उत्तराखंड
पुस्तक : उसका मेरा मौतनामा
रचनाकार : प्रदीप कुमार गोविल
संपर्क : 53/7 प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर, राजस्थान-302033
पुस्तक : अनूठा उपहार
रचनाकार : डॉ. रमेश आनंद
संपर्क : 2/325 वसंतकुंज, नामनेर, आगरा, उ.प्र.-282001
पुस्तक : सिंधु में बिंदु
रचनाकार : डॉ. चंद्रभान 'चंद्र'
संपर्क : 304 कल्याणी देवी, साहुरिया बाग, उन्नाव, उ.प्र.
पुस्तक : चिंतामन मिस्त्री
रचनाकार : नारायण निकरे
संपर्क : नर्मदगांव, सामसीपेठ, आर्वी, वर्धा, महाराष्ट्र
पुस्तक : आजादी की वो पहली भोर
रचनाकार : माधवीगता 'मधुकर'
संपर्क : 8 हिमालयन कॉलोनी, हरिपुर कलां, मोतीचुर, रायवाला, देहरादून
पुस्तक : कफन में जेब है
रचनाकार : अनिलकुमार सिंह
संपर्क : पोस्ट बक्स-5645, सी-1, जनकपुरी, नई दिल्ली 110058
पुस्तक : इंद्रधनुष के पीछे के रंग
संपर्क : रूपम मल्होत्रा
संपर्क : 3 डी-26 गुलेरवसनगर, सेक्टर 7, हिरणमगरी, उदयपुर, राजस्थान
पुस्तक : पिंजरा
रचनाकार : डॉ. उमा कौशिक
संपर्क : मकान नं. 3762/5 गंगानगर, आनंद विहार, ऋषिकेश, देहरादून
पुस्तक : चुंधरी
रचनाकार : डॉ. कविता भट्ट
संपर्क : प्रशासनिक भवन, हे.न.ब.गढ़वाल केंद्रीय वि.वि. श्रीनगर, पौड़ी
पुस्तक : बीजू का सपना
रचनाकार : डॉ. उमा शर्मा
संपर्क : बी 4/12 मंदिरा अपार्टमेंट, 137, पाठक पाड़ा रोड, कोलकाता
पुस्तक : गुलमोहर
रचनाकार : श्रीमती शशि ओझा
संपर्क : 4 एफ-21, आर सी व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा, राज. 311001
पुस्तक : महान नारी कस्तूरबा गांधी
रचनाकार : स्नेहलता
संपर्क : 1/300 विकासनगर, लखनऊ, उ.प्र.-226022
पुस्तक : मेरी स्कूल डायरी
रचनाकार : रेखा नमोली
प्रकाशक : 5 ओम प्रेम्स युनिवर्सिटी ऑफ्स्ट्रियल सिटी, बंगलोर-560100
पुस्तक : हिमालय आपदाएं
रचनाकार : दिनेश भट्ट
संपर्क : न्यू लैंड, निकट गीता, भीमताल रोड, पिथौरागढ़ - 262501
पुस्तक : माटी पीड़ा
रचनाकार : के. एल. दिवान
संपर्क : 7-57 अजिंक्य विहार, विष्णु गार्डन, कनखल, हरिद्वार
पुस्तक : आंखों में आंसू
रचनाकार : ज्ञानेश 'कुमार'
प्रकाशक : रा.इ.का नागणी, चंबा, टिहरी - 249175